स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

का मासिक मुखपत्र

दिसम्बर 2025, पृष्ठ : 50, मूल्य 6:00 रूपये

23वें तीर्थंकर, प्रगट प्रभावी, करूणा स्वयंभू

चिन्तामणि भगवान पार्श्वनाथ

पावन जन्म कल्याणक - पौष वदी दशमी

राष्ट्रसंत श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, आचार्य सम्राट् श्री आनन्दऋषि जी म.

दीक्षा जयन्ती

मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी, वि. सं. 1970

वन्दन नमन सहित चतुर्विध संघ को

हार्दिक - हार्दिक बधाई

।। श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ ।।

श्रमण संघीय आचार्य परम पूज्य डॉ शिवमुनि जी म. सा. आदि ठाणा के
दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करते हुए
अल्पसंख्यक योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांति कुमार जी लोढ़ा जैन।

अहिल्या नगर महाराष्ट्र में युवाचार्य भगवन पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. आदि ठाणा
विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर शिविर में भाग लिया।

जैन भवन के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित महिला शाखा की बैठक में
अपना मार्गदर्शन प्रदान करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन एवं
बैठक में मौजूद महिला शाखा की पदाधिकारी।

इसी अवसर पर दिल्ली प्रांतीय महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती अनीता जी जैन
शालीमार बाग से निगम पार्षद चयनित होने पर
उनका सम्मान करते हुए महिला पदाधिकारी।

इसी अवसर पर उनको बधाई प्रदान करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन
एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन आदि।

कर्नाटक प्रांतीय युवा शखा द्वारा प्रथम प्रांतीय युवा शाखा कार्यकारिणी की सभा के अवसर पर
उपस्थित समस्त कर्नाटक प्रांतीय शाखा, राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं प्रांतीय युवा शाखा के
पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अशोक (बाबूसेठ) बोरा जैन
श्रीरामपुर स्थित दादा वामन जोशी नवीन मराठीशाला एवं बालवाड़ी के
स्नेह सम्मेलन के अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जी जैन पानीपत
अपने साथी पदाधिकारियों के साथ जीतो नार्थ जोन की सभा में शामिल हुए।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 69 अंक - 12 दिसम्बर - 2025 मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन
बड़ौत / दिल्ली

केन्द्रीय कार्यालय
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट,
नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org
youtube.com/@aissjc
facebook.com/aissjc1906
x.com/aissjc1906
instagram.com/aissjc1906

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE
aissjc137342@cnrb

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

अनुक्रमणिका

अध्यक्षीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	09-10
सम्पादकीय	- प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	11
दृढ़धर्मी किसे कहा जाए ?	- आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा.	12
आधि-व्याधि-उपाधि के...	- आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	13
न्यायोपार्जित अन्न अमृत तुल्य	- युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	15
ज्ञान की ज्योति थे...	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा.	16
संघ निर्माता पूज्य गुरुदेव...	- प्रवर्तक पू. श्री सुकनमुनि जी म.सा.	17-18
सम्यक्त्व निर्मल रखना	- पू. श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा.	19-20
आनन्ददाता प्रवर्तक...	- साहित्य दिवाकर पू. डॉ. सुरेन्द्रमुनि जी म.सा.	21
णमोकार मंत्र/नवकार मंत्र...	- महासती पू. श्री पुष्पावती जी म.सा.	22-23
मैं को हटाओ...	- साध्वी-युगल निधि-कृपाश्री जी म.सा.	24-25
नववर्ष	- श्री विजय जैन, पानीपत	26-27
नववर्ष - नई पहल	- श्री विनय जैन, पानीपत	28-30
नववर्ष और युवा चेतना	- श्री विपुल जैन, दिल्ली	31-32
अपने बड़े बुर्जुगों का...	- श्री संजीव जैन, करनाल	33
जीवन का परिष्कार करें	- डॉ. एन. के. खींचा	34
हमारे महान आदर्श...	- श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	35-36
समाचार प्रकाश		37-48

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश'
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817	09.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
02.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838	10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
03.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015	11.	श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
04.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440	12.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	13.	श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
06.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	14.	श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
07.	डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448	15.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
08.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795	16.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली - मो. : 98110 75336

राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली
मो. 98373 94448	मो. 83968 00000	मो. : 98116 14567

राष्ट्रीय चेयरमैन	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री विजय जैन, पानीपत : 98966 00022	श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई : 76665 40600	श्री जसवंत जैन, दिल्ली : 98104 35108

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष: श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद	94207 64456

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़बाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

श्री विपुल जैन, दिल्ली - अध्यक्ष	87662 14456
श्री अंकुर जैन, दिल्ली - चेयरमैन	98711 98111
श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद - कार्याध्यक्ष	93767 37111
श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत - वरिष्ठ उपाध्यक्ष	93745 44138
श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद - महामंत्री	91522 11555
श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्ष	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली - अध्यक्षा	98687 04326
श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत - चेयरमैन	94278 08401
श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली - वाईस चेयरमैन	98187 44166
श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत - वरिष्ठ उपाध्यक्षा	92515 74016
श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना - महामंत्री	79737 96548
श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्षा	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री बी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाबिया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, औरंगाबाद	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607

संविधान संशोधन समिति

श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
डॉ. अशोक पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री एस. के. जैन, दिल्ली	98102 78217
श्री सुनील चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अनुशासन समिति

राष्ट्रीय संयोजक : श्री एस. के. जैन 'सी. ए.', दिल्ली	98102 78217
सदस्य : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
सदस्य : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
सदस्य : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
सदस्य : श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
सदस्य : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
सदस्य : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति

एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति

सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन प्रकाश के पाठकों से अनुरोध

आप जैन प्रकाश के सम्माननीय पाठक हैं। इसमें आपकी भी सहभागिता है। अतः समय पर रचनात्मक सुझाव तथा प्रकाशित रचनाओं पर मन्तव्य की अपेक्षा हम आपसे करते हैं।

समाचार प्रेषकों से - जैन कॉन्फ्रेंस व स्थानीय श्रीसंघ से सम्बन्धित प्रकाशन योग्य समाचार कृपया अविलम्ब भेजें। समाचार स्पष्ट व अक्षरों में सारपूर्ण ही लिखें। या टाईप करके भेजें। अन्यत्र प्रकाशित उन समाचारों की कतरन या फोटो कॉपी भी भिजवाई जा सकती है, जो आपको **'जैन प्रकाश'** में छापने योग्य लगे, पर इसमें विलम्ब न करें।

रचनाकारों से - रचना साफ अक्षरों में कागज के एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर लिखें। कृपया सारगर्भित व स्पष्टभाव वाली रचनाएँ प्रेषित करने का प्रयास रखें। अन्यत्र प्रकाशित उन सारगर्भित रचनाओं की कतरन या फोटो कॉपी भी भिजवाँ सकते हैं, जो आपको **'जैन प्रकाश'** के अनुकूल लगे। उनके स्रोत व प्रकाशन तिथि अवश्य दें।

प्रकाशकों / लेखकों से - 'साहित्य परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत हम प्रकाशनों का परिचय देने का क्रम प्रारम्भ कर रहे हैं। इसके लिए आप अपने प्रकाशनों की प्रतियाँ भिजवा सकते हैं। कृपया साथ ही यह अनुमति प्रदान करें कि उनमें से यदि हम किसी अंश का अवलोकन या उसका अंश प्रकाशित करना चाहें तो आपको आपत्ति न होगी।

Whatspapp On : 9019731906, E-mail : aissjc1906@gmail-com

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन : राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय वरिष्ठ मार्गदर्शक समिति - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

:: वरिष्ठ मार्गदर्शक ::

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तद प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 78626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाबिया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

अध्यक्षीय

जैन कॉन्फ्रेंस को एक सर्वमान्य स्वरूप मिलें

E-mail : ajvk1973@gmail.com

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रिय पाठकों, सादर जय जिनेन्द्र !

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की वर्तमान कार्यकारिणी का कार्यकाल लगभग एक वर्ष पूर्ण होने जा रहा है। यह कालखंड केवल समय की गणना का नहीं, बल्कि अपेक्षाओं, दायित्वों और संभावनाओं का भी दर्पण है। आज देशभर की दृष्टि कॉन्फ्रेंस की गतिविधियों पर है। समाज की अनेक आशाएँ, अपेक्षाएँ और विश्वास संस्था से जुड़े हैं। यह अत्यंत संतोष और गर्व का विषय है कि यह कार्यकाल समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप अत्यधिक उत्साहपूर्ण वातावरण में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

देश के कोने-कोने से बड़ी संख्या में कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य अपने-अपने दायित्वों के प्रति सजग रहकर सेवाएं दे रहे हैं। संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों को समाज के विभिन्न वर्गों से समर्थन, सहयोग और सहभागिता प्राप्त हो रही है। यह इस बात का प्रमाण है कि संगठन के प्रति समाज के मन में भरोसा और अपनापन बढ़ा है।

इस कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि संगठन के प्रति हर व्यक्ति के मन में सहयोग-भाव के साथ-साथ संकल्प की दृढ़ भावना भी है। सबकी यह साझा आकांक्षा है कि कॉन्फ्रेंस को ऐसी ऊँचाई तक ले जाया जाए, जहाँ से वह देश के सामाजिक, धार्मिक और मानवीय परिवेश पर दृष्टि रख सके और जहाँ भी, जैसे भी, जिसको भी आवश्यकता हो, कॉन्फ्रेंस वहाँ उपस्थित हो सके।

मेरी यह स्पष्ट भावना है कि कॉन्फ्रेंस की जन-भागीदारी और अधिक बढ़े। इसके पदाधिकारी और कार्यकर्ता जन-जन तक पहुँचें, समाज के कल्याण हेतु योजनाओं के प्रारूप बनाएँ और उन्हें त्वरित रूप से क्रियान्वित करें। समय सीमित है और कार्य व्यापक हैं, इसलिए हमारी कार्य-गति को और अधिक तेज करना आवश्यक है। हमारा उठना-बैठना, चलना-फिरना, यहाँ तक कि चिंतन भी कॉन्फ्रेंस और समाज के प्रति समर्पित हो। किसी ने ठीक ही कहा है कि हमें दो वर्षों में दस वर्षों का कार्य करना है। यह एक शुभ संकेत है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हैं, क्योंकि मेरे साथ सहयोगियों की एक सशक्त, सजग और संकल्पित टीम खड़ी है।

कॉन्फ्रेंस श्रमण संघ की मातृसंस्था है। अतः श्रमण-श्रमणियों के वैय्यावच्च, सेवा और संरक्षण के प्रति हमारी सजगता और भी बढ़नी चाहिए। अनेक वर्षों की दीक्षा-पर्याय के उपरांत यदि संत-साध्वियों को रोग अथवा शारीरिक असुविधा का सामना करना पड़े, तो उनकी सेवा, पृच्छा और सहयोग करना हमारा नैतिक एवं धार्मिक दायित्व है। इस दिशा में कॉन्फ्रेंस के अधिकारी, प्रांतीय युवा एवं महिला शाखाएँ और कार्यकर्ता सुनियोजित ढंग से अधिकाधिक कार्य करें। केन्द्रीय कार्यालय भी इस प्रयास में पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा।

साथ ही, साधु-साध्वियों की विहारचर्या के दौरान उनकी सुरक्षा और सहयोग भी हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। विहार केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि तप, साधना और त्याग की जीवन्त प्रक्रिया है। समाज के विशेषकर युवा वर्ग से यह अपेक्षा है कि वे विहार सेवा को धर्म का एक महान अवसर मानकर इसमें सक्रिय सहभागिता निभाएँ।

साधु-साध्वियों के संदर्भ में हमारी यह भी भावना है कि वे आगम, शास्त्र और व्यवहारिक ज्ञान से और अधिक समृद्ध हों, ताकि जैन धर्म के वैज्ञानिक, तर्कसंगत और

मानवीय सिद्धांतों को जन-जन तक प्रभावी रूप से पहुँचा सकें। इस हेतु **'ज्ञान प्रकाश योजना'** को और अधिक सशक्त बनाना आवश्यक है। साधुजनों को स्थान-स्थान पर समृद्ध ग्रंथ उपलब्ध हों, विद्वानों के साथ उनकी संगोष्ठियाँ एवं संवाद हों, जिससे अर्जित ज्ञान निरंतर पुष्ट होता रहे।

इस माह में आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी म. की दीक्षा जयंती तथा भगवान पार्श्वनाथ के जन्म कल्याणक जैसे पावन प्रसंग हमें आत्ममंथन और संगठन सुदृढ़ीकरण की प्रेरणा देते हैं। ये पर्व हमें संयम, करुणा, अहिंसा और संगठन की शक्ति का स्मरण कराते हैं।

प्रसंगवश यह भी कहना चाहूँगा कि यदि देश के किसी भी क्षेत्र में श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज को किसी प्रकार की दुविधा, जटिलता या चुनौती का सामना करना पड़ता है, तो कॉन्फ्रेंस एक सहयोगी, मार्गदर्शक और समाधानकारी संस्था के रूप में सदैव तत्पर रहेगी।

मेरा संकल्प है कि जैन कॉन्फ्रेंस को एक सर्वमान्य, सर्वस्वीकार्य और सर्वसेवी संस्था के रूप में स्थापित किया जाए, जो संगठन, सेवा और संस्कार, तीनों का संतुलित उदाहरण बने। आप सभी पाठको को नववर्ष 2026 की हार्दिक शुभ मंगलकामनाएं। ❖❖

माया भय का स्रोत : क्यों और कैसे ?

मायामय जीवन का अर्थ है-छिपा हुआ जीवन, गूढ़ जीवन। जिस जीवन में अन्दर कुछ और हो, बाहर कुछ और दिखाया जा रहा हो, ऐसा जीवन लोगों के लिए भयावह इसलिए होता है कि लोग छिपी हुई चीज को पहचान नहीं पाते और एकदम मायावी जीवन से प्रभावित हो जाते हैं, धोखा खा जाते हैं। जो जीवन छिपा हुआ होगा, उसका हर एक व्यक्ति को पता नहीं लगेगा कि इसके अन्दर क्या है ? बाहर की वेशभूषा की सजावट चेहरे की चमक दमक एवं लच्छेदार भाषण-सम्भाषण छटा से साधारण व्यक्ति तो झटपट आकर्षित और प्रभावित हो जाता है। वह उसे ही सिद्ध पुरुष, पहुँचा हुआ पुरुष, भगवान और न जाने क्या-क्या मानने लगता है। उसके बाद वह किसी दिन उसके झाँसे में ऐसा आ जाता है कि उसे छठी का दूध याद आ जाता है।

आपके सामने कोई किसी चीज को इस ढंग से सजा कर रखे कि आपको उसमें और असली चीज में कोई अन्तर न मालूम दे तो झटपट विश्वास हो जाएगा, आप शायद वहुत जल्दी ही उसके चक्कर में आ जायेंगे। पीतल पर मुलम्मा चढ़ा हो, तो उसकी चमक दमक असली सोने से भी बढ़ कर हो जाती है, सहसा कोई भी आदमी चक्कर में आ जाता है।

बड़े शहरों में ठग लोग इसी प्रकार भोले भाले लोगों को फंसाते हैं। एक बार एक भाई बम्बई के एक मोहल्ले की छोटी-सी गली में से होकर जा रहा था। अचानक पीछे से एक आदमी आया और कुछ ही फासले पर एक सोने की डली पड़ी थी, उसे उस भाई के देखते-देखते उठा कर भागने लगा। उसके पीछे एक दूसरा व्यक्ति आया, जिसने इस भाई के कान में धीरे से कहा सेठ यह आदमी सोने की डली ले जा रहा है, आप इससे खरीद लें और बाजार में बेचकर बहुत मुनाफा कमायेंगे। आपके पाप्त कितने रुपये हैं? निकालिये झटपट। पीछे यह हाथ में नहीं आयेगा। सेठ ने अपनी जेब में चालीस रुपये थे, वे निकाले। उस धूर्त ने कहा, इतने से काम नहीं होगा।

सोना कम से कम 200 रुपये का है। हम इसे आधे दामों में लेगें और क्या है आपके पास ? उस भाई ने कहा- 'मेरे पास और तो कुछ नहीं, एक घड़ी है। उस धूर्त ने कहा हाँ, हाँ, बस, अब काम बन जाएगा। मुझे क्या करना है। मैं आपको ही यह सोने की डली उससे दिलवा दूँगा। बस, उस धूर्त ने दौड़कर सोने की डली वाले धूर्त को पकड़ा। उसे गिरफ्तार कराने आदि की झूठमूट की धमकी दी और वे 40 रुपये तथा लगभग 60 रुपये की हाथ घड़ी देकर उससे सोने की डली ली और उस भाई को दे दी।

वह भाई बहुत खुश होता हुआ जा रहा था। परन्तु मन में शंका थी कि कहीं यह चोरी का माल हुआ तो पुलिस को पता लग गया तो मुझे गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इसी चिन्ता में बह मुख्य सड़क पर आ गया। और एक टैक्सी में बैठकर अपने एक सम्बन्धी के पास आया और अपने सम्बन्धी को वह सोने की डली दिखाई तो उसे शंका हुई कि यह सोने का मुलम्मा चढ़ाया हुआ है। वह उस डली को लेकर पास में ही रहने वाले एक सुनार के पास गया। सुनार ने उसे चेक किया और बताया कि पीतल पर सोने का मुलम्मा चढ़ा हुआ है। यह सुनते ही उस भाई का हृदय बैठ गया। अच्छा, धोखा खाया, आज तो। सोने के बदले वह पीतल दे गया। ❖❖

सम्पादकीय

नववर्ष : नवसंकल्प, संगठन और श्रमण सेवा का पथ

- प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री

E-mail : amitraijain78@gmail.com

प्रिय पाठक बंधुओं एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

समय निरन्तर गतिमान है। कुछ ही दिनों में हम अंग्रेजी नववर्ष 2026 में प्रवेश करने जा रहे हैं। यह नववर्ष केवल तिथियों का परिवर्तन नहीं, बल्कि आत्मावलोकन, नवचिन्तन और नवसंकल्प का पावन अवसर है। मेरी हार्दिक कामना है कि आने वाला वर्ष सम्पूर्ण जैन समाज, मानव समाज के लिए मंगलकारी, कल्याणकारी, संगठन को सुदृढ़ करने वाला तथा आध्यात्मिक उन्नति का वाहक सिद्ध हो।

जैन धर्म की पहचान श्रमण-संस्कृति, त्याग, तप और करुणा से होती है। साधु-साध्वियों की आहार, विहार, सेवा एवं सुश्रुषा हमारी परम्परा का प्राणतत्व है। इस दिशा में यह अत्यन्त आवश्यक है कि जैन कॉन्फ्रेंस की समस्त प्रान्तीय शाखाएँ, युवा एवं महिला शाखाएँ सक्रिय सहभागिता निभाएँ। सेवा केवल एक औपचारिक दायित्व नहीं, बल्कि श्रद्धा, समर्पण और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। गुरु भगवंतों का सान्निध्य समाज को दिशा देता है और उनकी सेवा समाज को संस्कारित बनाती है।

विहारकाल के दौरान संत-साध्वियों की सुरक्षा, सुविधा और सहयोग आज के समय की महती आवश्यकता है। युवा शक्ति की ऊर्जा, महिला शक्ति की संवेदनशीलता और वरिष्ठजनों का अनुभव, इन तीनों के समन्वय से ही यह सेवा कार्य प्रभावी रूप में संपन्न हो सकता है। यही हमारी सामूहिक जिम्मेदारी भी है और सौभाग्य भी।

यह बताते हुए विशेष प्रसन्नता हो रही है कि **"जैन प्रकाश"** अब शीघ्र ही एक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित होकर आपके करकमलों में आने वाला है। यह समाचार पत्र नियमित साप्ताहिक प्रकाशन के रूप में समाज की गतिविधियों, विचारों, आयोजनों और उपलब्धियों का सशक्त दर्पण बनेगा। **"जैन प्रकाश"** केवल समाचार पत्र नहीं, बल्कि संगठन की चेतना, संवाद और समन्वय का माध्यम होगा। इस माध्यम से हम समाज के प्रत्येक कोने में हो रहे रचनात्मक कार्यों को एक-दूसरे तक पहुँचाने में सक्षम होंगे। अतः हम सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, शाखाओं एवं पाठकों से विनम्र आग्रह करते हैं कि अपने-अपने क्षेत्रों एवं प्रान्तों में जैन कॉन्फ्रेंस तथा धार्मिक गतिविधियों से संबंधित समाचार, कार्यक्रमों की जानकारी और समाजोपयोगी लेख प्रकाशन हेतु अवश्य प्रेषित करें। आपकी सहभागिता ही **'जैन प्रकाश'** को जीवंत और प्रभावी बनाएगी।

नववर्ष 2026 के अवसर पर श्रमण संघीय तिथि दर्पण कैलेंडर का प्रकाशन भी किया जा रहा है। यह कैलेंडर मात्र तिथियों का संकलन नहीं, बल्कि हमारी धार्मिक परंपराओं, व्रत, उपवास, पर्व-उत्सव और श्रमण संस्कृति का मार्गदर्शक है। यह वर्षभर हमें धर्म, संयम और संस्कार के पथ पर अग्रसर रहने की प्रेरणा देता रहेगा।

संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन जी के कुशल, दूरदर्शी और प्रेरक नेतृत्व में जैन कॉन्फ्रेंस अपने भावी कार्यक्रमों को लेकर पूर्णतः आशान्वित है। संगठन को और अधिक सशक्त, सर्वमान्य तथा समाजोपयोगी बनाने की दिशा में अनेक योजनाएँ आकार ले रही हैं। इन योजनाओं की सफलता समाज के प्रत्येक सदस्य की सक्रिय सहभागिता पर निर्भर करती हैं।

आइए, नववर्ष 2026 में हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम संगठन से जुड़ेंगे, संगठन को मजबूत करेंगे और सेवा, समर्पण तथा संस्कार के माध्यम से जैन समाज को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपनी भूमिका निभाएँगे। नववर्ष 2026 हम सभी के जीवन में शांति, सद्भाव, संगठन और साधना का संदेश लेकर आए, इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ।

दृढ़धर्मी किसे कहा जाए ?

- द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा.

इस संसार में अनेक प्रकार की रुचि, प्रकृति और आस्था वाले मानव हैं, वे सभी एक या दूसरे प्रकार से धर्म (अहिंसा, सत्य, ईमानदारी आदि) का आचरण करते हैं, परन्तु हमें सोचना है कि इनमें से दृढधर्मी कौन है ? किसके जीवन में धर्म की नींव सुदृढ़ है ?

एक व्यक्ति है, वह इसलिए धर्म पर चलता है कि उसके सामने इस लोक और परलोक का भय है। उससे कोई कहता है कि अपने व्यवसाय में तस्करी, चोर बाजारी, बेईमानी, मिलावट, नापतौल में गड़बड़ी अथवा चोरी, जारी, लूटपाट आदि करके क्यों नहीं मालामाल हो जाते ? क्या रखा है इस धर्म-कर्म में ? इससे तो तुम्हारा परिवार भूखों मरेगा। वह उत्तर देता है

"भाई ! वैसे तो धर्म-कर्म कुछ नहीं है, ये चोरी आदि जो कुछ भी शीघ्र धनवान बनने के उपाय हैं, उन्हें आजमाने का मन होता है। पर क्या करूँ ? मन में डर है कि अगर कहीं पकड़ा गया, तो बर्बाद हो जाऊँगा, इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। जेल में सड़ना होगा, भारी सजा भोगनी पड़ेगी, इसलिए सरकार और समाज का भय जो है। वही मुझे ऐसे भयंकर साहसिक कर्म करने से रोकते और धर्म पर चलने को बाध्य करते हैं।" मतलब यह है, ऐसे व्यक्ति का जीवन यहां सरकार और समाज के और परलोक में नरक के दण्ड के भय से धर्म पर चलता है। सहज धर्ममय जीवन नहीं है।

दूसरा व्यक्ति मिलता है, उससे भी वह यही सवाल पूछता है कि "भाई ! इतने दुःखी क्यों हो रहे हो ? इस दुर्दशा से छुटकारा पाने के लिए चोरी एवं अनीति के कर्म क्यों नहीं कर लेते ? चोरी, तस्करी, बदमाशी, डाकेजनी, गिरहकटी आदि क्यों नहीं कर लेते ? वह कहता है- भाई! मन में आता है कि ये सब काम करके अच्छी पूंजी इकट्ठी कर लूं, जिससे बुढ़ापे में सुख से जिंदगी कट सके। परन्तु आज समाज में मेरी जो इज्जत है, मुझे लोग ईमानदार कहते हैं, ईमानदार मुझ पर विश्वास रखते हैं। ग्राहक मेरी सत्यता पर विश्वास रखकर सीधे मेरी दुकान पर चले आते हैं, कम मुनाफा लेकर माल सस्ता और अच्छा देने के कारण धन चाहे कम मिलता हो, पर मेरी साख जमी हुई है। दूसरे ईमानदारी आदि धर्म से जो सुख-शान्ति यहाँ मिलती है, वह बेईमानी से कैसे मिल सकती है? फिर बेईमानी आदि पाप से रात-दिन चिन्ता बढ़ जाती है, पर-लोक में भी स्वर्ग और उसके सुखादि नहीं मिल सकते। इस लोभ से हैं अनीति-अधर्म के मार्ग पर नहीं चलता, धर्म मार्ग पर ही चलता हूँ। यह जीवन भी धर्म दृढ़ता का प्रतीक नहीं है।

तीसरे व्यक्ति से जब बेईमानी आदि करके मालामाल होने को या अधिक पूँजी संचित करने को कहा जाता है तो वह तपाक से कहा-बेईमानी, चोरी आदि पापकर्म करने की बात मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकता। यह मेरे संस्कारों में भी नहीं है कि मैं किसी भी तरह से एकान्त में, वन में सोते-जागते, अकेले में भी इस तरह के पाप कर्म करूँ। ईमानदारी सत्य आदि धर्म पर सुदृढ़ रहना मेरे संस्कारों के ताने-बाने में गुंथ गया है। मेरे प्राण भले ही चले जाएँ मुझ पर भयंकर से भयंकर कष्ट और संकट भले ही आ जाएँ, मैं अपने धर्म से एक इंच भी विचलित नहीं हो सकता। बन्धुओं, इन में से पहला धर्म पर चलने वाला व्यक्ति भय प्रेरित है, दूसरा लोभ प्रेरित है और तीसरा संस्कार प्रेरित है। इनमें से दो के जीवन में धर्म की नींव कच्ची है, तीसरे की नींव सुदृढ़ है। वही सत्त्ववान है। दृढ़धर्मी है। ❖❖

चिन्तन-मनन करें

धार्मिक प्रवचन सुनते समय या भजन कीर्तन करते समय, श्मशान में अपने किसी स्वजन की चिता को जलते हुए देखने पर, बहुत बुरी तरह से रोगग्रस्त किसी रोगी से मिलते समय और क्रोध शान्त होने पर पश्चाताप करते हुए जो भावना हृदय में उत्पन्न होती है वह स्थायी नहीं होती। यदि स्थायी हो सकी होती तो ऐसे आदमी का जीवन कुछ और ही ढंग का हो जाता। उसका आचार-विचार ऐसा नहीं रह पाता जैसा कि दुनिया के प्रपंचों में उलझे हुए और नाना प्रकार की तिकड़म में लगाने वाले व्यक्ति का होता है। थोड़ी देर का ऐसा मरघटिया वैराग्य लुप्त हो जाता है और फिर पुराने ढर्रे में उलझ जाते हैं। चिन्तन - मनन करें। ●●

आधि-व्याधि-उपाधि के शमन का श्रेष्ठ साधन - भेद विज्ञान

ध्यान योगी, आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा.

आत्मार्थी साधक-साधिकाओ। वर्ष 2025 का समापन होने को है। वर्ष 2026 का आगमन होने जा रहा है। संसार में प्रतिपल प्रतिक्षण परिवर्तन चल रहा है। काल अपनी गति से गतिमान है। पुद्गल में परिवर्तन नित्य चल रहा है। सारा जगत कर्म सिद्धांत से व्यवस्थित चल रहा है। जड़ और चेतन के मिले-जुले संयोग से संसार चल रहा है और चलता रहेगा, किन्तु इस संसार में, सार रूप में जीव भेद-विज्ञान के द्वारा जड़ और जीव का भेद करता है। शुद्ध निश्चयनय से अस्तित्व का बोध प्राप्त करता है और भाव रूप से मिथ्यात्व का त्याग कर सत्य का साक्षात्कार करता है।

भगवान महावीर ने फरमाया "सच्चं खु भगवं" सत्य ही भगवान है। सत्य को प्राप्त करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञानी पुरुष के द्वारा आत्म ज्ञान, भेद-विज्ञान को प्राप्त कर जीव क्या हेय है, क्या उपादेय है, यह जानता है। जीव और अजीव का भेद जानकर जीव ज्ञानी बन जाता है। ज्ञानी होने का सार क्या है?

"एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचणं।"

- 1/1/4/10-श्री सूत्रकृतांग सूत्र

ज्ञानी होने का सार यह है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। हिंसा दो प्रकार की है द्रव्य हिंसा व भाव-हिंसा। द्रव्य रूप से शस्त्र का प्रयोग नहीं करना अहिंसा है।

भाव हिंसाः भाव रूप से राग-द्वेष का त्याग करना अर्थात् न राग करना, न द्वेष करना। राग अर्थात मेरेपन का भाव, अनुकूलता की चाह करना। 'पर' को अपना मानना, उस पर अधिकार रखना, उससे अपेक्षा रखना। अपेक्षा पूरी न होने पर स्वयं दुःखी होकर मानसिक एवं शारीरिक रूप में क्लेश उत्पन्न होता है, इसलिए कहा है जहां राग है वहां क्लेश है। मानसिक क्लेश में व्यक्ति अवसाद व तनाव में चला जाता है, जिससे उसके शरीर में अनेकों रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जैसे ब्लड प्रेशर, डायबीटिज, कैंसर आदि। सभी रोगों का मूल कारण राग है। जहां राग होता है वहां द्वेष उत्पन्न हो जाता है।

त्याग : राग और द्वेष दोनों ही भाव हिंसा हैं। ज्ञानी भेद-विज्ञानी आत्म-ध्यान से समस्त रोगों का इलाज कर लेता है और जीवन को उच्चतम लक्ष्य के लिए, सत्य के लिए समर्पित कर लेता है। जो ज्ञानी, भेद-विज्ञानी होते हैं, वे रोगों के मूल कारण अज्ञान का त्याग कर देते हैं।

अज्ञान का फल : अज्ञान क्या है? सत्य को असत्य मानना एवं असत्य को सत्य मानना ही अज्ञान है। इसे जैन दर्शन की भाषा में मिथ्यात्व या विपरीत ज्ञान कहा है। जैसे शरीर को 'मैं' मानना, शरीर के प्रति ममत्व भावना रखना, शरीर, मन, बुद्धि व इन्द्रियों की पूर्ति करने वाले विषयों की इच्छा करना। शरीर के चिन्तन में लगकर पुद्गलों का चिंतन करना, ये सब अज्ञान का फल है।

ज्ञानी : ज्ञानी वह है जो स्व और पर के भेद को जान लेता है कि मैं जीवात्मा हूँ और शरीर निवास स्थान मात्र है। शरीर 'पर' है, पराया है। इसके लिए न मैं राग करूंगा, न द्वेष करूंगा, मात्र द्रष्टा रहकर इसको वश में कर इसका उपयोग जीवात्मा के कल्याण के लिए करूंगा। यही संकल्प ज्ञान का फल "नाणं नरस्स सार" ज्ञान मानवता का सार है। अतः प्रत्येक साधक को अपने मानव जीवन को सफल बनाने के लिए ज्ञानी बनकर ज्ञानमय जीवन जीना चाहिए।

सम्यक्य : "सारो वि नाणस्स होई सम्मत्तं" ज्ञान का सार सम्यक्त्व है। सम्यक्त्व ही सत्य है, सत्य ही भगवान है। भगवान बनने का आधार सम्यक्त्व है। सम्यक्त्व के अभाव में की हुई सारी तपस्या व्यर्थ है। **"जं अनाणी कम्पं खवेड़, बहुयाहि वासकोडीहिं। तं नाणी तिहि गुत्तो, खवेइ, उस्सासमित्तेण।" - प्रवचनसार**

अज्ञानी मनुष्य बाल-तप आदि अज्ञान क्रियाओं द्वारा जिन पाप कर्मों को करोड़ों वर्षों में क्षय करता है उतने कर्मों को तीन गुप्तियों से युक्त ज्ञानी पुरुष एक उच्छ्वास मात्र में क्षय कर देता है। अतः ज्ञान का महान महत्त्व है।

भेद-ज्ञान : जो साधक अरिहंत कृपा से, जड़ जीव का भेदज्ञान प्राप्त कर अनादि के मिथ्यात्व, अज्ञान को तोड़ने का

पुरुषार्थ कर रहे हैं, सत्य का पोषण कर सम्यक्त्व को परिपक्व कर जो साधक, मन, वचन, काया का गोपन कर अर्थात् मन का मौन कर आत्मा में स्थित हो जाते हैं वे धन्य है।

आत्मा को आत्मा में स्थित रखने का पुरुषार्थ करने वाले साधकों के लिए प्रत्यक्ष अरिहंत परमात्मा सीमंधर स्वामी फरमाते हैं हे जीव। इस पुरुषार्थ द्वारा तू अनंत कर्मों को क्षय करता है। नवीन कर्मों के बन्धन रोकता है और अपने भीतर छिपे अष्ट गुणों को प्रकटाते हुए अनंत सुख का अनुभव पा लेता है।

वर्ष 2025 की उपलब्धि है भेद-विज्ञान। कर्म सिद्धांत को स्वीकार कर अनेकान्तवाद में जीना। अस्तित्व में ठहरने का अभ्यास करते हुए अभेद दृष्टि से प्रत्येक जीव को अपने समान मानना। रागभाव से ऊपर उठकर कर्म सिद्धांत को स्वीकार करते हुए निर्विचार-निर्विकल्प समाधि की ओर आगे बढ़ना। किन्तु, परन्तु, क्यों, कैसे आदि सब प्रतिक्रियाएं छोड़कर समाधि की ओर बढ़ना।

अनेकान्तवाद द्वारा आस-पास रहने वाले सभी में अभेद दृष्टि से जीव देखते हुए किसी की वृत्तियों को महत्त्व न देकर सदैव आनंद शाति ज्ञानपूर्ण जीवन जीना, यही वर्ष 2025 की उपलब्धि है।

❖❖

अभिमान का स्वरूप

इस जगत में एक से एक बढ़कर अभिमानी है। किसी को अपनी जाति-कुल का अभिमान है, तो किसी को बल का; किसी को अपने रूप पर गर्व है, तो कोई अपने धन-वैभव पर इतराता है; कोई अपनी तपस्या का घमण्ड करता है तो किसी को अपनी उपलब्धियों पर नाज है; किसी को अपने ज्ञान का गर्व है, तो किसी को अपनी बुद्धि का मद है। ये सब अभिमानी या अहंकारी अपने पास जो भी शक्ति या उपलब्धि है, उसका मूल्यांकन अधिकाधिक करते हैं, परन्तु उनसे जब कोई सवाया मिलता है, तो उनका गर्व या अहंकार एक क्षण में चूर-चूर हो जाता है। अभिमानी प्रायः अपना नापतौल अधिक आंकता है, जबकि दुनिया के बुद्धिमानों की दृष्टि में वह कुछ नहीं है, नगण्य है, तुच्छ है। वास्तव में अभिमानी उस महागज पर बैठा हुआ है, जो अपनी आँखों से अपने से ऊपर के व्यक्ति को देख नहीं पाता, अपने कानों से अपने से अधिक गुणी के विषय में सुन नहीं पाता, अपने शरीर से अधिक बलिष्ठ एवं पुष्ठ शरीर की गणना नहीं कर पाता। वास्तव में ऐसा व्यक्ति अपने आपको सदैव उत्कृष्ट, ऊँचा, श्रेष्ठ, उत्तम और उन्नत मानता है और दूसरों को निकृष्ट, नीचा, कनिष्ठ, अधम और अवनत् समझता है। यह गर्व स्फीत, मदगर्भित दृष्टि ही अभिमानी की दृष्टि है। वास्तव में यही मनुष्य की सबसे घातक कमजोरी है कि वह अपने न कुछ जीवन को बहुत कुछ समझता है। अहंकारी अपने अहं को, अपने आपको या अपनी मानी हुई वस्तु को अधिक महत्व देता है, अपनी या अपनी मानी हुई चीजों की प्रशंसा स्वयं करता है। वह बात-बात में अतिशयोक्ति करता है, अपनी हर चीज की बड़ाई करता है, अपनी शेखी बघारता है, अपने आचार-व्यवहार की डींगें हांकता है, अपने और अपनों के ही गौरवगान करता है, अपने स्वार्थ या स्वत्त्व को सबसे अधिक तूल देता है, अपने देश, प्रांत जाति, कुल, बल, रूप, परिवार आदि की बढ़चढ़ कर गुणगाथा गाता है, अपनी ही बात को मनवाने का प्रयत्न करता है, अपनी आज्ञा को सर्वोपरि और अन्तिम समझता है, अपने ही माने हुए सत्य को सत्य समझता है, किसी की सफलता का श्रेय स्वयं ही ले लेता है, दूसरे किन्हीं सहायकों या सहयोगियों को श्रेय नहीं देता, यहाँ तक कि ईश्वर को सृष्टिकर्ता मानने वाला व्यक्ति भी जगत में जो भी अच्छे काम हुए हैं या होते हैं, उनका श्रेय स्वयं लेता है, अहंकृत्व से प्रेरित होकर ऐसा व्यक्ति अच्छे कामों का कर्ता अपने आपको मानता है। एक कवि ऐसे अभिमानियों के मानस का चित्रण करता है।

निष्कर्ष यह है कि अहंकारी व्यक्ति सदैव अपनी नाक ऊँची रखने या अपनी टांग ऊँची रखने का प्रयत्न करता है, वह समाज में, जाति में, धर्म-सम्प्रदाय में, राष्ट्र और प्रान्त में सबसे अपना लोहा मनवाना चाहता है। मतलब यह है कि वह 'अधजल गगरी छलकत जाय' ❖❖

न्यायोपार्जित अन्न अमृत तुल्य

- युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

एक बार गुरु नानक किसी गांव में पधारे। उनके वहां पहुँचते ही गाँव के व्यक्ति प्रसन्नता से भर गए। अनेक व्यक्ति अपने-अपने घर से गुरु नानक के लिये नाना प्रकार के उत्तमोत्तम खाद्य पदार्थ बनवाकर लाये। उन लोगों में गाँव का जमींदार भी था जो अत्यंत स्वादिष्ट और मधुर पकवान बनवाकर लाया था।

किन्तु गुरु नानक ने जमींदार की एक भी वस्तु को ग्रहण नहीं किया। उन्होंने एक निर्धन लुहार की लाई हुई बिना चुपड़ी मोटी रोटी नमक के साथ खाई।

जमींदार को अपने लाये हुये भोजन की उपेक्षा देखकर बड़ा क्षोभ हुआ। उसने नानक जी से पूछा-

"महात्मा जी! क्या कारण है कि आपने मेरे द्वारा लाए हुए पकवानों को तो छुआ भी नहीं और इस लुहार की सूखी रोटी को खाया?"

गुरु नानक ने मुँह से कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने लुहार की रोटी में से बचा हुआ एक टुकड़ा उठाया और उसे दोनों हाथों में दबाया। रोटी दबाते ही सब ने आश्चर्य से देखा कि रोटी में से दूध की बूँदें टपक रही है।

उसके पश्चात् नानक जी ने जमींदार के लाये हुए पकवानों में से एक मिठाई का टुकड़ा उठाया और उसे भी अपने हाथों से दबाया। देखने वाले व्यक्ति और भी चमत्कृत हुए. जब उन्होंने देखा कि मिठाई में से खून की बूंदे झर रही हैं।

अब गुरु नानक जी ने जमींदार को संबोधित करते हुये कहा "देखो भाई! इस लुहार ने अपना पैसा बड़ी मेहनत से तथा बड़े पवित्र विचारों के साथ कमाया है अतः इसका अन्न पवित्र है। इसे खाने से मेरी बुद्धि निर्मल रहेगी। किन्तु तुम्हारा पैसा दूसरों को सताकर तथा उनका पेट काटकर अनीति से कमाया गया है। अतः उससे तैयार किया हुआ अन्न दूषित होता है। इसे खाने पर मुझे अपनी बुद्धि और विचारों के दूषित होने का भय था अतएव मैंने नहीं खाया। अपवित्र और दूषित अन्न से पापवृत्तियाँ पनपती हैं।

जमींदार यह सुनकर बड़ा लज्जित हुआ।

उसने गुरु नानकदेव को प्रणाम किया और प्रतिज्ञा की कि वह भविष्य में न्याय नीतिपूर्वक अर्थोपार्जन करेगा।

अन्याय और अनीतिपूर्वक अर्जित किये धन से निष्पन्न अन्न रक्त-तुल्य है। न्याय-नीति से अर्जित धन से निष्पन्न रूखा सूखा अन्न भी अमृत के समान है। ❖❖

बच्चों के लिए शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है ?

जब हम पूछते हैं, 'बच्चों के लिए शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है?' तो जवाब काफी सीधा-सादा लगता है। हालांकि, बाल शिक्षा के दूरगामी प्रभाव कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा से कहीं अधिक होते हैं। आइए विस्तार से समझते हैं कि शिक्षा बच्चे के जीवन को किस प्रकार गहराई से प्रभावित करती है:-

सशक्तिकरण और आत्मविश्वास : शिक्षा ज्ञान प्रदान करती है, जो सशक्तिकरण का स्रोत है। शिक्षित बच्चा उच्च आत्मसम्मान और आत्मविश्वास के साथ बड़ा होता है, जिससे वह जीवन की चुनौतियों का सामना दृढ़ता से कर पाता है। सीखने को प्रोत्साहित करके, हम बच्चों में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की भावना विकसित करने में मदद करते हैं, जो उनके जीवन भर उनके साथ रहती है।

आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान : शिक्षा बच्चों को आलोचनात्मक रूप से सोचने और समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रेरित करती है। आज की दुनिया में, जहां नवाचार और अनुकूलनशीलता पर इतना जोर दिया जाता है, ये गुण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जो बच्चे किसी भी परिस्थिति का विश्लेषण करना, विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करना और सोच-समझकर निर्णय लेना सीखते हैं, वे जीवन भर सीखने की नींव रखते हैं।

सामाजिक-भावनात्मक विकास : विद्यालय एक ऐसा सामाजिक वातावरण प्रदान करते हैं जहाँ बच्चे सहानुभूति, टीम वर्क और संचार सीखते हैं। ये गुण भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निर्माण करते हैं, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। शिक्षा बच्चों को एक विविधतापूर्ण दुनिया से परिचित कराती है और उन्हें सभी प्रकार के व्यक्तियों के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। ❖❖

दीक्षा एवं स्मृति दिवस पर विशेष...

ज्ञान की ज्योति थे जैन धर्मोप्देष्टा, प्राकृत भाषा प्रेमी आगम मर्मज्ञ श्री फूलचन्द्र जी म.सा. 'पुप्फ भिक्खु'

- संघ सेतु, उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा.

जैसे ही जीवन के अहसासों का प्रथम आलोक मुझे छूता है, मेरे मन में एक अनकहा स्मरण जागृत होता है। यह स्मरण उस महान आत्मा का है जिसने अपने जीवन को धर्म, ज्ञान और तपस्या के पावन आलोक में समर्पित किया। बाल्यावस्था से ही उनके व्यक्तित्व में अद्भुत विद्या, सादगी और आध्यात्मिक उत्कर्ष की झलक मिलती थी। मैंने उनकी जीवनयात्रा में जो पढ़ा व सुना है, वह केवल जीवन का क्रमिक अनुक्रम नहीं, बल्कि एक गहन दार्शनिक कथा है, जिसमें हर अनुभव से संदेश, हर प्रयास से प्रेरणा और हर त्याग से मोक्ष की सीख मिलती है।

जन्म और प्रारंभिक जीवन : जैन धर्मोप्देष्टा पं. रत्न श्री फूलचन्द्र जी महाराज का जन्म चैत्र सुदी दशमी, वि. सम्वत् 1952 में राजस्थान के बीकानेर जिले के भाडला शोभाना में हुआ। इनके पिता श्री टेकसिंह जी बीकावत एवं माता का नाम श्रीमती हुलासकुंवरजी बीकावत था। उन्होंने प्रारंभ से ही धार्मिक शिक्षा और संस्कारों का गहन अनुभव प्राप्त किया।

आध्यात्मिक मार्गदर्शन और दीक्षा : महाश्रमण पूज्य श्री फकीरचंद जी महाराज के सान्निध्य में केवल 16 वर्ष की आयु में, पौष वदी ग्यारस वि.सं. 1968 में गांव खानपुर कलां, गोहाना जिला सोनीपत, हरियाणा में उन्होंने जैन मुनि दीक्षा ग्रहण की। इस छोटी सी उम्र में दीक्षा लेना यह संकेत था कि उनके भीतर एक आसाधारण आत्मिक शक्ति और समर्पण का बीज पहले से ही अंकुरित हो चुका था।

शिक्षा, अध्ययन और भाषाओं में निपुणता : आपने महाश्रमण पूज्य श्री फकीरचंद जी महाराज का सुशिष्य बनने के पश्चात जैन एवं जैनेतर साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, दर्शन और आगम के गहन अध्ययन में पारंगतता प्राप्त की। भाषाओं में आपकी दक्षता अद्भुत थी। प्राकृत, संस्कृत, हिंदी, उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, बंगाली, सिंधी और पंजाबी में न केवल अध्ययन किया, बल्कि अपनी रचनाओं और उपदेशों में इन भाषाओं का सृजनात्मक उपयोग किया। आपके होनहार सुशिष्य बाल ब्रहाचारी श्री सुमित्रदेव जी महाराज थे।

साहित्यिक योगदान : उनकी साहित्यिक रचनाएँ अत्यंत विविध और गहन हैं। सुतागमे एवं अत्थागमे का प्रकाशन, स्वप्न सार समुच्च, वीर स्तुति, कश्मीर से कराची, मेरी अजमेरी मुनि सम्मेलन यात्रा, गल्प कुसुमाकार, नव पदार्थ ज्ञान सार इन सभी ने जैन समाज और धर्म की गहन व्याख्या प्रस्तुत की।

सेवा और विरासत : अंतिम वर्षों में, परम सेवाभावी पूज्य गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी महाराज के मार्गदर्शन में उन्होंने समस्त समाज के लिए धर्मप्रकाश का कार्य किया। उनका जीवन केवल आचार्य का नहीं, बल्कि एक आदर्श मार्गदर्शक, लेखक, प्रवर्तक और प्रेरक का उदाहरण है।

धर्म, भक्ति और प्रकाश का संगम : 29 जनवरी 1975, प्रातः 4:35 बजे, प्रेम भवन (श्री जैन स्थानक) करोलबाग, दिल्ली में उनका देवलोकागमन हुआ। परंतु उनकी शिक्षाएँ, उनके अनुशासन और उनके लेखन से उज्ज्वलित मार्ग, आज भी अनेकांत विहार, गुरुग्राम और समग्र भारतवर्ष में जीवंत हैं। उनका जीवन हमें यह स्पष्ट संदेश देता है कि ज्ञान, भक्ति और सेवा की त्रिवेणी में एक साधक मात्र स्वयं के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए दीपक बन सकता है। उनके पावन चरित्र से प्रेरणा लेकर, हम भी अपने कर्म, जीवन दृष्टि और भक्ति को परिष्कृत कर सकते हैं।

नमन और स्मृति : जन-जन की आस्था के केन्द्र, जैन धर्मोप्देष्टा, प्राकृत भाषा प्रेमी आगम मर्मज्ञ, सुत्तागमे के संपादक, प्रचार मंत्री, पं. रत्न, परम पूज्य गुरुदेव की पावन पुण्य स्मृति दिवस पर, उनके दिव्य जीवन, अपूर्व तपश्चर्या और ज्ञान ज्योति को कृतज्ञतापूर्वक नमन करते हैं। उनकी पावन शिक्षाएं जो प्रेरणा का एक अमर स्रोत हैं, जो हर जीव में धर्म और ज्ञान का प्रकाश फैलाने का संदेश देती हैं। आपकी अनुकम्पा से समस्त जैन समाज को धर्म प्रकाश प्राप्त होता रहे, यही मंगल भावना। ❖❖

स्मृति दिवस पर विशेष...

संघ निर्माता पू. गुरुदेव 'मरुधर केसरी'

- मरुधरा भूषण, प्रवर्तक पू. श्री सुकन मुनि जी म.सा.

यह बात तो बच्चा-बच्चा जानता है कि श्रमण संघ के निर्माण में अपूर्व योगदान पूज्य गुरुदेव, धुन के धनी पू. श्री मिश्रीमल जी म. 'मरुधर केसरी' का रहा है क्योंकि जैसा मैंने आपश्री जी के पावन चरणों में रहकर देखा है। वे जन्मजात सृजन और संगठन के पर्याय थे। यों तो दीक्षाकाल से ही संघ सेवा की ओर उनका झुकाव रहा, किन्तु मैं यहां उनके जीवन की संघ सेवा संबंधी उन घटनाओं को ही प्रस्तुत करूंगा, जिन्हें मैंने अपनी आंखों से देखा है। समय परिवर्तनशील है, अतः समय के साथ हर चीज में परिवर्तन आता ही है। स्थानकवासी समाज की सांप्रदायिक मनोवृत्ति से दुःखी होकर धर्मवीर दुर्लभजी भाई आदि श्रावकों ने संगठन का शंखनाद फूंका। सांप्रदायिक भावनाओं को समाप्त करने का एक ही तरीका हो सकता था और वह था **'संघ ऐक्य-श्रमण संघ का निर्माण।'** दुर्लभजी भाई इस पुण्य कार्य के लिये निकल पड़े सभी संप्रदायों के प्रमुख संतों से उन्होंने संपर्क साधा। वे मरुधर केसरी जी की सेवा में भी गये। पू. गुरुदेव मरुधर केसरी जी म. उस समय जोधपुर में विराज रहे थे। मरुधर केसरी जी के खरे स्वभाव के कारण हर मिलने वाला थोड़ा हिचकिचाता था अतः दुर्लभजी भाई में भी उस भावना का होना स्वाभाविक था। वे मरुधर केसरी जी की सेवा में पहुंचे। वंदनापूर्वक वार्तालाप आरंभ हुआ। उस समय के कुछ शब्द आज भी कानों में गूंज रहे हैं। दुर्लभ जी भाई ने कहा - 'मिश्री मीठी होती है उसमें से रस टपकता है, उसके रसास्वादन का लाभ समाज को मिलना चाहिये। सांप्रदायिकता के कारण समाज में जो कटुता व्याप्त है, उसे मिठास से दूर करना है तथा संघ-ऐक्य का काम हाथ में लेना है।'

गुरुदेव मरुधर केसरी - **वाणी में कठोरता प्रतीत हो सकती है, किन्तु हृदय में मिठास है। आप जिस पवित्र योजना को लेकर आये हैं, मैं हृदय से उसका स्वागत करता हूँ। इस नश्वर शरीर से आप जो भी सेवा लेना चाहें, ले सकते हैं संघ-ऐक्य के लिये मेरी सभी सेवायें समर्पित समझिये।**

इस वाक्यांश में पू. गुरुदेव के हृदय की सत्यता झलक रही थी। योजनानुसार सर्वप्रथम मरुधरा के श्रावकों का सम्मेलन बगड़ी नगर में आयोजित किया। सभी मारवाड़ी संप्रदायों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित हुए तथा श्री सरदारमल जी छाजेड़, शाहपुरा निवासी की अध्यक्षता में सम्मेलन संपन्न हुआ।

श्रावक जब एक राय हो गये तो संतों को एकत्रित करने की ठानी। अजमेर में साधु-सम्मेलन करने का निश्चय हो ही चुका था, अतः वहां जाने से पूर्व आपसी विचार-विनिमय तो कर ही लेना चाहिये, इस दृष्टि से प्रवर्तक मुनि श्री पन्नालाल जी म., वयोवृद्ध मुनि श्री ताराचंद जी म., सरल स्वभावी मुनिवर्य श्री हजारीमल जी स्वामी, पू. श्री चौथमल जी म., तपस्वी मुनि श्री चतुर्भुज जी म., वयोवृद्ध पू. श्री शार्दलसिंह जी म., पं. मुनि पू. श्री छगनमल जी म. तथा पू. श्री फतेहचंद जी म. आदि सभी से पत्र व्यवहार किया तथा मिलने का स्थान पाली तय हुआ। स्वयं मरुधर केसरी जी सम्मेलन के पहले ही पाली पहुंचे तथा श्रावकों में जोश फूंका। मरुधर मुनि सम्मेलन का यह रूप हो सकता है। यह कल्पना ही नहीं हो सकती थी। एक मास पहले से ही विचित्र चहल-पहल थी। बूढ़े, जवान, बच्चे सभी के मुंह पर साधु-सम्मेलन की चर्चा थी। सभी लोग सम्मेलन की तैयारी में व्यस्त थे। कहीं स्थानकों की सफाई हो रही है तो कहीं अतिथियों के लिये मकानों की देखभाल। कहीं पाण्डाल बनाने की तैयारी तो कहीं सम्मेलन के बोर्ड लगाने की। जोश फूंक कर वातावरण ही धर्ममय सा (सम्मेलनमय) बना दिया।

सम्मेलन के पहले धर्मवीर दुर्लभजी भाई तथा श्री राजभाई पाली आये और वातावरण देखकर चकित हो गये। दुर्लभजी भाई ने मरुधर केसरी जी से कहा - 'मुझे प्रसन्नता है कि आपने मेरी जोधपुर यात्रा को सफल कर दिया। आप जैसा उत्साह तथा संघ प्रेम सभी संतों में व्याप्त हो जाए तो समाज का कल्याण हो जाए। मुझे यहां की स्थिति से बड़ी प्रसन्नता है। इस सम्मेलन का प्रभाव अन्य प्रांतों पर बहुत अच्छा पड़ेगा तथा वृहद् सम्मेलन की सफलता का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।'

मरुधर केसरी जी ने न केवल वहां की व्यवस्था को संभाला, वहां आने वाले संतों के स्वागत की भी सुंदर योजना बनाई। युवक संत उत्साह के साथ जाते और संतों का स्वागत करते। 20-20, 30-30 मील दूर श्रावकों के झुण्ड जाते और

संतों की जय-जयकार करते। पधारने वाले संतों के दिल भी हरे हो गये। प्रचार ऐसा हुआ कि दूर-दूर से स्वागत समिति के पास दर्शनार्थियों के आगमन एवं आवास व्यवस्था के लिए पत्र तथा तार आने लगे। कलकत्ता, मुंबई, मद्रास, खानदेश-बरार आदि प्रदेशों से लोग पहुंचने लगे। मरुधर केसरी जी जमें हुए थे ही अतः उत्साह में अभिवृद्धि होती रही। कई युवक तो आपे को भूल गये। जब देखो, मरुधर मुनि सम्मेलन का काम या उसी की चर्चा। ज्यों-ज्यों सम्मेलन का समय नजदीक आता, त्यों-त्यों लोगों के उत्साह में वृद्धि होती गई। इस सम्मेलन में अन्य आवश्यक कार्यवाही तो हुई, किन्तु एक निश्चय अत्यंत महत्वपूर्ण था। सम्मेलन अजमेर में होने जा रहा था तथा यह क्षेत्र खासतौर से मरुधर मुनियों का स्वागत करने तथा मार्ग की कठिनाई से राहत मिले इस दृष्टि से उन्हें लेने जावें। इस सब काम की जिम्मेदारी को वहन करने की घोषणा की। घोषणा के साथ जय-जयकार हुई और ऐसी हुई मानों आकाश गूंज उठा हो। मरुधर सम्मेलन के तुरन्त पश्चात् तरुण मुनियों का सहयोग लेकर मरुधर केसरी जी आगे के काम में जुट गये।

साधु-सम्मेलन के लिये देश के सभी भागों से संत-मण्डल अजमेर के लिये निकल पड़े। आबू, जयपुर तथा भीलवाड़ा से स्वागतकर्ता संत पहुंच गये और अतिथि संतों की सेवा में लग गये। संतों के पैर लहु-लुहान हो गये, किन्तु न घबराये और न विचलित हुए। सामने से आने वाले महापुरुषों के पैरों की भी यही हालत थी। दक्षिण भारत से, पंजाब से, सौराष्ट्र और मध्य प्रदेश से, उत्तर प्रदेश और दिल्ली से सभी ओर से संत तेजी से अजमेर की ओर बढ़ रहे थे।

सभी का भावभीना स्वागत राजस्थानी संतों ने किया और उन्हें लेकर अजमेर पहुंचे। इस स्वागत अभियान से मरुधर केसरी जी की युवक संत-मण्डली की प्रतिष्ठा में चार-चांद लग गये। अजमेर में लगभग पांच-सौ संत-सतियां तथा एक लाख से ऊपर श्रावक-श्राविकायें एकत्रित हुए। अजब धर्ममेला था। मरुधर केसरी ने इस महा सम्मेलन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और यशस्वी बनें। स्थानकवासी समाज के इतिहास में शायद यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा विशाल धर्ममेला था।

जैनों तथा अजैनों की दृष्टि में संगठन के इस महामेले के फलस्वरूप तथा स्थानकवासी समाज को अच्छा यश मिला। सम्मेलन में रही कमीं की पूर्ति के लिये सादड़ी मारवाड़ तथा सोजत, भीनासर में भी सम्मेलन हुए तथा वहां भी सैकड़ों संत, महासतियां तथा असंख्य नर-नारी एकत्रित हुए। संघ-ऐक्य श्रमण संघ निर्माण के महत्व को आज कोई किसी रूप में महसूस करे, किन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतेगा, उसका महत्व बढ़ेगा।

सादड़ी का महत्व सादड़ी : सम्मेलन के समय तो मरुधर केसरी जी का वही स्थान था जो मरुधर मुनि सम्मेलन पाली के समय था। सादड़ी मरुधर केसरी का प्रमुख क्षेत्र है। सादड़ी संघ का एक महत्वपूर्ण इतिहास है। गोड़वाड़ प्रदेश भर में प्रमुख रूप से सादड़ी ही एक ऐसा शहर है जहां स्थानकवासियों के घर हैं। धर्म रक्षा के लिये इन्हें बड़े-बड़े कष्ट सहने पड़े किन्तु ये विचलित नहीं हुए। मरुधर केसरी जी तथा इनके गुरुओं ने समय-समय पर इन्हें साथ दिया तथा धर्म पर टिके रहने के लिए हिम्मत दिलाई। इनके भक्त यहां बड़ी संख्या में हैं अतः साधु-सम्मेलन होने का बहुत बड़ा श्रेय मरुधर केसरी जी को ही है। पहले पहुंच कर आवश्यक व्यवस्था करवाने में उनका अच्छा योग रहा। लोगों में जोश भरने की कला में तो आप सिद्धहस्त थे ही। ऐसा जोश भरा कि लोग साधु-सम्मेलन सेवा तथा अतिथि सत्कार के लिए पागल से हो गये। बाहर से आकर भी सैकड़ों घर बस गये तथा उनके चौके चलने लगे। कॉन्फ्रेंस के अधिवेशन तीनों ही सम्मेलनों में आप साथ थे। पू. गुरुदेव मरुधर केसरी जी के जीवन की अनेक विशेषताओं मे एक विशेषता यह रही है कि वो जो सोच लेते हैं उसे पूरा करके छोड़ते हैं। तीन महासम्मेलनों के सिवाय एक छोटा सा सम्मेलन सोजत में भी हुआ और वह मरुधर केसरी जी की धुन के परिणाम स्वरूप था। इसी धुन के धनी ने सोच लिया कि अपने दीक्षा क्षेत्र में प्रमुख सभी संतों को लाना है ले आये। श्रमण संघ का निर्माण हुआ, बाहर से सांप्रदायिक भावनायें समाप्त हुईं, किन्तु अंदर कहीं-कहीं रह गईं। वह सांप्रदायिकता निरंतर सताती रही। कभी किसी बहाने से कोई रूठ जाता तो कभी कोई दूसरा।

आचार्य और उपाचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी म. को आचार्य पद की चादर भी वहीं पर ओढ़ाई गई। सभी ऐसे आयोजनों में हमारे दिव्य दृष्टा पू. गुरुदेव का सहयोग सक्रिय एवं महत्वपूर्ण रहा है। संघ सेवा की भावना के बिना कभी सक्रिय सहयोग संभव नहीं होता। ❖❖

सम्यक्त्व निर्मल रखना

- पूज्य श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा.

सम्यक्त्व का मुख्य अर्थाभिप्राय है अमुक छः बातों में गहरा विश्वास रखना। यथा आत्मा है, आत्मा नित्य है, आत्मा कर्ता है, आत्मा भोक्ता है, मोक्ष है और मोक्ष में जाने के उपाय है। नीचे नरक है और ऊपर देव गति है देवलोक है। जीवात्मा अपने शुभाशुभ कर्मों के बलबूते पर नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति, देव गति और पंचम मोक्ष गति में जा सकती है, जाती है।

सम्यक्त्व निर्मल रखने के लिए आचार्य देव फरमाते हैं कि साधु, साधु का सम्पर्क रखें तथा श्रावक भी साधुओं के सम्पर्क में रहे। मिथ्यादृष्टियों से सम्पर्क संबंध बनाकर न रखें। सम्यक्त्व शुद्ध पालने के लिए पहले जिनवाणी/वीतराग वाणी का तलस्पर्शी अध्ययन करें। आराध्य गुरुओं से आगमों का गहरा ज्ञान सीखने का प्रयास करें। गुरुदेवों का दिशा निर्देशन पाकर चित्त में प्रसन्नता की अनुभूति करें। अश्लील व मिथ्या साहित्य का अनुशीलन न करें ताकि सम्यक्त्व में निर्मलता बनी रहे। सम्यक् दृष्टि व्यक्ति को चाहिए कि वह सम्यक्त्व को निर्मल बनाए रखने के लिए भगवान महावीर व उनकी पावन वाणी से जुड़ा रहे। ये तभी संभव है जब सम्यक् दृष्टि साधक की आत्मा प्रभु महावीर व उनकी वाणी के वियोग में उदासीनता महसूस करें। सूर पदावली में अनमोल शब्द कहे हैं -

केतिक दूरि गयौ रथ, माई?
नंद नंदन के चलत सखी हौं, हरि कौं मिलन न पाई।।
एक दिवस हौं द्वार नंद के, नहिं रहति बिन आई।
आज बिधाता मति मेरी हरि, भवन-काज विरमाई।
जब हरि ऐसौ साज करत है, काहु न बात चलाई।
ब्रजहिं बसत बिमुख भइ हरि सौं सूल न उर तैं जाई।।
सोवत ही सुपने की संपत्ति, रहीं जियहिं सुखदाई।
सूरदास-प्रभु बिनु ब्रज बसिबौ, एको पल न सुहाई।

जब श्रीकृष्ण और बलराम मथुरा जाने के लिए ब्रज से निकले तो उन्हें देखकर एक गोपी कहती है कि हे सखी! रथ कितनी दूर गया होगा? मैं अभागी चलते समय उनके दर्शन भी नहीं कर सकी। मैं नंद जी के घर प्रतिदिन आती थी, किन्तु ब्रह्मा जी ने मेरी बुद्धि भ्रमित कर दी और मैं घर के कार्यों में उलझी रह गई। जिस समय श्री कृष्ण भगवान मथुरा जाने की तैयारी कर रहे थे, उस समय किसी ने भी मेरे सामने इस बात की चर्चा नहीं की। प्रभु से विमुख होने की विरह वेदना मेरे हृदय को भेद रही है, जला रही है। अब प्रभु के बिना ब्रज में रहना, मुझे एक पल के लिए भी अच्छा नहीं लगता।

बस, एक सम्यक् दृष्टि आत्मा की भी यही स्थिति होती है। वो वीतरागों व वीतरागों की वाणी के अभाव में अपने आपको असहाय व अनाथ-सी महसूस करती है और यह अनाथता ही उसके लिए सनाथता का कारण बनती है अर्थात् जब-जब साधक गौतम स्वामी की तरह अपने को अनाथ मानने लगता है तो सनाथ बनने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। कहा भी है -

हर किसी से ऐसे मिलो कि प्रथम बार मिल रहे हो जैसे।
ऐसे लो विदा, प्रेमपूर्वक, ज्यों अन्तिम मिलना हो उनसे।
हर मिलन सत्य ही प्रथम मिलन, हर बिछुड़न है अन्तिम बिछुड़न।

सम्यक दृष्टि आत्मा हमेशा ऐसा चिंतन करती है कि अब बिछुड़े पुनः पता नहीं कब मिलेंगे? उनकी जुदाई भी प्यार भरी होती है। अन्तिम जुदाई कि अब हमारा पुनर्मिलन नहीं होगा। मिलन और जुदाई के समय रखी गई समदृष्टि ही साधक को महानता के चरम शिखर पर पहुंचाया करती है।

कवि रहीम जी कहते हैं-

रहिमन रिस को छाडिके, करो गरीबी भेस।
मीठे बोलो नै चलो, सबै तुम्हारो देस।।

अर्थात् हे जीवात्मा। क्रोध को, क्षोभ को त्यागो। भीतर की कटुता और भेदभाव को प्रेम में रूपांतरित कर दो। ऐसी सादगी अपनाओं कि दीन-दुखी भी तुमको अपना समझे और तुम्हारे को, तुम्हारे शांत चेहरे को, तुम्हारे द्वारा किए गए सत्कर्मों को देखकर हर किसी को सांत्वना प्राप्त हो।

हे जीवात्मा! सदैव प्रिय एवं मधुर बोलो। नम्र होकर चलो

फिर देखना, तुम्हारे लिए कोई भी व्यक्ति, कोई भी देश पराया नहीं रहेगा। सज्जनता विश्व मोहिनी होती है। विनम्रता व्यक्ति को विद्वान और महान बना देती है। जरूरत है व्यक्ति को अपनी सोच को सम्यक्त्व को निर्मल बनाए रखने की। याद रखिए -

रहिमन यह तन सूप है, लीजै जगत पछोर ।
हलु कन को उड़ि जान दै, गरूए राखि बटोर ।।

अर्थात् यह संसार अनाज के भंडार की तरह है और तुम्हारी सोच सूप छाज की तरह है। अन्न में विजातीय तत्व भी हैं और कुछ निःसत्व भी। तुम्हें अन्न को पछोर कर पछाड़ कर साफ करके सार को ले लेना चाहिए। जो कूड़ा है, जो हल्का निःसार है, उसको उड़ जाने दो और जिसमें जीवन है, जो जीवन्त है, जो काम आने वाली वस्तु है, उसे बटोर लो अर्थात् मृत-जीवन मूल्यों का परित्याग करके जीवंत जीवन मूल्यों को संग्रहित कर लो।

भर्तृहरि बहुत बार कहते थे कि -

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो,
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणमिवं शीलं परं भूषणम्।।

अर्थात् अमीरी की शोभा है सन्जनता, शूरवीर की शोभा है वाणी पर संयम, ज्ञान की शोभा है - वाणी पर संयम ज्ञान की शोभा है शांत, विद्वता की शोभा है - विनम्रता, धन की शोभा है सुपात्र पर खर्च, तप की शोभा है - क्षमा, प्रभुता की शोभा है - निश्छलता तथा इन सबकी शोभा है विचारों की शुद्धि / निर्मल सोच सम्यक् दृष्टि रखना। वास्तव में ही सज्जनता, संयम, शांति, विनम्रता, क्षमा भाव, त्याग एवं निश्छलता के अपनाने से व्यक्ति स्वतः अध्यात्म के क्षेत्र में विकास कर लेता है।

इसके विपरीत जहां कदम-कदम पर दुष्टतापूर्ण व्यवहार किया जाता है, मन, बचन काया पर किसी तरह का संयम नहीं, मन में शांति नाम की कोई चीज नहीं, जीवन कुव्यसनों में पड़ा हुआ है, मन में बराबर बदला लेने की आग जलती रहती है, प्रत्येक कार्य में कपटाचार है, विचारों का स्तर, रसातल को छू रहा है और बातें सम्यक्त्व निर्मल करने की की जा रही है, जोकि असम्भव सा ही है। फर्श से अर्श पर पहुंचने के लिए चाहिए - सम्यक सोच।

बहता हुआ जल ही निर्मल होता है, जो बहता नहीं वो गंदा हो जाता है। इसी प्रकार योगी, साधु यदि घूमता रहता है तो उसके विचार अच्छे बने रहते हैं। घूमते हुए साधु की जिन्दगी बेदाग रहती है। क्योंकि घूमते रहने से वो संसार की मोह-माया से बचा रहता है। राग-द्वेष रूपी प्रेत उसे कभी परेशान व अशांत नहीं कर पाते और न ही उन्हें कोई प्राकृतिक विषमता, सर्दी गर्मी प्रभावित कर पाती है और न ही उसकी किसी के प्रति शत्रुता या आसक्ति बन पाती है। योग साधना करने वाले साधक को अपने विचार गंगाजल के समान पवित्र तथा एकदम विशुद्ध बनाने होते हैं।

सभी ग्रन्थ वेद-पुराण-आगमादि कहते हैं कि जो गुरुदेव ने तुम्हें सम्यक् सोच देने की कृपा की है, उसका बार-बार सिमरण करो। सभी जीवों के प्रति मंगल मैत्री के भाव रखो। अविश्वास और अनास्था का परित्याग कर दो। यदि हृदय में गुरु पर विश्वास तथा उनके बताए गए सन्देशों पर गहरा विश्वास, अटूट निष्ठा है तो तुम्हारे हृदय और विचारों को निर्मल होने से कोई नहीं रोक सकता।

भगवान महावीर ने सत्य का साक्षात्कार करने के लिए तथा सम्यक्त्व निर्मल बनाने के बारे में प्रेरणा देते हुए श्रीमद ठाणांग सूत्र के चतुर्थ ठाणे में कहा है-

चउहिं ठाणेहि संते गुणे नासेज्जा कोहेणं, पडिनिवेसेणं,
अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिणिवेसेणं।

अर्थात्, क्रोध, ईर्ष्या-डाह, अकृतज्ञता और मिथ्याग्रह ये चार ऐसी बुराई हैं, जो मनुष्य के सुन्दर विचारों को, उसके निर्मल सम्यक्त्व को, उसके भीतर विद्यमान गुणों को नष्ट कर देती हैं।

अतः योगी लोगों को चाहिए कि वे अपना सम्यक्त्व निर्मल रखें, सोच अच्छी रखें, व्यवहार अच्छा रखें। इसके लिए क्रोध को त्यागे, ईर्ष्या को त्यागें, कृतघ्नता को त्यागें और अपनी जिद का, हठ का परित्याग करें। यह 12वाँ योग साधना बिन्दु है। ❖❖

जन्म दिवस पर विशेष...

आनन्ददाता प्रवर्तक पूज्य डॉ. राजेन्द्रमुनि जी म.सा.

- साहित्य दिवाकर पू. डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनि जी म.सा.

किसी भी व्यक्ति की जानकारी हेतु उसके दो ही पक्ष देखे जाते हैं, एक उसका जीवन एवं दूसरा दर्शन जिसे हम व्यक्तित्व व कृतित्व कहते हैं। पूज्य गुरुदेव श्रमण संघीय प्रवर्तक, संघ रत्न डॉ. राजेन्द्रमुनि जी म.सा. के दोनों ही पक्ष उज्जवल रहे हैं। जीवन की दृष्टि से आपका जन्म जैन कुल के ओसवाल परिवार के अंतर्गत आने वाले गौत्र डोसी परिवार में पिता पूनमचंद जी डोसी के गृह में माता धापू देवी के यहां हुआ जो राजस्थान के जिले नागौर के अंतर्गत आने वाले बड़ू ग्राम में है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि धार्मिक, सामाजिक रही, माता-पिता के शुभ संस्कारों से आपको विश्व संत अध्यात्म योगी उपाध्याय पू. श्री पुष्करमुनि जी म.सा. के विद्वान संत साहित्यकार आचार्य सम्राट् पू. श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. का संत सान्निध्य प्राप्त हुआ।

परिणामतः सन् 1954 में जन्मे गुरुदेवश्री जी की जैन दीक्षा 15 मार्च सन् 1965 में राजस्थान के ही बाडमेर जिले के गढ़ सिवाणा ग्राम में अपने अग्रज भ्राताश्री वर्तमान में उपाध्याय पू. श्री रमेशमुनि जी म.सा. के साथ सम्पन्न हुई एवं वर्षों तक गुरु सान्निध्य में रहते हुए आपने, अपने गुरुदेवों से एवं देश के जाने-माने विद्वानों से संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, मेवाड़ी, मारवाड़ी, अंग्रेजी आदि भाषाओं का अध्ययन प्राप्त कर आगम, न्याय, व्याकरण, काव्य के ग्रंथों का अध्ययन करते हुए विशारद शास्त्री, आचार्य परीक्षा के अलावा हिन्दी में साहित्यरत्न बी.ए., एम.ए. की उपाधियों के साथ दो बार पी.एच.डी. डाक्टरेट उपाधि से विभूषित हुए।

सामाजिक दृष्टि से आपने अपनी अलग ही पहचान बनाई जो जन-जन में व्याप्त है। विरोधी से भी विरोधी आपके इस सामाजिकरण से नत मस्तक है। कठिन से कठिन समय में भी हंसना-मुस्कुराना आपका सहज स्वभाव है। सरलता, सहजता आपका निज गुण बन चुका है।

साहित्य की दृष्टि से आप एक सफल साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आपके द्वारा रचित रचनाओं में कथा, उपन्यास, काव्य, आगम सम्पादन, शोध ग्रन्थों का परिणय रहा है जो आज देश व विदेश में अपना स्थान रखते हैं।

जैन सन्त जीवन में विचरण-विहारचर्या का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जीवन भर एक स्थान से दूसरे स्थान पर, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश का पाद भ्रमण करना, भगवान महावीर के सिद्धान्तों को गांव-गांव, घर-घर पहुंचाना, जनता को धर्म का मर्म समझाकर अहिंसक जीवन की प्रेरणा देना मुख्य लक्ष्य होता है। आपने, अपने जीवन काल में बखूबी गुरुदेवों के साथ रहते हुए एवं वर्तमान में विचरण करते हुए इसे निभाया है।

आपश्री जी के गुरुदेव श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर पद पर विराजमान रहे, वर्तमान में श्रमण संघ के आचार्य पद पर ध्यान योगी डॉ. शिवमुनि जी म.सा. प्रतिष्ठित हैं। आपश्री भी संघ के प्रवर्तक पद पर आसीन होकर आचार्यश्री जी के अनुयायी बनकर अपना उत्तरदायित्व निभा रहे हैं। आपकी संयम यात्रा की 62 वर्षीय साधना चातुर्मास के रूप में सम्पन्न हो चुकी है एवं आने वाला चातुर्मास भी अपने गुरुदेव जी के स्थल देवेन्द्रधाम उदयपुर में घोषित हो चुका है। इस हेतु उदयपुर श्रावक संघ चातुर्मास सफल बनाने हेतु अभी से तत्पर है। आपने अपने जीवनकाल में अनेक संस्थाएं स्थापित की हैं जो संघ सेवा में अनवरत रूप से अपनी सेवाएं प्रदान करती जा रही हैं।

विद्वता की दृष्टि से माँ भारती सरस्वती आपकी जिव्हा पर विराजमान हैं। हजारों हजार जन मेदिनी में प्रवचन करते हुए ज्ञान के साथ हंसी का पुट देना आपकी कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। आपके हृदय की विराटता दर्शनीय है। आपश्री के 72वें पावन जन्मोत्सव पर आपके श्रीचरणों में संघ समाज व मेरी ओर से हार्दिक वंदना ! ❖❖

णमोकार मंत्र / नवकार मंत्र के पाँच रंगो का रहस्य क्या है ?

- महासती पू. श्री पुष्पावती जी म.सा.

क्या आपने कभी सोचा है कि णमोकार/नमोकार मंत्र में सफेद, लाल, पीला, हरा, नीला या कृष्ण रंग क्यों होता है? क्या यह सिर्फ सजावट है या इसके पीछे कोई गहरा आध्यात्मिक राज छिपा है? हम णमोकार/नमोकार मंत्र के इन पाँच रंगों के पीछे छिपे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक अर्थ (Spiritual Science) को समझेंगे। यह रंग सिर्फ हमारी आँखों के लिए नहीं हैं, बल्कि यह पंच परमेष्ठी के महान गुणों को हमारे जीवन में उतारने का एक माध्यम हैं।

हम जानेंगेः **'सफेद रंग' (White)** : अरिहंत परमेष्ठी और उनकी शुद्धता (Purity) का प्रतीक।

लाल रंग (Red) : सिद्ध परमेष्ठी और उनकी अनंत शक्ति (Divine Energy) का महत्व।

पीला रंग (Yellow) : आचार्य परमेष्ठी और अनुशासन (Discipline) का पाठ।

हरा.नीला रंग (Green + Blue) मोरपंखी रंग : उपाध्याय परमेष्ठी और ज्ञान के विकास (Growth) का रहस्य।

नीला+काला (कृष्ण रंग) (Blue+Black) : साधु परमेष्ठी और त्याग (Renunciation) की शक्ति।

हम जानेंगे कि कैसे ये रंग हमारी आत्मा की उन्नति के लिए एक रोडमैप (Roadmap) की तरह काम करते हैं।

सफेद, लाल, पीला + हरा+नीला (मोरपंखी रंग) और नीला+काला (कृष्ण रंग)-यह सिर्फ रंग मात्र नहीं इनके पीछे कोई बहुत गहरा आध्यात्मिक राज छुपा है।

(नोटःचौथे और पांचवे पद में दो रंग का मिश्रण है। अतः कहीं कहीं पर भिन्नता पढ़ने में आती है।)

इन रंगों का असली मतलब क्या है और यकीन मानिए यह हमारी सोच से कहीं ज्यादा गहरा है? तो सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर 'नवकार मंत्र' के इन पाँच रंगों का असली उद्देश्य क्या है? क्या यह सिर्फ एक सजावट है? या एक पुरानी परंपरा?

इसका मकसद बहुत गहरा है/आध्यात्मिक है और सबसे जरूरी हमारी जिंदगी के लिए बहुत व्यवहारिक (Prectical) भी है और इसका अर्थ इस एक लाइन में छुपा है। यह सिर्फ रंग भरना नहीं है बल्कि यह उन पाँच महान आत्माओं जिन्हें हम 'परमेष्ठी' कहते हैं उनके 'पाँच विशिष्ट गुणों' को अपनी आत्मा में उतारने का एक तरीका है। मतलब यह रंग असल में हमारे (Sprichual Growth) स्पिरिचुअल ग्रोथ का एक (Roadmap) रोड मैप है।

सबसे पहले रंगों और उनसे जुड़े गुणों को समझेंगे।

सफेद श्वेत रंग (White) : अरिहंत परमेष्ठी और उनकी शुद्धता (Purity) का प्रतीक।

लाल रंग (Red) : सिद्ध परमेष्ठी और उनकी अनंत शक्ति (Divine Energy) का महत्व।

पीला रंग (Yellow) : आचार्य परमेष्ठी और अनुशासन (Discipline) का पाठ।

(हरा+नीला) मोरपंखी रंग (Green+Blue): उपाध्याय परमेष्ठी और ज्ञान के विकास (Growth) का रहस्य।

(नीला+काला) कृष्ण रंग (Blue+Black) : साधु परमेष्ठी और त्याग (Renunciation) की शक्ति।

सफेद रंग : यह रंग 'अरिहंत परमेष्ठी का प्रतीक है' अब सवाल यह उठता है कि यह अरिहंत कौन है? कि सफेद रंग अरिहंत की अवस्था को कैसे दिखता है? अरिहंत वह आत्माएं हैं जिन्होंने अपने सारे भीतरी दुश्मनों जैसे कि गुस्सा/अहंकार इन सब पर जीत हासिल कर ली है इसलिए सफेद रंग उनके परम शुद्धता उनके ज्ञान और उनकी शांति का प्रतीक है। यह उसे अवस्था को दिखाता है जहां मन में कोई मैल नहीं बिल्कुल साफ स्वच्छ और शुद्ध। अब बारी आती है शक्ति के गुण की और इसका प्रतीक है ऊर्जा से भरा हुआ लाल रंग यह रंग जुड़ा है 'सिद्ध परमेष्ठी' से तो लाल रंग ही क्यों? क्योंकि यह सिद्ध आत्माओं की अनंत शक्ति को दिखाता है जिसे अनंत वीर्य भी कहते हैं 'सिद्ध वह आत्माएं हैं जो जन्म मरण के सारे बंधनों से सारे कर्मों से मुक्त होकर मोक्ष कर चुकी है यह लाल रंग इस (Ultimate Libration) अल्टीमेट लिबरेशन और (Divine Energy) डिवाइन एनर्जी का सिंबल है।

अब अपने तीसरे गुण की अर्थात् पीला रंग की है। यह रंग रिप्रेजेंट करता है 'आचार्य परमेष्ठी को'। 'पीला रंग अनुशासन और संयम का प्रतीक है यह आचार्य के जीवन

को दिखाता है जो पूरे जैन संघ के गुरु और मार्गदर्शक होते हैं वह खुद भी नियमों का शक्ति से पालन करते हैं और पूरे समाज को सही दिशा दिखाते हैं। तो पीला रंग उनके इसी (Discipline & Balance) डिसिप्लिन और बैलेंस जीवन का प्रतीक है।

अब बढ़ते है हमारा चौथा रंग जो है हरा, हरा+नीला (मोरपंखी रंग) : यह रंग जुड़ा है 'उपाध्याय परमेष्ठी' से जो 'ज्ञान के शिक्षक होते हैं' और यह कनेक्शन कितना सही है हरा रंग विकास का प्रतीक है जैसे पौधा बढ़ता है और फलता फूलता है ठीक वैसे ही उपाध्याय शास्त्रों का ज्ञान देकर दूसरों की आत्मा को विकसित होने में मदद करते हैं तो यह रंग ज्ञान के फलने फूलने का प्रतीक है।

और अब हम अपनी इस रंगों की यात्रा के आखिरी पड़ाव पर है **नीला+काला रंग (कृष्ण रंग)** : यह रंग 'साधु परमेष्ठि' से जुड़ा है यह जो गहरे रंग है यह 'त्याग और स्थिरता के प्रतीक' है। इन रंगों में एक गंभीरता है एक शांति है जो एक साधु के जीवन को दर्शाती है जो दुनिया की सारी मोह माया को छोड़कर आत्म साधना में लगे रहते हैं और तपस्या से अपने कर्मों को खत्म करते हैं।

हमने सभी पांच रंगों और उनके गुणों को एक-एक करके समझने का प्रयास किया है। लेकिन इन सबको एक साथ देखने का एक साथ जोड़ने का असली मकसद क्या है?

इसका असली मकसद इन चार बातों में छिपा है **1.** यह रंग हमें उन पाँच महान आत्माओं के गुण याद दिलाते रहते हैं। **2.** यह मंत्र जाप को सिर्फ शब्दों से आगे ले जाकर एक गहरा अनुभव बनाते हैं।' **3.** जब हम ध्यान करते हैं तो हम इन गुणों की ऊर्जा को महसूस कर सकते हैं। जैसे सफेद रंग से शांति और लाल रंग से शक्ति आदि। **4.** यह हमें याद दिलाता है कि यह गुण हमारे लिए एक (Ideal) आइडियल है।

इन रंगों को हम भी अपने जीवन में उतार सकते हैं मतलब अगर एक लाइन में कहें तो नवकार मंत्र के यह पांच रंग हमारी आत्मा के लिए एक (Guide) गाइड की तरह है एक (Compass) कंपास की तरह है जो हमें बताते हैं कि हमें किन गुणों की ओर आगे बढ़ना है। यही इन रंगों का सबसे गहरा और सबसे सुंदर रहस्य है।

आइए यह जानने का प्रयास करते है कि 'नवकार मंत्र' का जाप सविधि कैसे किया जाए? जिससे जप का अपूर्व आनंद आ सके।

आइए इसे समझते हैं जैन दिवाकर पू. गुरुदेव श्री चौथमलजी महाराज साहब के दृष्टिकोण से : साभार : 'जैन दिवाकर स्मृति ग्रंथ' 'महासती श्री पुष्पावती जी' की कलम से। जैन दिवाकर जी महाराज एक ऊंचे साधक थे। 'नवकार महामंत्र' के प्रति आपकी गहरी निष्ठा थी। वे जीवन के कल्याण के लिए/विचारों की निर्मलता के लिए/हृदय की शुद्धि के लिए उसका जप आवश्यक मानते थे।'

आपका यह मानना था कि 'नवकार मंत्र' का जाप सविधि किया जाए तो उसके जप का अपूर्व आनंद आ सकता है।' 'जप एक सांस में करना चाहिए जप करते समय केवल एक पद को लेना चाहिए साथ ही उस पद के रंग का भी चिंतन करना चाहिए।'

जैसे पहला पद 'नमो अरिहंताणं' इस पद को लें। इस पद का वर्ण है 'श्वेत'। 'इस पद का स्थान मस्तिष्क है'। जिसे योग शास्त्र में 'सहस्त्रार चक्र' या क्राउन चक्र' कहा जाता है। उस समय श्वास की स्थिति अन्तर्कुम्भक होनी चाहिए।'

इसी तरह दूसरा पद 'नमो सिद्धाणं' पद को लेकर भी जाप किया जाए। 'सिद्धों का रंग लाल बताया गया है।' ध्यान करते समय लाल रंग चिंतन रूप में रहना चाहिए। 'जाप करते समय 'ललाट के मध्य भाग में' ध्यान केंद्रित करना चाहिए।' जिसे 'आज्ञा चक्र' कहते हैं'। सभी पद के ध्यान करते समय अन्तर्कुम्भक की स्थिति होनी चाहिए।

इसी तरह तीसरा पद 'नमो आयरियाणं' इस पद का रंग पीला है। इसका जप करते समय इसके पीले रंग की कल्पना करनी चाहिए इसका स्थान 'गला' है जिसे 'विशुद्धि चक्र' कहते हैं। हमारे आवेगों को यह स्थान नियंत्रित करता है।

इसी तरह चौथा पद 'नमो उवज्झायाणं' इस पद का रंग 'नीला हरा+मिश्रित (मोरपंखी रंग) है, इसका स्थान 'हृदयकमल' है। इसे 'मणिपुर चक्र' कहते हैं और इसी तरह पाँचवां पद 'नमो लोए सव्व साहुणं' इस पद का रंग (नीला+काला मिश्रित) 'कृष्ण रंग' है और इसका स्थान 'नाभि' है।

इस प्रकार एक-एक पद को लेकर जप करने से मन चंचल नहीं होता तथा 'ध्यान और जप का विशिष्ट आनंद आता है'।

संकलन : सुरेन्द्र मारू जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

'मैं' को हटाओ 'मैं' से मिलो

- साध्वीयुगल निधि-कृपाश्री जी म.सा.

भगवान महावीर ने श्री आचारांग सूत्र के माध्यम से 'मैं' का विस्मरण करने की अद्भुत कला बताई है तो 'मैं' को जानने की अनूठी प्रक्रिया भी दर्शाई है। अधुना लोग मात्र अपने व्यक्तित्व का विशिष्ट मूल्यांकन चाहते हैं। अतः न 'मैं' (अहं) का विस्मरण हो पाता है और न 'मैं' (आत्मा) की खोज हो पाती है।

'मैं' एक ऐसी वृत्ति है जिससे ऊर्जा तो अवश्य जागती है, किन्तु उसमें औरों को गिराकर स्वयं को खड़ा करने की नकारात्मक मानसिकता होती है। 'मैं आगे सब मेरे पीछे', 'मैं सबसे ऊपर सब मेरे नीचे', 'मेरे जैसा कोई नहीं' इत्यादि स्वरों की धुन सदैव बजती है। यहाँ तक कि वे जितनी भी धर्म आराधना करते हैं उनमें भी एक अवश्य छिपी होती है, 'मैं अभिव्यक्त होता रहूँ कहीं पर्दे के पीछे न चला जाऊँ।'

'मैं' की प्रकृति ऐसी है कि वह स्वयं को उत्तम पुरुष अर्थात् प्रथम पुरुष मानता है। जो खुद को श्रेष्ठ मानेगा वह घर और समाज में सदा अकेला पड़ जाएगा। यह अकेलापन तब और अधिक असह्य हो जाता है जब योग्यता होते हुए भी उसका मूल्यांकन नहीं होता। यूँ 'मैं' मानसिक पतन की ओर ले जाता है।

एक दिन स्वामी विवेकानंद से किसी ने पूछा, 'नरक क्या है?' समाधान देते हुए - स्वामी जी ने प्रश्नकर्ता से पूछा, 'कौन पूछ रहा है यह प्रश्न?' वह बोला, 'मैं पूछता हूँ।' स्वामी जी ने गंभीर स्वर में कहा, यह 'मैं' ही नरक है।

यह 'मैं' वहाँ निवास करता है जिसमें योग्यताएँ कम है या जिसे अपनी योग्यता का कम/अधिक सम्मान मिला है। ख्याल रहे, जो 'मैं' की वृद्धि करता है वह ज्ञान नहीं, अज्ञान है। जो ज्ञान 'मैं' की चिकित्सा करता है वह आत्मज्ञान बन जाता है। यहीं से जीवन में साधना का शुभारंभ होता है।

सूत्रकार कहते हैं, जहाँ अहंकार है वहाँ ममकार है। जहाँ ममकार है वहाँ कदाग्रह है अतः अहं का विसर्जन करो तो आत्मदर्शन प्रारंभ हो जाएगा। 'मैं कहता हूँ', 'मेरी बात सुनो', 'मेरी बात मानो', 'मुझे सम्मान दो', ऐसा कथन यदि बार बार मुख से निकले तो जानना अहंकार = 'मैं' का विस्तार हो रहा है और ममकार = 'मेरा' अपनी गहरी जड़ जमा रहा है।

अहंकार और ममकार के विदा होते ही हृदय में श्रद्धा की स्थापना होती है। जहाँ श्रद्धा है वहाँ 'स्व' की नहीं 'सर्वज्ञ' की बात को सर्वोपरि माना जाता है। यही कारण है, भगवान महावीर के प्रथम पट्टधर आर्य सुधर्मा स्वामी के श्रीमुख से प्रकट हुआ 'सूर्य में एवमक्खायं' अर्थात् भगवान महावीर ने इस तरह कहा है जो मैंने सुना है। (देखे आचा सूत्र 1/1/1) इस प्रकार सुधर्मा स्वामी ने सूत्र का प्रारंभ करते हुए 'स्व' या 'मैं' की बात नहीं 'सर्वज्ञ' की बात कही। चूँकि सर्वज्ञ की वाणी के अभाव में न आत्मदर्शन हो सकता है और न अहंकार का विसर्जन संभव है।

स्पष्ट है, 'मैंने सुना है' इस शब्द में आत्ममंगल का शुभ संकेत है। जिसने उपदेश सुना है वही उपदेश देने का सुपात्र/अधिकारी है। जिसने सुगुरु के चरणों में सच्चे शिष्यत्व को स्वीकार किया है वही 'मैंने सुना है' द्वारा अपने तथा दूसरे के बंद पट खोलता है। चूँकि गुरु के हितकारी वचन सुनने के लिए भी पात्रता चाहिए।

जो अपने 'मैं' को झुकाकर समर्पण से जोड़ देता है, प्रभु के चरणों में विलीन कर देता है उसके भीतर सरलता, करुणा और मैत्री का भाव जागता है। इसी कारण 'मैंने सुना है' यह पावन शब्द सुधर्मा स्वामी की विनम्रता, सत्यनिष्ठा एवं परमात्म-वचन के अनुसरण का द्योतक है।

सुनने से समझ खुलती है और समझ से आचरण स्वतः होने लगता है। दरअसल सुनना, समझना और करना ये तीन नहीं एक ही है। मान लो, आप जंगल के रास्ते से गुजर रहे हो और कोई कह दे कि सामने से सर्प आ रहा है तो अपना हित किसमें है यह समझकर आप मार्ग से फौरन हट जाते हैं।

ऐसे ही सत्य को सुना जाए तो उसे समझना और करना स्वतः हो जाता है। एक सप्ताह में हम कमोबेश सौ घंटे असत्य

श्रवण करते हैं। यह तो बहुत अच्छा है कि असत्य के शब्दों में ज्यादा शक्ति नहीं है वर्ना हमारा जीवन अंधकार में डूब जाता। निश्चित है, सत्य में गजब की शक्ति है। इसलिए मनुष्य कम से कम सप्ताह में एक घंटा भी सत्य श्रवण करे तो सौ घंटे के असत्य श्रवण के प्रभाव को तोड़ सकता है। धन्य है सुधर्मा स्वामी जिन्होंने भगवान महावीर की वाणी को 'मैंने सुना है' शब्द द्वारा जब स्वामी जैसे उत्कट जिज्ञासु शिष्य को प्रदान कर श्रुतज्ञान की प्रणाली का शुभारंभ किया। इससे एक बात पूर्णतः प्रकट है, गुरु-शिष्य और साधु श्रावक का पवित्र संबंध केवल संयम के उपकरण, वस्त्र, पात्र या आहार के आदान-प्रदान से नहीं टिकता बल्कि सम्यक् ज्ञान के पठन-पाठन एवं शास्त्र श्रवण से अमर बनता है। इसलिए सुशिष्य गुरु के श्रीचरणों में प्रार्थना करता है, आप आगमज्ञ हो मुझे भी जिनवाणी का शाश्वत आराधक बनाइए। गुरु मुख से शास्त्र श्रवण किया जाए तो शिष्य में शास्त्र-परिक्रमित वृद्धि प्रकट होती है और यह श्रवण प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा से जीवित रहती है।

ध्यान दें, शास्त्रों को सिर्फ कानों से मत सुनना। इसे आँखों से और हृदय से भी सुनना अनिवार्य है। कानों से सुनना दवा है आँख भी साथ जुड़े तो दुआ है और हृदय शामिल हो जाए तो अमृत है। जैसे एक माँ शिशु को लोरी सुनाकर महान बनने की प्रेरणा देती है। ऐसे ही एक गुरु भी अपने गुरु से जो सुना है उसे अपनाते हैं और मोक्ष मार्ग का मंगल पथिक बनकर अपने शिष्य को ज्ञान देते हैं।

स्मरण रहे, गुरु सिर्फ उपदेश ही नहीं देते आत्मा का उद्देश्य भी स्पष्ट करते हैं। मात्र आदेश नहीं देते आचरण का पाठ भी पढ़ाते हैं। वे शिष्य को ज्ञान देकर न केवल प्रभावित करते हैं, परंतु प्रकाशित भी करते हैं। इस प्रकार सुगुरु केवल स्वयं ही मोक्ष मार्ग पर नहीं चलते बल्कि शिष्य को भी चलाते हैं।

जरा सोचो! चार ज्ञान के धारी सुधर्मा स्वामी जैसे महान गणधर भी जब भगवान महावीर के श्रीमुख से वीतराग वाणी का पान करते थे तो क्या हमारे जैसे साधकों को जिनवाणी श्रवण एवं पठन हेतु सदा प्रयासरत नहीं रहना चाहिए? हकीकत यह है, हम सुनते अवश्य है किन्तु हमारी श्रवण रुचि में तीव्रता नहीं है। जब तक एक लगन न जागे तब तक सुनने का प्रयास सफल नहीं हो सकता।

एक उद्योगपति टैक्सी में बैठे हुए थे और टैक्सी ड्राइवर तेज गति से गाड़ी चला रहा था। अचानक उद्योगपति ने कहा, 'तनिक यहाँ रूकना, सामने वाली बिल्डिंग में मुझे दस मिनट का काम है।' ड्राइवर ने कहा, 'मैं नहीं रूक पाऊँगा क्योंकि दस बजे मुझे स्वामी सुखानंद की प्रवचन सभा में कथा सुनने जाना है।'

यह सुन उद्योगपति को बड़ी हैरानी हुई। तत्क्षण उन्होंने सौ का नोट ड्राइवर को पकड़ाते हुए बात मानने को कहा। नोट के प्रलोभन ने ड्राइवर की प्रवचन सुनने की तीव्रता को दबा दिया। तत्काल ड्राइवर ने गाड़ी रोकते हुए कहा, 'सर। मुझे प्रवचन सुनने की जल्दी नहीं है। ऐसे तो अनेक स्वामी आये और गये मैं फिर कभी सुन लूँगा।'

स्पष्ट है, धर्म श्रवण की तीव्रता ऐसे ही छोटे-बड़े प्रलोभनों में मंद पड़ जाती है। कहा भी है, प्रलोभन स्वर्ण की श्रृंखला के समान है जो आत्म-विकास में प्रबल बाधक है। ख्याल रहे, मन का टायर कभी भी पंक्चर हो सकता है। अतः अनेक बार सत्य सुनने की भावना जागती अवश्य है किन्तु सुनने का अवसर नहीं आ पाता।

संक्षेप में, जो सत्य सुनता है वह सौभाग्यवान है। 'मैंने सुना है' ऐसा कहकर जो सुनाता है वह धन्यभागी है। किन्तु याद रहें, 'सुनना' चायनीज विस्पर/फुसफुसाना जैसा मनघड़ंत परिणाम लाने वाला न हो इस बात की सावधानी रखना।

आज से 'मैं कहता हूँ' के स्थान पर 'मैंने सुना है' या 'मैंने पढ़ा है' इस शब्द का प्रयोग करेंगे तो एक दिन 'मैं' हटेगा और 'मैं' से मिलन होगा। ❖❖

पिरोलो जीवन की सूई में
जिनाज्ञा का धागा
'मैं' (आत्मा) की ऊर्जा प्रकटाने हेतु
'मैं' (अहं) को प्रतिदिन गुड बॉय करो।
1440 मिनटों में कम से कम 48 मिनट सम्यक् श्रवण में डोनेट/दान करने हेतु
जाग सके तो जाग

नववर्ष

- **विजय जैन**-राष्ट्रीय चेयरमैन, जैन कॉन्फ्रेंस

प्रातःकाल की पहली किरण जब क्षितिज पर उतरती है, तो लगता है जैसे आकाश ने रात भर की थकान उतारकर एक नई कथा लिखने का संकल्प लिया है। नववर्ष का आरंभ भी कुछ ऐसा ही है। यह एक ऐसी घड़ी है जो समय को नए अर्थ देती है, मनुष्यों को नए सपनों से भर देती है और संसार की पुरानी साँसों में एक ताजगी घोल देती है। नववर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं है, यह मनुष्य के भीतर की उस अनश्वर आकांक्षा का प्रतीक है जो हर पतन के बाद उठना जानती है, हर अंधकार में प्रकाश की तलाश करना जानती है और हर अंत में एक आरंभ खोज लेती है।

समय एक बहती नदी है। उस नदी का कोई पल स्थिर नहीं रहता। बीते हुए वर्ष इस नदी के तट पर पड़े पदचिह्न हैं जिन्हें जल की अगली धारा मिटा देती है, पर मन उन्हें स्मृतियों में सँजोकर रखता है। नववर्ष का आगमन उन स्मृतियों से संवाद की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह मन को पूछता है कि जो गुजरा, उसमें क्या खो गया, क्या बचा रहा और क्या नया बोया गया जिसके अंकुर आने वाले दिनों में फूटेंगे। मनुष्य चाहे जितना भी आधुनिक क्यों न हो जाए, चाहे उसकी साधनाएँ जितनी भी बदल जाएँ, नववर्ष में वह वही पुरातन मनुष्य बन जाता है जिसकी आशाएँ नई सुबहों की प्रतीक्षा में झूलती रहती हैं।

नववर्ष की रात में जब घड़ी की सुईयाँ बारह के निकट बढ़ती हैं, तो मन में एक अव्यक्त-सी कंपकंपी जागती है। वह क्षण इतना सूक्ष्म होता है कि न उसे पूरी तरह पकड़ा जा सकता है, न उसे पूरी तरह भुलाया जा सकता है। यह केवल एक पल नहीं, दो कालखंडों के बीच फैला हुआ एक पुल है। एक ओर बीते वर्ष की थकी हुई साँसें, दूसरी ओर आने वाले वर्ष की संभावनाओं से भरी श्वासें। इस पुल पर खड़ा मनुष्य दोनों दिशाओं की ओर देखता है। पीछे की ओर झाँकता है तो उसे अपने अपूर्ण सपने, अपनी सफलताएँ, अपनी हानियाँ और अपने छोटे-बड़े संघर्ष दिखाई देते हैं। आगे देखता है तो उसे धुँधली उम्मीदों का एक विस्तृत आकाश दिखता है, जिसमें अनगिनत सितारें झिलमिलाते हैं। प्रत्येक सितारा एक संभावना है, एक अवसर है, एक नए कर्म का संकेत है।

नववर्ष का सौंदर्य इसी द्वैत में छिपा है। यह मनुष्य को समय के प्रवाह का बोध कराता है, पर साथ ही उसे यह भी एहसास दिलाता है कि हर बीतने वाली चीज के पीछे एक आने वाली चीज खड़ी है। यह एहसास जीवन को मधुरता देता है। यदि समय स्थिर होता, यदि परिवर्तन न होता, तो मनुष्य की आकांक्षाएँ भी जड़ हो जातीं। पर समय चलता है, इसलिए मनुष्य सपने देखता है। समय बदलता है, इसलिए मनुष्य बदलने का साहस जुटाता है।

नववर्ष की सुबह जब लोग घरों की छतों पर खड़े होकर सूर्य का स्वागत करते हैं, तो उस क्षण में एक अद्भुत समष्टि-भावना जागती है। ऐसा लगता है कि विश्व के हर कोने में मनुष्य एक ही संकल्प के साथ जाग रहा है। कहीं पर्वतीय गाँवों में बर्फ पर उगता सूर्य लोगों की हथेलियों को गरमाहट देता है, तो कहीं समुद्री तटों पर उसकी सुनहरी किरणें जल को चमका देती हैं। कहीं गाँवों की पगडंडियों पर बच्चे नए साल की किलकारियाँ बिखेरते हैं, तो कहीं नगरों की ऊँची इमारतों में लोग अपनी खिड़कियों से नए सपनों को आकार देते हैं। यह विविधता ही नववर्ष का सौंदर्य है। दुनिया बदलती है, पर मनुष्यों की आकांक्षाएँ एक सूत्र में बँधी रहती हैं।

पर नववर्ष केवल उल्लास का पर्व नहीं है। यह आत्ममंथन का उत्सव भी है। यह हर मनुष्य को अपनी कमियों से, अपनी भूलों से, अपने अव्यवस्थित समय से सामना कराता है। लोग कई बार सोचते हैं कि समय उन्हें धोखा दे गया, पर सच यह है कि समय कभी धोखा नहीं देता। समय तो केवल बहता है। मनुष्य ही है जो कभी उसके साथ बहना भूल जाता है, कभी उसके विपरीत तैरने की जिद कर बैठता है। नववर्ष का आगमन यह याद दिलाता है कि जीवन की धारा के साथ संतुलन बनाना आवश्यक है। पुराने वर्ष में जो अधूरे काम छूट गए, उनका अपराधबोध लिए बिना आगे बढ़ना ही जीवन की सच्ची कला है।

नववर्ष की प्रक्रिया में एक और गहरा तत्व छिपा है और वह है स्मृति। स्मृतियाँ जीवन की नींव हैं। बीते वर्ष ने जो क्षण दिए, चाहे वे दुख के हों या सुख के, वे सभी मनुष्य को कुछ

न कुछ सिखाते हैं। दुख मनुष्य को मजबूत बनाते हैं और सुख उसे नम्र बनाते हैं। दोनों ही अनुभव आवश्यक हैं। इसलिए नववर्ष का स्वागत करते हुए उन स्मृतियों के प्रति कृतज्ञ होना एक सुंदर मानवीय भाव है। जो बीत गया उसे सम्मान देना चाहिए, क्योंकि वही बीता समय भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है।

नववर्ष को लोग अक्सर संकल्पों से जोड़ते हैं। संकल्प जीवन में दिशा देते हैं, पर संकल्प तभी सार्थक होते हैं जब वे यथार्थ की मिट्टी में बोए जाएँ। मनुष्य कई बार बड़े लक्ष्य निर्धारित कर लेता है, पर उन लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए छोटी-छोटी आदतें विकसित करना भूल जाता है। नववर्ष का वास्तविक अर्थ यही है कि मनुष्य अपने भीतर ऐसी सूक्ष्म आदतें पैदा करे जो उसे बेहतर बनाएँ। यह बेहतर होना किसी प्रतिस्पर्धा का हिस्सा नहीं, बल्कि आत्म-विकास का मार्ग है। नववर्ष के संकल्पों में यदि मनुष्य यह सोच ले कि उसे दूसरों से नहीं, स्वयं से बेहतर बनना है, तो वह वर्ष उसके लिए सफल हो जाएगा।

नववर्ष केवल व्यक्तिगत भावनाओं का विषय नहीं, सामूहिक चेतना का भी उत्सव है। समाज इसी क्रमिक परिवर्तन से आगे बढ़ता है। प्रत्येक व्यक्ति जब अपने भीतर सुधार लाता है, तो यह सुधार धीरे-धीरे समाज के ताने-बाने में उतरने लगता है। इस प्रकार नववर्ष मानव समाज में नई ऊर्जा भरने का अवसर है। यह एक ऐसा समय है जब लोग अपने मतभेद भूलकर एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। शुभकामनाएँ केवल शब्द नहीं, यह उस भाव का प्रतीक हैं जिसमें मनुष्य दूसरों के लिए कल्याण की कामना करता है। यही भाव समाज को जोड़ता है।

नववर्ष का एक गहरा आध्यात्मिक पक्ष भी है। समय अनश्वर है, पर मनुष्य नश्वर। यह ज्ञान ही उसे विवेक देता है। नववर्ष के आगमन पर मनुष्य अनायास ही ईश्वर, प्रकृति, ब्रह्मांड या किसी उच्चतर शक्ति के प्रति कृतज्ञ होता है। यह कृतज्ञता जीवन की थकान को कम करती है। जो व्यक्ति कृतज्ञता समझता है, वह जीवन के हर मोड़ पर सहज बना रहता है। नववर्ष का उद्देश्य यही है कि मनुष्य अपने भीतर उस सहजता को विकसित करे।

समय के इस पुनरारंभ में प्रकृति भी अपना योगदान देती है। ऋतुएँ बदलती हैं, हवाओं में नया स्पंदन आता है, वृक्ष अपनी शाखाओं में नए पत्ते सजोने की तैयारी करते हैं। प्रकृति का यह नव-जीवन मनुष्य को भी प्रेरित करता है कि वह अपने भीतर नई चेतना जगाए। मनुष्य और प्रकृति के बीच यह सामंजस्य अनादि काल से बना हुआ है। नववर्ष इसी सामंजस्य की पुनर्पुष्टि है।

नववर्ष का उत्सव विविध संस्कृतियों में अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है, पर उसका मूल भाव समान रहता है। कोई इसे दीपों से सजाता है, कोई गीतों से, कोई नृत्य से, कोई प्रार्थना से। यह विविधता मानव सभ्यता की संपन्नता का प्रमाण है। मानव समाज ने हजारों वर्षों के इतिहास में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं, पर नववर्ष का स्वागत वह सदैव आशा के साथ करता आया है। यह आशा ही मनुष्य को टिकाए रखती है।

नववर्ष का सच्चा अर्थ किसी उत्सव, किसी मिठाई, किसी आतिशबाजी में नहीं, बल्कि उस मौन क्षण में छिपा है जब मनुष्य अपने भीतर झाँककर देखता है कि वह कहाँ खड़ा है और आगे कहाँ जाना चाहता है। यह आत्म-परिचय का क्षण है। जो व्यक्ति इस क्षण को समझ लेता है, वह नववर्ष को केवल तारीख का नहीं, जीवन के विकास का पर्व मानता है।

नए वर्ष की पुस्तिका में लिखे जाने वाले पहले शब्द मनुष्य के लिए पवित्र होते हैं। यह वही आशा है जो उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। चाहे रास्ता कितना भी कठिन क्यों न हो, नववर्ष उसे यह विश्वास दिलाता है कि जीवन में हर मोड़ पर पुनः आरंभ का अवसर हमेशा मिलता है। यही अवसर मानव जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है।

अंततः नववर्ष का यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन एक यात्रा है। इस यात्रा में मंजिलें आती-जाती रहती हैं, पर यात्रा का सौंदर्य उसके अनुभवों में छिपा होता है। हर वर्ष इस यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ता है। कोई अध्याय सुखद होता है, कोई मार्मिक, कोई चुनौतीपूर्ण, पर हर अध्याय महत्वपूर्ण होता है क्योंकि वह हमारी चेतना को आकार देता है। नववर्ष का स्वागत करते हुए यही भाव मन में रखना चाहिए कि हम समय की इस यात्रा में बेहतर यात्री बनें। अपने भीतर प्रकाश जगाएँ, दूसरों के जीवन में भी थोड़ा प्रकाश दें। यही नव वर्ष की सार्थकता है। यही उसकी महिमा है। ❖❖

नववर्ष - नई पहल

- **विनय जैन**-राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

जब रात्रि का अंतिम पहर अपनी थकी चादर समेट रहा होता है, तभी कहीं क्षितिज के उस पार, एक शांत लहर-सी रोशनी जन्म लेती है। यह प्रकाश केवल आकाश में नहीं फैलता, यह मनुष्य के भीतर भी उतरता है। नववर्ष की यही पहली किरण है, जो बाहरी संसार के साथ-साथ आंतरिक संसार को भी स्पर्श करती है। यह केवल समय का परिवर्तन नहीं, संवेदना का जागरण है। यह जीवन में नव-चेतना का उदय है, जो हर जीव को स्मरण दिलाता है कि अनंत काल के प्रवाह में एक और क्षण, एक और अवसर, एक और जागरण प्राप्त हुआ है।

जैन दर्शन कहता है कि समय अनादि और अनंत है। उसमें किसी प्रकार का रेखीय प्रारंभ या अंत नहीं। पर मनुष्य के अनुभव की सरलता के लिए, समय को खंडों में बाँटा गया है। नववर्ष का आरंभ मन को यह अवसर देता है कि वह अपनी साधना को नए उत्साह से पुनः आरंभ करे। यह वह क्षण है, जो क्षण मात्र होते हुए भी, अनंत संभावनाओं का द्वार खोल देता है।

नववर्ष का दर्शन : जैन आगमों में समय को चक्राकार माना गया है। उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी रूप में समय निरंतर चल रहा है। समय की यही अनवरत गति जीव को कर्मबंध से मुक्त होने की प्रेरणा देती है। नववर्ष उसी समयचक्र का एक सूक्ष्म, पर महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह वह पल है, जब जीव अपने बीते हुए कर्मों के प्रति सजग होकर नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ सकता है।

कैलेंडर बदलना केवल बाहरी घटना है, पर मन बदलना आंतरिक साधना है। नववर्ष बाहरी परिवर्तन की नहीं, आंतरिक जिजीविषा की पुकार है। हर मनुष्य इस पुकार को सुन सकता है, यदि वह अपने भीतर उतरकर अपने अंतरतम को स्पर्श कर सके। यही वह क्षण है जब जीव अपने भीतर प्रश्न करता है, 'मैं क्या था, क्या हूँ और क्या बनना चाहता हूँ?' यह आत्मदर्शन नववर्ष की वास्तविक संपदा है।

नववर्ष और जैन साधना : जैन संस्कृति में वर्ष केवल समय-मापन का उपकरण नहीं। यह साधना का चक्र है। हर नया वर्ष निम्न तीन मूल बिंदुओं पर पुनर्जागरण का अवसर देता है:-

क्षमा : क्षमा जीवन का सबसे पवित्र अलंकार है। जैन साधना सिखाती है कि क्रोध, ईर्ष्या, अभिमान, द्वेष जैसे मानसिक विकार आत्मा की ज्योति को धूमिल कर देते हैं। नववर्ष वह क्षण है, जब मनुष्य अपने भीतर छिपी छोटी-बड़ी कटु स्मृतियों को छोड़कर आत्मा को हल्का कर सकता है।

अनेक लोग नववर्ष पर संकल्प तो लेते हैं, पर स्मृति के बोझ उतारना भूल जाते हैं। क्षमा वही चाबी है जो आत्मा के द्वार खोलती है।

संयम : संयम, जैन दर्शन का मूल स्तंभ है। यह केवल भोजन, वाणी या व्यवहार का संयम नहीं, बल्कि विचारों का भी संयम है। नववर्ष यह संदेश देता है कि जीवन तब सुंदर होता है, जब मनुष्य अपने भीतर की उथल-पुथल को शांत करना सीख लेता है। संयम वह दीपक है जो अंधकार में भी मार्ग दिखाता है।

आत्मविकास : जैन साधना मानती है कि हर जीव में अनंत क्षमता है। नववर्ष इस क्षमता को जगाने का अवसर है। यह समय है आत्म अनुशासन, ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय और सेवा की राह पर दृढ़ता से आगे बढ़ने का। जो व्यक्ति अपने भीतर की शक्तियों को पहचानता है, वह नए वर्ष को केवल वर्षों की गिनती नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति का पर्व बना लेता है।

प्रकृति का नवजीवन : नए वर्ष की सुबह केवल मनुष्य जगता नहीं। प्रकृति भी अपने नये स्वरूप की तैयारी करती है। पत्तों पर ओस की बूँदें मोतियों की तरह चमकती हैं। हवा में एक अनकही ताजगी होती है। पक्षियों के कलरव में एक नई लय सुनाई देती है। प्रकृति मानो कह रही होती है, "जीव मात्र, उठो। नया समय तुम्हारा इंतजार कर रहा है।" जैन परंपरा सिखाती है कि जीव और प्रकृति का संबंध अटूट है। जिसे हम नववर्ष कहते हैं, वह केवल मानव समाज का उत्सव

नहीं, बल्कि प्रकृति की अथाह ऊर्जा का विस्तार है। प्रकृति लगातार नए रूप धारण करती है। मनुष्य उसी से सीखता है कि परिवर्तन जीवन का आधार है।

नववर्ष और अहिंसा की पुनर्पुष्टि : जैन परंपरा में अहिंसा केवल व्यवहार नहीं, दर्शन है। नववर्ष का आगमन इस बात का अवसर है कि हम अपनी हिंसा, चाहे वह वाणी की हो, विचारों की हो या कर्म की, पहचाने और उन्हें छोड़ने का संकल्प लें। आज विश्व में जितने संघर्ष हैं, उनमें सबसे बड़ा योगदान मन की हिंसा का है। नववर्ष वह अवसर है जब हम अपने भीतर यह प्रश्न जगा सकते हैं। क्या मेरा अस्तित्व दूसरों के लिए सुख का कारण है या दुख का? यह प्रश्न किसी व्यक्ति को नहीं, स्वयं को बदलने की शुरुआत करता है। जैन दर्शन कहता है कि संसार बदलने का मार्ग व्यक्ति को बदलने से होकर जाता है। इसलिए नए वर्ष में अहिंसा को जीवन का आधार बनाना सबसे बड़ा संकल्प हो सकता है।

स्मृतियां और नव वर्ष : हर वर्ष जीवन हमें अनगिनत अनुभव देता है। कुछ अनुभव प्रसन्नता देते हैं, कुछ पीड़ा, कुछ आशंकाएँ, कुछ उम्मीदें। मनुष्य अक्सर इन अनुभवों को ढ़ोता रहता है और धीरे-धीरे वे बोझ बन जाते हैं।

नववर्ष उन बोझों को पहचानने का समय है। आत्ममंथन केवल दुःख याद करने का नाम नहीं। यह अपनी यात्रा के हर पड़ाव को समझने का नाम है। जो व्यक्ति अपने अनुभवों को श्रद्धा से स्वीकार करता है, वह नववर्ष की नई सुबह का स्वागत पूरी सजगता से कर पाता है। स्मृतियों का सम्मान आवश्यक है, लेकिन उनसे बँध जाना उचित नहीं। नववर्ष स्मृतियों को छोड़कर नहीं, उन्हें नए अर्थ देकर आगे बढ़ने का अवसर है।

नव संकल्प और जैन अनुशासन : संकल्प लेना सरल है। उन्हें निभाना कठिन। जैन धर्म संकल्प की नहीं, स्व-संकल्प की बात करता है। यह भीतर से उठने वाली प्रेरणा है, बाहरी दिखावे की नहीं। जैन अनुशासन हमें यह बताता है कि छोटे संकल्प बड़े परिणाम देते हैं, निरंतरता तेज गति से अधिक महत्वपूर्ण है, संयमित जीवन में कठिनाइयाँ कम होती हैं, नियमित स्वाध्याय मन को स्थिर रखता है, ध्यान व्यक्ति को कर्मबंध से मुक्त करने की दिशा में ले जाता है। नववर्ष में यदि व्यक्ति प्रतिदिन दस मिनट भी आत्मदर्शन का अभ्यास कर ले, तो उसका संकल्प स्थिर हो जाता है।

समाज और नव वर्ष : जैन समाज ने सदियों से यह संदेश दिया है कि समाज सुधार व्यक्ति-परिवर्तन से शुरू होता है। नव वर्ष एक ऐसा अवसर है जब लोग एक-दूसरे को शुभकामना देते हैं। शुभकामना केवल शब्द नहीं, उस भावना का प्रतीक है जिसमें हम दूसरे की आत्मा के कल्याण की प्रार्थना करते हैं।

सामूहिक चेतना तभी निर्मल होती है जब व्यक्ति की चेतना निर्मल हो। जैन समाज इस दिशा में अनूठी भूमिका निभा सकता है। नव वर्ष के अवसर पर समाज निम्न कार्यों में सहभागिता कर सकता है:-

पर्यावरण संरक्षण, जीव दया और पशु-सेवा, अध्ययन, प्रवचन और स्वाध्याय का आयोजन, संयम जीवन की प्रेरणा, युवाओं को जैन संस्कृति से जोड़ना, नशा, हिंसा, कटुता और आधुनिक भटकावों से बचाव का मार्गदर्शन, नववर्ष का उत्सव तभी सार्थक है जब वह केवल हर्ष का नहीं, हित का भी हो।

आध्यात्मिक दृष्टि से नव वर्ष : जैन दर्शन का मूल सिद्धांत है अनित्य। जो आज है वह कल बदलेगा ही। जो बदलेगा नहीं, वह आत्मा है। इसीलिए नववर्ष मनाते समय यह समझना आवश्यक है कि परिवर्तन बाहरी है, पर स्थिरता भीतर है। परिवर्तन को स्वीकार करना ही नववर्ष का वास्तविक ज्ञान है। जो व्यक्ति इस सत्य को समझ लेता है, वह दुःख से दूर रहता है। क्योंकि दुःख का मूल कारण परिवर्तन को न स्वीकारना है।

नववर्ष आत्मा की चेतना को जगाने का अवसर है। जीव को उसके वास्तविक स्वरूप की याद दिलाने का अवसर है। एक ऐसा अवसर जो कहता है: - तुम अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंत शक्ति के स्वामी हो। नववर्ष जीव को उसके इस दिव्य पक्ष की याद दिलाता है।

ध्यान, मौन और नववर्ष : नववर्ष के आरंभ में कुछ क्षण मौन में बैठना अद्भुत अनुभव है। मौन कोई कमजोरी नहीं। मौन आत्मा की भाषा है। ध्यान उसके अर्थ समझने की कला। जैसे ही व्यक्ति आँखें बंद करता है, भीतर एक शांति उतरती है। विचार धीरे-धीरे शांत होते हैं।

धीरे-धीरे मन स्वयं को पहचानने लगता है। ध्यान जैन साधना का हृदय है। नववर्ष का स्वागत ध्यान के माध्यम से करना एक प्रकार से आत्मा के द्वार पर दीप जलाने जैसा है। यह दीपक हमें मार्ग दिखाता है कि आने वाला वर्ष कैसे अधिक सार्थक बनाया जाए।

सेवा और नववर्ष : जैन परंपरा में सेवा का स्थान सर्वोच्च है। सेवा आत्मा को परिष्कृत करती है। यह अहंकार को गलाती है। नववर्ष समाज और जीवों के प्रति नई सेवा की भावना जगाने का अवसर है। सच्ची सेवा वही जो बिना नाम, बिना प्रसिद्धि, बिना दिखावे की हो। जो व्यक्ति दूसरों के जीवन को सरल बनाता है, वह जीवन के कर्मबंध को हल्का कर लेता है। नववर्ष में सेवा के स्वरूप को इस प्रकार विस्तारित किया जा सकता है:-

गौशालाओं में योगदान, गरीब विद्यार्थियों को शिक्षा-सहायता, बीमार और वृद्ध जनों की सहायता, जल, वायु और पर्यावरण की रक्षा, पशु-पक्षियों के लिए जल-पात्र और दान, सामूहिक रसोई, दवाइयों और अन्य कल्याणकारी कार्य।

जीवन एक यात्रा, नववर्ष एक पड़ाव : जीवन का प्रत्येक वर्ष हमें कुछ देता है और कुछ ले जाता है। कुछ स्मृतियाँ चिरस्थायी हो जाती हैं। कुछ क्षण पलक झपकते ही बीत जाते हैं। पर जीवन की यात्रा उसी प्रवाह में सुंदर बनती है।

नववर्ष इस यात्रा का नया अध्याय है। एक ऐसा अध्याय जिसे हम अपनी इच्छानुसार लिख सकते हैं। जैन दर्शन हमें यह शक्ति देता है कि हम अपनी यात्रा को सदाचार, संयम और अहिंसा से सुसज्जित करें। नए वर्ष में यदि व्यक्ति यह निर्णय ले कि वह अपने भीतर की अशुद्धियों को पहचानकर उन्हें कम करेगा, तो उसकी जन्म-जन्मान्तर की साधना सार्थक हो सकती है।

आत्मा के उत्थान की आंतरिक आवाज : जब नए वर्ष की पहली प्रातः आती है, तो ऐसा लगता है कि भीतर एक मौन घंटी बजी है। यह घंटी किसी मंदिर की नहीं, आत्मा की है।

यह हमें पुकारती है कि उठो, जागो, आगे बढ़ो। प्रत्येक नववर्ष आत्मा का वह निमंत्रण है जो कहता है अपने भीतर छिपे प्रकाश को पहचानो। अपने मन के अंधकार को दूर करो। अपने जीवन को संयम, सेवा और साधना से प्रकाशित करो। यही नववर्ष का शाश्वत संदेश है। ❖❖

अभिमानी के मन में प्रदर्शन की भावना

अभिमानियों का मन इतना संकीर्ण एवं तुच्छ होता है कि वह दूसरों की तरक्की देखकर जलने लगता है। वह दूसरों के घमण्ड को घृणा की दृष्टि से देखता है, दूसरों की प्रतिष्ठा उसे खटकती रहती है, दूसरे का अत्यधिक सम्मान उसे काँटे की तरह चुभता है। वह दूसरों को नीचे गिराकर या दुनिया की नजरों में दूसरों को नीचा दिखाकर उसकी नींव पर अपनी प्रतिष्ठा का महल खड़ा करने का प्रयत्न करता है। अहंकारी व्यक्ति ही अधिक बोलते हैं, वे ही अपना पाण्डित्य प्रदर्शित करने के लिए दूसरों से वाद-विवाद करने के लिए कमर कसे रहते हैं। ऐसे अभिमानी एवं अहंकारी लोगों को प्रदर्शन की बीमारी लगी रहती है। वे जब देखो, तब अपनी अहंकारी भूख मिटाने के लिए कोई न कोई आडम्बर करते रहते हैं। दिखावे से उनको इतना अधिक प्रेम होता है कि अगर उनकी दृष्टि में यह आ जाए कि दूसरा उनसे अधिक बाजी मार रहा है तो वे अपना सर्वस्व खर्च करके, दूसरों से उधार लेकर भी अपना प्रदर्शन करके अपना बड़प्पन दिखाते रहते हैं। अपनी हैसियत नहीं होने पर अभिमानी दुनिया की जबान से अधिक शक्तिशाली, धनवान, या बुद्धिमान अथवा चारित्रवान कहलाने के लिए या दुनिया की नजरों में श्रेष्ठ जँचने के लिए अपना सर्वस्व झोक देता है।

एक गरीब स्त्री एक दिन किसी सेठ के यहाँ गई। सेठानी ने चूड़ा पहन रखा था। वह हाथीदाँत का बना हुआ और बहुत ही बढ़िया था। पड़ौसिनें उसे देखने आ रही थीं और सेठानी को बधाइयाँ देने वालों का तांता लग रहा था। गरीब महिला ने जब यह रंग ढंग देखा तो मन में सोचा 'मैं भी क्यों न हाथीदांत का चूड़ा पहनूँ और पड़ोसियों से बधाइयाँ प्राप्त करूँ।' बस क्या था, घर आते ही उसने अपने पति से कहा- 'मुझे हाथी दांत का चूड़ा ला दो। 'पति ने कहा- 'देखती नहीं, घर की परिस्थिति कैसी है? यहां तो पेट भी कठिनाई से भरता है और तुम्हें हाथीदांत का चूड़ा चाहिए' ❖❖

नववर्ष और युवा चेतना

- **विपुल जैन**-राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

नववर्ष मानव जीवन की निरंतर यात्रा का वह सोपान है, जहाँ समय अपनी पुरातन लय को पीछे छोड़कर नये स्वरूप में प्रवाहित होता है। मनुष्य का जीवन स्वभावतः परिवर्तनशील है, परन्तु नववर्ष का आगमन इस परिवर्तनशीलता को आत्मस्वीकृति का रूप प्रदान करता है। जो बीत गया, वह इतिहास बन जाता है और जो आने वाला है, वह संभावनाओं का अवसर है। प्रत्येक नववर्ष जीवन के मध्य खड़ा होकर हमें स्मरण कराता है कि समय किसी के लिये नहीं ठहरता, किन्तु मनुष्य के लिये अनन्त अवसर सदैव उपस्थित रहते हैं।

इस लेख का उद्देश्य मात्र नववर्ष का स्वागत करना नहीं है, बल्कि युवा शक्ति को यह बोध कराना है कि उनके भीतर निहित ऊर्जा समाज, राष्ट्र और समग्र मानवता के लिए किस प्रकार एक दीर्घकालिक योगदान का आधार बन सकती है। युवा मन में नये वर्ष के प्रति जो उत्साह उमड़ता है, वही उत्साह यदि संकल्प में परिणत हो जाए, तो वह महान उपलब्धियों का प्रारम्भ बन सकता है।

मानव समाज में समय का विभाजन पर्वों और वर्षों के माध्यम से एक विशिष्ट संस्कार की भांति जीवन के हर आयाम में उपस्थित रहा है। नववर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं है, वह मन की दशा का परिवर्तन भी है। भारतीय संस्कृति में 'नव' शब्द सदैव नवीनता के पर्यायस्वरूप प्रतिष्ठित रहा है। नववर्ष का उत्सव हमें यह संदेश देता है कि जीवन रूढ़ि नहीं, सतत् विकास की साधना है।

युवा वर्ग के लिये यह महत्त्व इसलिए भी अधिक है कि इस कालखंड में मनुष्य की मानसिक और शारीरिक ऊर्जा अपने चरम पर होती है। इस ऊर्जा का सुव्यवस्थित प्रयोग ही विकास का आधार है। यदि युवा मन संकल्पित हो जाए, तो वह किसी भी समाज की दिशा और दशा को परिभाषित कर सकता है।

युवा और नववर्ष : समय का प्रवाह सभी के लिए समान है, परन्तु युवा ही वह वर्ग है, जो इस प्रवाह को सबसे अधिक गति और अर्थ प्रदान करता है। वृद्ध के लिए समय अनुभव का दर्पण है, तो बालक के लिए कल्पना का, परन्तु युवा के लिये समय अवसर का पर्याय है।

युवा मन में उमड़ती आकांक्षाएँ, संघर्ष की ज्वाला और नये क्षितिजों को छूने की लालसा, समय की ऊर्जा से होकर ही विस्तृत होती है। समय का यह चरण उनके जीवन निर्माण का आधार है। यदि इस काल में युवा अपने लक्ष्य और कर्तव्य के प्रति सजग हो जाए, तो एक सम्पूर्ण समाज के उत्थान का मार्ग प्रशस्त होता है।

युवा के पास न केवल ऊर्जस्विता है, बल्कि परिवर्तन को स्वीकार करने की क्षमता भी है। यही उन्हें अन्य पीढ़ियों से अलग करती है। नववर्ष के प्रथम क्षण जब युवा मन में आशा के फूल खिलते हैं, तब वह मनुष्य की इच्छाशक्ति का सर्वोत्तम स्वरूप बन जाता है।

नववर्ष और आत्मचिंतन : नववर्ष आत्मचिंतन का पर्व है। मनुष्य के भीतर झाँकने वाली दृष्टि तभी विकसित होती है जब वह अपने अतीत की सफलताओं और असफलताओं का शान्त मन से मूल्यांकन कर सके। यह प्रक्रिया विशेषतः युवाओं के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

युवा को चाहिए कि वह अपने पिछले वर्ष की उपलब्धियों का सूक्ष्म अवलोकन करे, अपने कार्यों की सीमाएँ पहचाने और भविष्य की दिशा के लिए उपयुक्त मार्ग का चयन करे। यह चिंतन केवल लक्ष्य निर्धारण नहीं है, बल्कि मन की स्थिरता और विवेक को विकसित करने का भी साधन है।

जिस युवा के भीतर आत्मचिंतन का संस्कार विकसित हो जाता है, वह भ्रम, आकर्षण और अस्थिरता के दलदल में कभी नहीं फँसता। वह जानता है कि उसका जीवन केवल उसकी इच्छाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि उसके परिश्रम, अनुशासन और मूल्यबोध का भी फल है।

स्वप्न और संकल्प : नववर्ष युवा मन में स्वप्न का संचार करता है, परन्तु स्वप्न मात्र कल्पनाएँ नहीं होने चाहिए। स्वप्न तब सार्थक होते हैं जब वे संकल्प के आधार पर खड़े हों।

संकल्प वह शक्ति है जो मनुष्य को लक्ष्य की ओर निरंतर प्रवाहित करती है। स्वप्न दिशा देते हैं और संकल्प गति। युवा

यदि केवल स्वप्न देखे और संकल्प न करे, तो उसकी यात्रा अधूरी रह जाती है। यदि केवल संकल्प करे और स्वप्न न देखे, तो उसकी यात्रा निरर्थक हो जाती है। इसलिए नववर्ष का प्रथम और प्रमुख उपहार यह है कि युवा अपने भीतर स्वप्न और संकल्प दोनों का संतुलन स्थापित करे।

शिक्षा, ज्ञान और नववर्ष : युवा के लिए ज्ञान वह दीपक है, जो जीवन के अंधकार को मिटाता है। नववर्ष इस दीपक में नये घटक जोड़ने का अवसर है। शिक्षा केवल कक्षाओं में बैठकर अर्जित नहीं होती। शिक्षा वह है जो हमें सोचने, समझने और करने की क्षमता देती है।

युवा को चाहिए कि वह नये कौशल सीखे, नये विचारों को स्वीकार करे और अपनी ज्ञान-सीमा का निरंतर विस्तार करे। विश्व का ज्ञान-परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। जो युवा इस परिवर्तन के साथ नहीं चलता, वह पीछे रह जाता है। नववर्ष का संदेश यही है कि युवा केवल डिग्री का संग्रह न करे, बल्कि ज्ञान का अर्जन करे।

राष्ट्रनिर्माण में युवा की भूमिका : युवा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होते हैं। उनकी विचारधारा, उनका उत्साह और उनकी कर्मठता राष्ट्र की प्रगति का आधार है। नववर्ष युवा को यह स्मरण कराता है कि उनका जीवन केवल व्यक्तिगत सुख तक सीमित नहीं होना चाहिए। उन्हें समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का बोध होना चाहिए। युवा यदि चरित्र में दृढ़ हों, विचारों में पवित्र हों, और कार्यों में ईमानदार हों, तो वे राष्ट्र के लिये अनमोल धरोहर बन सकते हैं।

तकनीक और नववर्ष : वर्तमान युग तकनीकी युग है। युवा के हाथ में अब केवल कलम नहीं, बल्कि ज्ञान की अनंत संभावनाएँ हैं। नववर्ष युवाओं को यह अवसर देता है कि वे तकनीक का सदुपयोग करें।

तकनीक केवल साधन है, लक्ष्य नहीं। इसका प्रयोग शिक्षा, समाज सेवा, नवाचार, और उद्यमिता के लिए होना चाहिए। युवा को यह समझना चाहिए कि तकनीक मनुष्य को सुविधा देती है, परन्तु विचार, विवेक और मूल्य वही हैं जो समाज को उन्नति की ओर ले जाते हैं।

अनुशासन : युवाओं में ऊर्जा प्रचुर होती है, परन्तु ऊर्जा का सही प्रयोग तभी होता है जब वह अनुशासन के साथ संयमित हो। नववर्ष का संकल्प केवल बड़े लक्ष्य लिखने का नहीं है, बल्कि दैनिक जीवन में अनुशासन को स्थायी रूप से अपनाने का भी है। अनुशासन ही वह साधन है जिसके माध्यम से किसी भी मुश्किल लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। इसलिए युवाओं को चाहिए कि वे ऊर्जा और अनुशासन का तालमेल बना कर आगे बढ़ कर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करें। अनुशासन वह शक्ति है जो मनुष्य को कठिन परिस्थिति में भी स्थिर रखती है।

प्रेरणा का स्रोत : प्रेरणा बाहरी वस्तु नहीं है, वह मन के भीतर छिपी होती है। प्रकृति का सौन्दर्य, साहित्य का अमर संसार और जीवन के अनुभव, इन तीनों से युवा असीम प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। साहित्य मन को संवेदनशील बनाता है। प्रकृति मन को शांत करती है और जीवन के अनुभव उसे प्रौढ़ता देते हैं। आत्मविश्वास मनुष्य का सबसे बड़ा धन है। यह धन धन-संपत्ति से कहीं अधिक मूल्यवान है। नववर्ष युवा को यह अवसर देता है कि वह अपने भीतर उपस्थित दुर्बलताओं को पहचाने और आत्मविश्वास के साथ उन्हें दूर करे।

नववर्ष का आह्वान - समग्र विकास : समग्र विकास का अर्थ केवल आर्थिक उन्नति नहीं है, बल्कि मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास भी है। युवा को चाहिए कि वह कुसंगति से दूर रहें, नशे और बुरी आदतों का त्याग करें, जीवन में उच्च्य आदर्शों का लक्ष्य बनाएँ उनकी प्राप्ति के लिए रणनीति बनायें, अपने उच्च्य लक्ष्यों को प्राप्त करके समाज के लिए आदर्श बनें। अपने शरीर का ध्यान रखे, मन को शांत रखे और विचारों को उच्च्य बनाए।

नववर्ष युवा को यह संदेश देता है कि जीवन कर्म का पथ है। समय हाथ से फिसलता है, परन्तु कर्म से जीवन ठहरता है। जो युवा अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ हो जाए, वह किसी भी ऊँचाई तक पहुँच सकता है। समाज को आज ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो दूरदर्शी हों, परिश्रमी हों, विवेकशील हों और मानवता के प्रति समर्पित हों।

❖❖

अपने बड़े-बुजुर्गों का हम सम्मान कर लें

- **संजीव जैन,** करनाल (हरियाणा)

धन्यवाद और कृतज्ञता के भावों में भरकर, अपने बड़े-बुजुर्गों का हम सम्मान कर लें।
श्रद्धा व समर्पण से होकर ओत-प्रोत,
माता-पिता की अपने सेवा-सुश्रूषा कर लें।।

❖❖

जन्म देकर इस धरा पर जो लाए हमें, रात-दिन एक करके जिन्होंने था पाला हमें।
उनकी इस लगन, प्रेम व समर्पण का,
हृदय की अनंत गहराइयों से हम बहुमान कर लें।।
धन्यवाद और कृतज्ञता के भावों में भरकर,
अपने बड़े-बुजुर्गों का हम सम्मान कर लें।।

❖❖❖❖

खुद गीले में सोकर सूखे बिस्तर पर हमें सुलाया, खाना-पीना व बोलना जिस माँ ने सिखाया।
पहली गुरु अपनी उस मातेश्वरी का,
कहीं भूलकर भी न हम अपमान कर लें।।
धन्यवाद और कृतज्ञता के भावों में भरकर,
अपने बड़े-बुजुर्गों का हम सम्मान कर लें।।

❖❖❖❖❖❖

उँगली पकड़कर जिसकी सीखा हमने चलना, चाहा जिसने हमारी हर इच्छा को पूरा करना।
आकाश से ऊँचे उस पितृदेव महान का,
भक्ति-भावों में डूबकर गुणगान कर लें।।
धन्यवाद और कृतज्ञता के भावों में भरकर,
अपने बड़े-बुजुर्गों का हम सम्मान कर लें।।

❖❖❖❖❖❖❖❖

अनगिनत कहानियाँ जिन्होंने हमको सुनाई, प्यार की अपने बेपनाह दौलत लुटाई।
दादा-दादी और नाना-नानी को पूजकर,
हासिल खुशियों का हम आसमान कर लें।।
धन्यवाद और कृतज्ञता के भावों में भरकर,
अपने बड़े-बुजुर्गों का हम सम्मान कर लें।।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

अपना जीवनाधार जिन्होंने हमें मान लिया है, अच्छे विचारों व संस्कारों का हमें ज्ञान दिया है।
'संजीव' भूलकर उन संस्कारों को हम कहीं,
जीवन मूल्यों का अपने ना अवमान कर लें।।
धन्यवाद और कृतज्ञता के भावों में भरकर,
अपने बड़े-बुजुर्गों का हम सम्मान कर लें।।

जीवन का परिष्कार करें

- **डॉ. एन.के. खीचा**-सीनियर फेलो, आई.सी.एस.एस.आर.

इच्छाऐं आकाश के समान अनन्त हैं। कामना अशान्ति कारक है। तृष्णा, लिप्सा भयावह है। कामना सब अनर्थों की जड़ है। कामनाओं का परित्याग करें। भोगवृत्ति को क्षीण करें। भोग प्रवृत्ति को मिटा डालें। ममत्व हटावें। मानव जीवन ही मूलधन है। ज्ञान का ऐश्वर्य बढ़ायें। अणुव्रती बनकर आगे बढ़ें। पंचमहाव्रती बनने का प्रयास करें। ऐसा आचरण करें जैसा स्वयं के लिए चाहते हैं। माया सहस्त्रों सत्य को नष्ट कर देती है। माया और मृषावाद से लोभ बढ़ता है। लोभ दुर्गण है। लोभ सभी गुणों को नष्ट कर देता है। लोभ प्रवृत्ति को सन्तोष से जीतें, विवेकवान् बनें। जीवन और धन पानी के बुलबुले के समान है, आसक्ति त्यागें। विश्व के प्रति समभाव रखें। समानता का भाव ही समभाव है, चरित्र है। अपनी वृत्तियों का परिष्कार करें। जीवन शैली में प्रमाद न करें। यतनाशील बनें, विवेकशील बनें, प्रज्ञा जगावें। सम्यक् आजीविका करें।

समता का अर्थ है-समानता का भाव। समभाव ही चरित्र है। वासना की आग से बचें। जीवन शैली के सूत्र हैं-सम्यक् दर्शन, अनेकान्त, अंहिसा, श्रम, इच्छा परिमाण, सम्यक् आजीविका। कर्म से किसी को कष्ट न दें। दुःख का मूल कारण है कषाय। परिग्रह तथा लोभ, दुःख के कारण हैं। लोभ पर अलोभ से विजय प्राप्त करें, कषाय कम करें। इन्द्रियों का संयम बरतें। मोह-मूर्च्छाभाव ही परिग्रह हैं। जो परिग्रह का अनुमोदन करता है, वह दुःखों से मुक्त नहीं हो सकता।

ममता परिग्रह है, समता धर्म है। समता से पराधीनता मिटती है। आवश्यक परिसीमन का सिद्धान्त पालनीय है। अपरिग्रह से कामना, इच्छा, तृष्णा तथा चाह को स्वनियंत्रित किया जा सकता है। परिग्रह से अतृप्त, लोभप्रवृत्ति से कपट और झूठ बढ़ता है। धन को दुःख, ममत्व और बंधन का कारण समझें। जिसने मोह, लोभ तथा तृष्णा का त्याग कर दिया वह अंकिचन है। द्वेष-भाव, राग-मोह से बचें। प्रतिक्रिया रहित जीवन, समभाव है। अति-संग्रह दोष का कारण है। अतः यतना से रहें। धन से त्राण नहीं है। 'अर्थ' अनर्थ का मूल है। ललचाई दृष्टि से पराई वस्तुओं को न देखें।

अधिकार भाव ही मूर्च्छा है, परिग्रह है। पापवृत्ति से अर्जित धन, घोर अनिष्ट की ओर ले जाता है। अतः लोभ त्यागें। जीवन में समभाव रखें। जीवन का समय रहते परिष्कार करें। जो बीत रहा है, वह केवल समय नहीं बल्कि जीवन है। जिंदगी को जंग न लगने दें। जैसा सोचेंगे, वैसा बनेगें। पहले अपने मन का रूपानान्तरण करें। अर्न्तमुखी बनें मनोबल को ऊँचा रखें। सोचें श्रेष्ठता (EÛcellence) कैसे मिले? विचार करें! साधना का स्पष्ट लक्ष्य क्या है? भावना परिवर्तन करें। दोषों को जानकर, विशुद्धि का लक्ष्य रखें। स्वयं के भीतर का वातावरण सुन्दर सरस बनाने के लिए अर्न्तमुखी (Introvert) बनें। अतः चेतना को जगायें। यांत्रिक मानव मन न बनें। जीवन जीने का नजरिया बदलें। गुण तन्त्र ही विकल्प है। ज्ञान ही मुक्ति है।

जीवन शुद्धि का मार्ग है-संयम। प्राणी संयम कायरता नहीं है। संयमवृत्ति से धन और सत्ता का विकीरण होता है। हमारे मनोभाव संयममय हो। संयम भारतीय संस्कृति की बुनियाद है। संयम से परस्परोपग्रहों जीवानाम् साकार होता है।

गृहस्थ जीवन में संसार की आपाधापी के बीच संयम इकलौता जीवन जीने का मार्ग है। संयम शुभक्रिया है। संयममय आचरण ही परम पुरुषार्थ है। संयममयी जीवन का पालन करने से कुछ मत चाहो, काम आ जाओ फलित होता है। क्योंकि अत्यधिक परिग्रह महाग्रंथि है, प्रमाद है, मूर्च्छा है। सफल जीवन जीने के लिए आवश्यक है कि यतनाचार, विवेक, होशपूर्वक कृत्य करें। 'वेरम मज्झम ण केणई अर्थात् मेरा किसी के साथ वैर या विरोध नहीं है। अतः संयममय जीवन आन्तरिक प्रकाश (Inner light) है। संयम Light House है। संयममय जीवन सामाजिक संतुलन (Social Equilibrium) है। संयम का सम्बन्ध हृदय से है। संयम जीवन जीने की कला है। संयम-जीवन की कमियाँ है। संयममय जीवन-जीवन का अहोभाव है। संयम से न्यूरोन्स (Neuron/Neurone) सक्रिय (Activate) हो जाते हैं। संयममय जीवन जीने से पद्म लेश्या (Padam Lesha) विकसित होती है, जो जीवन का परम लक्ष्य (Ultimate Objective) है। अतः संयममय जीवन का नवनीत है। संयम से व्यक्ति का रोम-रोम पुलकित हो जाता है। संयम जीवन की ऊर्जा है। संयम जीवन के रूपानान्तरण (Transformation) की दिशा में पहला कदम है। कुन कुन जीने से क्या लाभ है? अतः जीवन का परिष्कार करें।

❖❖

50वें स्वर्ण संयम दिवस पर विशेष...

हमारे महान आदर्श : आगमज्ञाता उपाध्याय प्रवर पू. श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा.

- **रीचा संदीप जैन**, राष्ट्रीय महिला महामंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस

भारतीय संस्कृति में सन्त जीवन को एक महान् आदर्श रूप में स्वीकार किया गया है। संयम और संस्कृति की धाराओं में प्रवाहमान सन्त जीवन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए वरदान होता है। सन्त तत्त्व ने अपनी अलौकिक, अप्रतिम (प्रतापपूर्ण) प्रतिभा और ऊर्जस्वल व्यक्तित्व के द्वारा जिस प्रशस्त पथ का निर्माण किया है। उसका सार्वकालिक महत्त्व है।

सन्त मानवता के साकार रूप हैं। संयम और संस्कृति के समुज्ज्वल प्रतीक हैं। भूले भटके राहियों के लिए प्रकाश-स्तंभ हैं। प्रेम और करुणा की सतत् प्रवाहित होने वाली मंदाकिनी हैं। वर्तमान अणुयुग की चीत्कार एवं हाहाकार के स्थान पर प्रेम और समभाव की साधना के अमर सन्देशवाहक हैं। सत्य, अहिंसा, क्षमा, शान्ति, संयम और सदाचार की नव्य-भव्य कमनीय भावनाओं का आदर्श मूर्तरूप संत होता है। ऐसे ही श्रेष्ठ सन्त रत्नों की श्रेणी में आगम ज्ञाता, आगम पुरुष, श्रमण संघीय उपाध्याय श्री जितेन्द्र मुनिजी म.सा. का नाम अग्रगण्य है।

श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर का जन्म देवभूमि हिमाचल प्रदेश में हुआ। हिमाचल प्रदेश अपनी मनोरम प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध-संस्कृति और आध्यात्मिक महत्त्व के लिए जाना जाता है। आपका जन्म ऊना जिले की तहसील अम्ब के अंतर्गत जोह गांव में प्रतिष्ठित राजपूत परिवार में हुआ। दिनांक 31 जनवरी सन् 1957 अर्थात् 18 माघ विक्रम संवत् 2013 अमावस्या के दिन आपने सरलमना श्रीमान् वकील सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमति व्यासा देवी के घर जन्म ग्रहण किया। श्रीमति व्यासादेवी जी की पावन कुक्षि पुत्री नसीबदेवी तथा पुत्र चतुरसिंह जी के पश्चात् आप जैसे पुण्यशाली शिशु को जन्म देकर धन्य हो गई। आप के बाद माता ब्यासा देवी जी ने पुष्पाजी, कमलेशजी, रामसिंहजी (तपस्वी श्री रमणमुनि जी म. सा.) तथा अश्विनी जी चार बच्चों को जन्म दिया।

आपके जन्म के पश्चात् घर में चहुँ ओर खुशियों का वातावरण था। आप सरीखे पुण्यशाली जीव को जन्म देकर माता व्यासा देवी को आभास हो रहा था जैसे उसने सारी पृथ्वी के सुख को प्राप्त कर लिया हो। आनन्द व आह्लाद के क्षणों में माता-पिता ने आपका नाम पृथ्वी सिंह रखा। उस समय उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी कि उनका भाग्यशाली पुत्र इस पृथ्वी पर श्रमण परंपरा में मुनि बनकर निर्भीक संयमी सिंह की भाँति विचरण करेगा।

पूज्य श्री जगदीशमुनि जी म.सा. ने आपकी दीक्षा के लिए तिथि सुनिश्चित की 7 दिसंबर 1975, रविवार का पावन दिन। आगम ज्ञाता, आगम पुरुष, हिमाचल केसरी उपाध्याय भगवन श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. का जीवन जिनशासन की अनन्य साधना, गहन अध्यात्म-निष्ठा और निरंतर अध्ययन-मनन का उज्ज्वल उदाहरण है। बचपन से ही उनमें धर्म, अध्ययन और स्वच्छ चरित्र के गहरे संस्कार रहे हैं, जो उन्हें स्वाभाविक रूप से साधु-पथ की ओर ले आए। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी वे सत्य, करुणा और संयम की साधना से जुड़े रहे और अंततः धर्म मार्ग की पुकार स्वीकार कर दीक्षा ग्रहण की। प्रारंभिक आयु से ही अध्ययन, आगम-वाचन और आत्मचिंतन की उनकी रुचि सभी को प्रभावित करती रही है।

दीक्षा के बाद से वे कठोर तप, शास्त्र-अध्ययन और आगम-प्रवचन को अपने जीवन का केन्द्र बनाए हुए हैं। जैन आगमों के प्रति उनकी श्रद्धा, असाधारण स्मरण-शक्ति और अध्ययन-पद्धति ने उन्हें साधु-समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिलाया है। आगम, तत्त्वज्ञान, प्राकृत, न्याय और सिद्धांतों पर उनका अधिकार आज भी साधु-संघ और समाज के लिए प्रेरणा है। वे निरंतर जिनवाणी का संदेश जन-जन तक पहुँचाने, साधुओं का मार्गदर्शन करने और श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के प्रति जागृत करने में तत्पर हैं।

उनकी प्रवचन-शैली सरल, भावनापूर्ण और अत्यंत प्रभावशाली है। जहाँ भी वे विहार करते हैं, वहाँ ज्ञान-प्रबोधन की अमिट छाप छोड़ जाते हैं। असंख्य परिवार उनके उपदेशों से संयम, करुणा और नैतिक जीवन की ओर प्रेरित हो रहे

हैं और अनेक युवा अध्यात्म-पथ की ओर अग्रसर हुए हैं।

मुनिश्री जी का सिद्धांत-ज्ञान अत्यंत व्यापक है-आगम, भाषा-शास्त्र, तर्क, इतिहास और व्याकरण तक। शास्त्रार्थ और तत्त्व-चर्चाओं में उनकी पकड़ अद्भुत है और आज भी विद्वान उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। वे जैन सिद्धांतों को आधुनिक दृष्टिकोण से जोड़ते हुए समाज में नैतिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक चेतना का सुंदर समन्वय स्थापित कर रहे हैं।

उनका देशभर में निरंतर विहार-ग्रामों से लेकर महानगरों तक-धर्म जागरण की अविरल धारा की तरह गतिमान है। उनके नेतृत्व में अनेक धार्मिक समारोह, दीक्षा-अनुष्ठान, आगम-वाचन, तप प्रवचन और युवा-जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे हैं। उनके सान्निध्य में अनेक साधु-साध्वियाँ अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़े हैं और असंख्य श्रावक अपने जीवन में धर्म-सिद्धांतों को स्थापित कर रहे हैं।

उपाध्याय पद पर अलंकृत होना उनके विशिष्ट ज्ञान, अनुशासन, चरित्र और आगम-प्रवीणता का जीवंत प्रमाण है। यह पद उनके अथाह परिश्रम और साधना-संपदा को दर्शाता है। वर्तमान में भी वे आगम-अध्ययन, शिक्षण और शास्त्रीय परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

आज उपाध्याय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. का सम्पूर्ण जीवन 'संयम-सूर्य' और 'ज्ञान-दीप' की भाँति समाज को आलोकित कर रहा है। उनकी साधना, उनकी वाणी, उनका आदर्श और उनका तपस्वी जीवन सतत् प्रेरणा स्रोत बना हुआ है। वे प्रत्येक क्षण जिनवाणी के प्रचार, आत्मकल्याण और समाज-हित के लिए समर्पित हैं और अपनी उपस्थिति से वर्तमान समय को भी आध्यात्मिक रूप से समृद्ध कर रहे हैं। ❖❖

अहिंसा भूतल की अमृत सरिता क्यों और कैसे ?

प्रश्न होता है, अहिंसा ही अमृत क्यों ? क्या अन्य कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जो वास्तविक अमृत बन सके। उत्तर में निवेदन है कि अहिंसा, सेवा, दया, सहानुभूति, प्रेम, वात्सल्य, करुणा, अनुकम्पा, क्षमा, दान आदि अनेक कोमल भावनाओं के लिए हुए हैं और अमृत का काम केवल कोमल भावनाएँ ही कर सकती हैं। अहिंसा के पालन में मानव अपने आपको विश्व के प्राणियों में विलीन कर देता है, उसमें 'मैं' व 'तू' का द्वैतभाव नहीं रहता, दूसरे की पीड़ा की अनुभूति अहिंसक को होने लगती है। अहिंसक दूसरों के दुःखों को देखकर रह नहीं सकता। वह भरसक प्रयत्न करता है, दूसरों के दुःखों को दूर करने की, इसीलिए मानव जीवन में अहिंसा को प्रतिष्ठित करना आवश्यक माना गया है।

जहाँ चारों ओर मारकाट मच रही हो, लोग परस्पर एक दूसरे के खून की होली खेल रहे हों, दुष्ट, उद्दण्ड या अत्याचारी हो गए हों और अपनी उद्दण्डता पर उतरे हुए हों, जहाँ व्यक्ति के जीवन में नाना प्रकार के अपराध प्रविष्ट हो गये हों, जहाँ रोग, शोक और चिन्ताओं के दुःख से मानव कराह रहा हो, वहाँ अहिंसा के सिवाय ऐसा कौन-सा अमृत है, जिससे ये सारी समस्याएँ हल होकर शक्ति, सुख, आनन्द और प्रेम का स्वर्गोपम वातावरण बनाया जा सकता हो ? मेरी दृष्टि में अहिंसा ही इन सबका एकमात्र हल है। सत्य, ब्रह्मचर्य अस्तेय या अपरिग्रह से ये सारी समस्याएँ हल नहीं हो सकीं। मनुष्य अहिंसा के अमृत का पान करके ही ऊपर बताये हुए दोषों और दुर्गुणों को मिटाने और वातावरण में सुख, शान्ति आनन्द और प्रेम को फैलाने में सफल हो सकता है और कोई उपाय इतना कारगर साबित नहीं हो सकता। इसलिए अहिंसा इस भूतल पर अमृत की सरिता है। अहिंसा रूपी अमृत-सरिता में डुबकी लगाकर व्यक्ति अपने आपको तो अमर बनाता ही है, वह जिस किसी का संस्पर्श करता है, उसके जीवन में भी अमृत भर देता है।

जिस प्रकार सरिता की धारा स्वयं शीतल रहती है और जो उसके पास आता है, उससे सम्पर्क स्थापित करता है, उसको भी वह शीतलता प्रदान करती है, इसी प्रकार अमृत की सरिता अहिंसा में अवगाहन करने वाला व्यक्ति अपनी आत्मा में शीतलता, शान्ति और आनन्द का अनुभव करता ही है, साथ ही उसके सम्पर्क में जो भी आता है, वह भी आनन्दित हो उठता है।

❖❖

समाचार प्रकाश

श्री जैन स्थानक (जैन भवन) के जीर्णोद्धार उपरान्त भव्य लोकार्पण एवं नवकार महामंत्र जाप समारोह सम्पन्न

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के केन्द्रीय मुख्यालय में स्थित लगभग आठ दशकों से अधिक पुरातन एवं इतिहास-संवहित श्री जैन स्थानक (जैन भवन) के अत्यंत प्रतीक्षित जीर्णोद्धार उपरान्त लोकार्पण समारोह तथा सामूहिक महामंत्र नवकार जाप का पावन आयोजन रविवार, 30 नवम्बर 2025 को अत्यंत श्रद्धा, गरिमा और उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

जीर्णोद्धार के पुण्य लाभार्थी एवं लोकार्पणकर्ता : इस अवसर का जीर्णोद्धार लाभ व लोकार्पणकर्ता का सौभाग्य प्रतिष्ठित सुश्राविका श्रीमती ऊषा जी जैन, सहधर्मिणी श्रावकरत्न स्व. श्री जयप्रकाश जी जैन एवं उनके सुपुत्र सर्वश्री अभय जी जैन, अतुल जी जैन, अमित जी जैन (वसंतकुंज/महरौली, नई दिल्ली) को प्राप्त हुआ। जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से मातुश्री ऊषा जी जैन तथा लाभार्थी परिवार का शॉल, माला एवं स्मृति-चिह्न भेंटकर अत्यंत स्नेहपूर्वक सम्मान किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन का प्रेरणादायी उद्‌बोधन : राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन ने अपने विचार रखते हुए कहा कि जैन स्थानक न केवल उपासना का पवित्र केंद्र है, बल्कि समाज की आध्यात्मिक चेतना एवं संस्कारों का गौरवशाली प्रतीक भी है। उन्होंने लाभार्थी परिवार की ओर से समाज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के आगामी सामाजिक, आध्यात्मिक एवं संगठनात्मक कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

जैन स्थानक के जीर्णोद्धार कार्य में उल्लेखनीय सहयोग देने हेतु राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री विनय जी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं जैन भवन प्रशासक श्री जयकुमार जी जैन का भी संस्था की ओर से बहुमान किया गया।

आचार्यों के चित्र एवं नवकार महामंत्र शिलापट का लोकार्पण : समारोह में महामंत्र नवकार का भव्य शिलापट स्थापित किया गया। साथ ही श्रमण संघ की स्थापना एवं विकास में अमूल्य योगदान देने वाले पूज्य आचार्यों के पावन चित्र भी जैन स्थानक भवन में प्रतिष्ठापित किए गए, जिससे इस पवित्र स्थल की ऐतिहासिक गरिमा में और वृद्धि हुई।

विशिष्ट अतिथि एवं गणमान्य उपस्थितियाँ : कार्यक्रम में दिल्ली प्रांत के अनेक राष्ट्रीय, प्रांतीय, युवा एवं महिला पदाधिकारीगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। राष्ट्रीय चेयरमैन श्री विजय जी जैन (पानीपत) की विशेष उपस्थिति ने समारोह की शोभा और भी बढ़ा दी।

सुसंगठित संचालन एवं सामूहिक नवकार जाप : पूरे कार्यक्रम का सौम्य, संतुलित तथा प्रभावी संचालन प्रसिद्ध इतिहासकार संस्था के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन ने किया। इसके पश्चात अत्यंत श्रद्धापूर्वक सामूहिक नवकार महामंत्र जाप सम्पन्न हुआ, जिसने वातावरण को दिव्यता से परिपूर्ण कर दिया। कार्यक्रम उपरान्त जैन कॉन्फ्रेंस के द्वारा सभी उपस्थित पदाधिकारियों एवं अतिथियों के लिए गौतम प्रसादी की सुंदर एवं स्नेहपूर्ण व्यवस्था की गई, जिसका सभी ने लाभ उठाया।

प्रेषक : राजेश कुमार मिश्र

---

11 केन्द्रों पर 1400 साधकों ने सीखा आत्म ध्यान

सूरत (गुजरात) : ध्यान योगी आत्मज्ञानी सद्‌गुरुदेव आत्मानुशास्ता आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में प्रातः 6:30 बजे में 9:30 बजे तक तीन घंटे का ऑनलाईन आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ का आयोजन किया गया। आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में आचार्यश्री जी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में फरमाया कि अपने आत्म स्वरूप को समझे बिना अनंत

दुखों का सामना करना पड़ता है। आत्म बोध के अभाव में व्यर्थ की क्रियाओं में लगे रहने से दुःखों का अंत नहीं हो सकता है। आत्मा को आत्मा में स्थित करने की कला इस पंचम काल में हमें प्राप्त हुई है, जिसके द्वारा जड़ जीव का भेद कर आत्मा को आत्मा में स्थित करते हुए हम कर्म निर्जरा कर सकते हैं।

वीतराग साधिका निशा जी ने अरिहंत प्रभु की कृपा से प्राप्त अरिहंत वाणी द्वारा साधकों को स्वरूप के बोध की साधना करवाई। इस साधना के द्वारा सभी साधकों ने अनादिकाल के मिथ्यात्व को क्षय करने की विधि सीखी और अपने अंतःकरण में सम्यक्त्व का बीज वपन किया।

वीतराग साधिका ने सत्य का बोध करवाया। व्यक्तित्व से पार अस्तित्व में रमण की साधना बताई। जीव की वीतराग यात्रा प्रारंभ करवाते हुए फरमाया कि आत्मा का परिचय, आत्मा को समन, आत्मा पर श्रद्धा और आत्मा में स्थिरता आवश्यक है। अंत में अनादिकाल के पापों का अवलोकन, आलोचना व प्रतिक्रमण करवाया।

प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि जी म.सा. ने आत्म-ध्यान को समझ प्रदान करते हुए योगासन एवं प्राणायाम के प्रयोग करवाए। साथ ही साधकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रारंभ में युवा मनीषी श्री शुभम मुनि जी म.सा. ने प्रार्थना ध्यान करवाया। यह आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान सहित कुल ।। स्थानों पर एक-साथ एक समय पर आयोजित हुआ। (1) आनन्दधाम अहिल्या नगर महाराष्ट्र में 600, (2) जैन स्थानक सेक्टर-4 हिरणमगरी उदयपुर राजस्थान में 286, (3) महावीर प्रतिष्ठान पुणे महाराष्ट्र में 111, (4) जैन स्थानक किचलू नगर लुधियाना पंजाब में 99, (5) रविवार कारंजा जैन स्थानक नाशिक महाराष्ट्र में 97, (6) जैन स्थानक बिबवेवाड़ी पुणे महाराष्ट्र में 71, (7) वर्धमान प्रतिष्ठान शिवाजी नगर पुणे महाराष्ट्र में 60, (8) चिंचवड़ स्टेशन पुणे महाराष्ट्र में 30, (9) क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान लोणीकन्द पुणे महाराष्ट्र में 30, (10) आत्म भवन, सूरत गुजरात में 30, (11) जैन स्थानक भटिण्डा पंजाब में 17, इस धर्म यज्ञ में कुल 1401 साधकों की सहभागिता रही, जिसमें साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएं सभी उपस्थित थे। आत्म ध्यान प्रशिक्षकों एवं सक्रिय धर्म सेवकों ने पुरुषार्थ कर उत्तम व्यवस्थाएं प्रदान की। जिन-जिन क्षेत्रों के संघों ने आयोजन करवाया उन सभी को आचार्यश्री जी ने आशीर्वाद दिया एवं फरमाया कि इसी प्रकार आगे भी धर्म आराधना करते रहे एवं करने वालों को सहयोग देते रहें। प्रतिदिन प्रातः 5 बजे पारस चैनल पर आत्म-ध्यान के प्रयोग आ रहे हैं उसका लाभ लेवे।

आनन्दधाम अहिल्या नगर में महाराष्ट्र प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. के 92वें जन्मोत्सव पर विशेष धर्म यज्ञ आयोजित किया गया। आचार्यश्री जी ने प्रवर्तकश्री जी के जन्मोत्सव पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं संप्रेषित की। ऑनलाईन आत्म ध्यान धर्म यज्ञ का प्रसारण आत्म भवन सूरत से वर्चुअल लाईव किया गया।

सामूहिक जाप एवं चातुर्मासिक पक्खी के साथ चातुर्मास सम्पन्न

चातुर्मास प्रवास में अवध निवासियों का सहयोग अनुमोदनीय रहा : ध्यानयोगी आत्मज्ञानी सद्‌गुरुदेव आत्मानुमास्ता आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 10 का वर्ष 2025 का चातुर्मास सामूहिक महामंत्र नवकार जाप एवं चातुर्मासिक पक्खी की आराधना के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। चातुर्मास प्रवास में आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ, ध्यान-साधना, तपस्या, पूज्यवरों के दैनिक मंगल उद्‌बोधन के साथ अनेक चातुर्मासिक गतिविधियाँ सम्पन्न हुई। चातुर्मास प्रवास में देशभर से अनेक श्रावक-श्रविकाएं, दीक्षार्थी, गुरुभक्त उद्योगपति, सरकारी पदाधिकारी, विभिन्न सामाजिक संगठन के कार्यकर्ताओं का मंगल आशीर्वाद हेतु निरंतर आवागमन बना रहा।

आचार्य भगवन् ने चातुर्मास पूर्णाहुति पर अवध संगरीला वासियों एवं बाहर से आए हुए श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए अपने मंगल उद्‌बोधन में फरमाया कि अवध संगरीला में थोड़े ही घर है और स्थान भी छोटा है फिर भी वातुर्मास में किसी भी कमीं का एहसास नहीं हुआ। चाहे पर्युषण पर्व हुआ हो, या चातुर्मास प्रवेश हुआ हो, ध्यान-साधना के शिविर हुए हो, तपस्याए हुई, मुमुक्षु दीक्षार्थी आए हों या दर्शनार्थी श्रद्धालु आए, सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में श्रावकों ने जो सहयोग

दिया वह अनुमोदनीय है।

उन्होंने आगे फरमाया कि गृहस्थ एवं साधु-संतों का परस्पर संबध है। गृहस्थ साधु-संतों को आहार बहराते हैं, संघ की सेवा करते है। गृहस्थ आधार है, हमें जो भी चाहिए है वह हम गृहस्थ से ही याचना करते हैं, चाहे वह आहार हो, वस्त्र हो या रहने का स्थान हो। साधु-संतों को की गई सेवा महान निर्जरा का कारण बनती है। साथ ही उन्होंने सभी 9 मुनिराजों के प्रति उनकी सेवा भावना की अनुमोदना की।

आयार्य भगवन् ने आगे फरमाया कि हम सभी सौभाग्यशाली है कि आत्मा के कल्याण के लिए पंचम काल में अरिहंत परमात्मा सीमंधर स्वामी की वाणी मिली है और वीतराग साधिका निशा जी का पुरुषार्थ, सहयोग मिला, यह सभी के लिए कल्याणकारी है। संसार में शांति नहीं है। उठते, बैठते, खाते-पीते जड़ जीव का भेद विज्ञान करो और कर्म सिद्धांत को मानते हुए यह संकल्प रहे कि यहां से हम महाविदेह में जाएंगे। ऐसी माता मिले जो भगवान के समवसरण में जाए। यह भाव संकल्प, प्रार्थना, आकांक्षा रहेगी तो जो चाहोगे वह निश्चित ही प्राप्त हो सकेगा।

प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि जी म.सा. ने चातुर्मास पूर्णाहुति पर अवध संगरीला के श्रावक-श्राविकाओं सहित सभी के प्रति मंगल भावनाएं प्रेषित करते हुए ध्यान के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की।

युवा मनीषी श्री शुभममुनि जी म.सा., प्रवचन प्रभाकर श्री शमितमुनि जी म.सा., मधुर गायक श्री निशांतमुनि जी म.सा. व श्री शाश्वतमुनि जी म.सा. ने भजन एवं उद्बोधन दिया। इस अवसर पर वैरागन बहन दीक्षा रवीन्द्र भंसाली जलगांव से आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ एवं दीक्षा आज्ञा हेतु उपस्थित हुई, उन्होंने अपनी भावनाएं व्यक्त की। इस अवसर पर वैरागन बहन का अवधवासियों ने स्वागत सम्मान किया। ज्ञात रहे वैरागन बहन की दीक्षा दिनांक 22 फरवरी 2026 को पाचोरा, महाराष्ट्र में होनी सुनिश्चित हुई है। वैरागन बहन उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री सुमनप्रभा जी म.सा. के सान्निध्य में संयम अंगीकार करने जा रही हैं।

चातुर्मास पूर्णाहुति पर श्री गौतम मेहता, श्री तुलसीभाई चपलोत, श्री रोहित जैन बोकड़िया, श्री सरदार बाबेल आदि ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। श्रीमती मनीषा संचेती ने भजन के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। श्रीमती श्वेता मेहता के 78 एकासन पूर्ण होने पर शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से स्मृति चिन्ह द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

आत्म ध्यान साधना एवं स्वाध्याय का क्रम गतिमान : श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा., श्रमण सभीव प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि जी म.सा. आदि ठाणा आत्म भवन, अवध संगरीला में अपनी आध्यात्मिक आत्म-ध्यान-साधना के लिए विराजमान हैं। प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय के साथ आत्म-ध्यान, तत्पश्चात् प्रातः 9:30 से 10:30 बजे तक स्वाध्याय का क्रम निरंतर गतिमान है। सूरत शहर में चातुर्मासार्थ साधु-साध्वियों का शिवाचार्य भगवन् के दर्शन एवं सुखसाता पृच्छा हेतु निरंतर पदार्पण हो रहा है।

30 अक्टूबर 2025 : आचार्य भगवन् के दर्शनार्थ एवं दीक्षा की आज्ञा हेतु उपप्रवर्तक घोर तपस्वीं श्री नरेशमुनि जी म.सा. के चरणों में अध्ययनरत मुमुक्षु लवेश सिंघवी उपस्थित हुए। इस अवसर पर अवध संगरीला परिवार ने दीक्षार्थी बंधु का तिलक लगाकर शॉल, माला पहनाकर अभिनन्दन, अनुमोदन एवं स्वागत किया। दीक्षार्थी ने इस अवसर पर अपने भाव भी सभा के मध्य रखे।

4 नवम्बर 2025 : आचार्य भगवन् के श्री चरणों में आशीर्वाद एवं दीक्षा की आज्ञा हेतु श्रमण संघीय सलाहकार श्री राममुनि जी म.सा. के चरणों में अध्ययनरत मुमुक्षु आदि जैन नालासोपारा श्रीसंघ के साथ उपस्थित हुए जिनकी दीक्षा 1 फरवरी 2026 को श्री अम्बेश जैन गुरुकुल में होने जा रही है। इस अवसर पर अवध श्रीसंघ द्वारा मुमुक्षु आदि जैन का स्वागत अभिनन्दन किया गया एवं शॉल माला पहनाई गई, मंगल तिलक भी किया। दीक्षार्थी ने इस अवसर पर अपने भाव भी सभा के मध्य रखें।

9 नवम्बर 2025 : आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि जी म.सा. के मार्गदर्शन में एवं वीतराग साधिका निशा जी के प्रबल पुरुषार्थ से महाराष्ट्र प्रवर्तक पूज्य श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. के 92वें जन्मोत्सव पर विशाल आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ हुआ। सुबह 6:30 बजे से 9:30 तक यह विशाल आयोवन जूम के माध्यम से 11 जगहों पर हुआ जिसमें साधु-साध्वियों के साथ-साथ श्रावक-श्राविकाओं ने पूर्ण उत्साह के साथ सहभाग लिया। 1400 साथक-साधिका इसमें सम्मिलित हुए। अहमदनगर, पूना, सूरत, उदयपुर, लुधियाना, भटिण्डा आदि जगहों पर साधकों ने इसमें सहभाग लिया।

दोपहर में आचार्य भगवन् की सुखसाता पूछने हेतु कामरेज का चातुर्मास पूर्ण करके उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी म. सा., उपप्रवर्तक श्री गौतममुनि जी म.सा., श्री सागरमुनि जी म.सा. लगभग 2 बजे आत्म भवन अवध संगरीला पधारे। यह चार माह के बाद का एक मधुर मिलन था। पुरानी यादों के साथ-साथ आगामी 2027 में श्रमण संघ के अमृत महोत्सव पर श्रमण संघ के उत्थान एवं विकास पर गहन चिंतन-मनन हुआ। म.सा. शाम को पुनः विहार कर चलथान पधारे।

चातुर्मास की पूर्णाहुति के बाद अनेक साधु-साध्वियों का अवध संगरीला पदार्पण हो रहा है। अवध परिवार साधु-साध्वियों की सेवा का लाभ ले रहा है। अनेक स्थानों से गुरुभक्तों का भी दर्शनार्थ आगमन जारी है। शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से सभी व्यवस्थाएं सुचारू रूप से चल रही हैं। **- शमितमुनि जी म.सा.**

जैन कॉन्फ्रेंस पंजाब युवा शाखा ने आयोजित किया मानव सेवा कार्यक्रम

लुधियाना (पंजाब) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा पंजाब द्वारा बड़े ही हर्ष, करुणा और पुण्य भावना के साथ मानव सेवा कार्यक्रम का आयोजन मदर टैरेसा आर्फन्ज, नजदीक जालंधर बाईपास चौक में किया गया। जहां संस्था के सदस्यों ने जरूरतमंद बच्चों तथा मानसिक रूप से विशेष आवश्यकता वाली महिलाओं तक पहुंचकर सेवा का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सभी को राशन सामग्री, नए कपड़े एवं पौष्टिक स्नैक्स एवं चाय वितरित की गई। इस पुण्य कार्य का लाभ श्री भूषण जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन परिवार मैसर्ज जैन ट्रेडर्स श्रीमती तृप्ता रानी जैन एवं श्रीमती मोनिका जैन मैसर्ज रूप श्री निटवियर्स द्वारा लिया गया।

लाभार्थी परिवार से दिनेश जैन, आदेश जैन एवं युवा शाखा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दीपांशु जी जैन, प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनय जी जैन, कोषाध्यक्ष श्री जिनेश जी जैन, मार्गदर्शक श्री लव जी जैन, सलाहकार श्री मुकेश जी जैन, श्री आदेश जी जैन, श्री आदिश जी जैन, श्री आदित्य जी जैन, श्री प्रथम जी जैन तथा महिला शाखा से जयति जी जैन व हरियाली जी जैन, अरिष्ठा जी जैन विशेष रूप से शामिल हुए। राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष श्री दीपांशु जी जैन एवं पंजाब प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री विनय जी जैन ने कहा कि मानव सेवा ही सच्ची धर्म सेवा है। हमारा उद्देश्य केवल वस्तुएं देना नहीं, बल्कि प्रेम, सम्मान और आत्मीयता से हर जरूरतमंद तक पहुंचना है। जब युवा शक्ति सेवा को अपना कर्त्तव्य समझती है, तब समाज में सकारात्मक परिरवर्तन अवश्य आता है। **प्रेषक : विनय जैन**

जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक युवा शाखा की कार्यकारिणी समिति बैठक संपन्न

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री ऑल इंडिया शेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांतीय अध्यक्ष श्री प्रकाश जी बुरड़ जैन के तत्वाधान में कर्नाटक युवा शाखा की कार्यकारिणी समिति की बैठक शनिवार दिनांक 20 दिसंबर 2025 को सफलतापूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण एवं राष्ट्रगान के साथ की गई। युवा अध्यक्ष श्री आशीष जी भंसाली जैन ने पधारे हुए सभी प्रांतीय एवं राष्ट्रीय पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी सदस्यों का स्वागत किया।

बैठक में जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक युवा शाखा के 98 सदस्य उपस्थित रहे। साथ ही प्रांतीय महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती संतोष जी आच्छा जैन, महिला चेयरमैन श्रीमती रसीला जी मरलेचा जैन, महिला महामंत्री श्रीमती सपना जी सिंघवी जैन,

महिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती इंद्रा जी गादिया जैन सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष श्री प्रमोद जी सिंघी जैन, श्री अजय जी धोका जैन, युवा कानून सलाहकार मंत्री श्री विशाल जी छल्लानी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री अभय जी कातरेला जैन, श्री प्रवीण जी सिंघी जैन, युवा प्रमुख मार्गदर्शक श्री भरत जी कोठारी जैन आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

बैठक में महामंत्री श्री किशोर जी बाफना जैन ने गत एक वर्ष में हुए कार्यों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की, वहीं कोषाध्यक्ष श्री रूपेश जी सिसोदिया जैन ने आय-व्यय का लेखा-जोखा सदन के समक्ष रखा। निर्वतमान युवा अध्यक्ष श्री विकास जी कोठारी जैन ने युवा शाखा के कार्यों की सराहना करते हुए युवाओं को अधिक से अधिक संख्या में संगठनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर संगठन के लिए उत्कृष्ट कार्य एवं सेवाएं प्रदान करने वाले कुछ सदस्यों को प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में सह-कोषाध्यक्ष श्री सुनील जी बम्ब जैन ने उपस्थित सभी प्रांतीय, राष्ट्रीय पदाधिकारियों, महिला शाखा पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों एवं सहभागियों का आभार व्यक्त किया तथा बैठक को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रांतीय युवा मंत्री श्री दीपक जी धोका जैन एवं युवा महामंत्री श्री किशोर जी बाफना जैन ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री शीतल जी लुणावत जैन, प्रांतीय युवा उपाध्यक्ष श्री महावीर जी कानूंगा जैन, श्री महावीर जी चोरड़िया जैन, युवा प्रचार प्रसार मंत्री श्री अभिषेक जी विनायकिया जैन एवं श्री यश जी बाफना जैन का विशेष सहयोग रहा।

प्रेषक : आशीष भंसाली जैन

चतुर्विध संघ की उपस्थिति में नासिक में तेरे मेरे सपने संवाद केन्द्र एवं धाडीवाल परिवार की ओर से जैन स्थानक का शुभारंभ

नासिक (महाराष्ट्र) : श्रमण संघीय युवाचार्य पूज्य गुरुदेव श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा., मालवा प्रवर्तक पू. श्री प्रकाशमुनिजी म.सा., उपप्रवर्तक पू. श्री अक्षयऋषिजी म.सा., उपप्रवर्तक पू. श्री गौरवमुनिजी म.सा. आदि संत-सतीवृंद एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में नासिक रोड़, नासिक में शनिवार, दिनांक 6 दिसम्बर 2025 के दिन सामाजिक, धार्मिक कार्य की सुंदर शुरुआत हुई। इस सेन्टर का उद्‌घाटन पूर्व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रूचिराजी सुराणा जैन द्वारा किया गया।

जैन कान्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा द्वारा प्रेरित तेरे मेरे सपने सेंटर का तथा स्व. सूरजमलजी पुखराजजी धाडीवाल जैन स्थानक का शुभारंभ जैन कान्फ्रेंस के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारस भाऊ मोदी जैन, निवर्तमान राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रुचिरा ताई सुराणा जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुनीलजी चोपडा जैन, श्री ललितजी मोदी जैन, विहारधाम योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिलालजी चोपड़ा जैन, चतुर्थ झोन प्रांतीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी लोढा जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के श्री प्रविणजी लुनावत जैन, नासिक रोड श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री किरणजी धाडीवाल जैन, राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्षा सौ. कल्पनाजी धाडीवाल जैन, चतुर्थ जोन प्रांतीय महिला अध्यक्षा सौ. ज्योती नवनीतजी गांधी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या सौ. मधुबालाजी कोठारी जैन, सौ. मंगलजी भंडारी जैन, शकुंतलाजी बोथरा जैन, प्रांतीय संघटन मंत्री सौ. कल्पनाजी बेदमुथा जैन, एडव्होकेट पूजा बोरा जैन और उन्नती कुमट जैन आदि प्रमुख मान्यवरों की उपस्थिती में संपन्न हुआ।

चतुर्थ जोन में तेरे मेरे सपने का यह प्रथम सेंटर का प्रारंभ राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोषजी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती रीचाजी जैन की प्रेरणा से एवं राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्षा सौ. कल्पनाजी धाडीवाल जैन और टीम के सहयोग से हुआ। जैन स्थानक की अनिवार्यता देखते हुए जैन कॉलोनी, नासिक रोड़ में श्री रमेशजी, श्री महेन्द्रजी, सौ. कल्पनाजी एवं धाडीवाल परिवार के योगदान और मेहनत से स्थानक का निर्माण कार्य हुआ।

प्रेषक : रीचा संदीप जैन

राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा का जन्मदिवस उल्लासपूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा आदरणीया श्रीमती संतोष जी जैन का जन्मदिवस दिनांक 13 दिसम्बर 2025 को जैन भवन स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में अत्यन्त आत्मीयता, गरिमा एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। यह अवसर न केवल एक व्यक्तिगत प्रसन्नता का क्षण था, अपितु संगठनात्मक एकता, नारी-सशक्तिकरण और सेवा-संकल्प का भी सजीव प्रतीक बना।

इस गरिमामय अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय महिला वाईस चेयरमैन श्रीमती मीनाक्षी जी जैन तथा राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जी जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी पदाधिकारियों ने आदरणीया श्रीमती संतोष जी जैन के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं निरन्तर यशस्वी जीवन की मंगलकामनाएँ अर्पित की।

समारोह में दिल्ली की अनेक राष्ट्रीय महिला पदाधिकारियों के साथ-साथ प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जी जैन, महामंत्री श्रीमती कनिका जी जैन तथा कोषाध्यक्षा श्रीमती अनीता जी जैन (निगम पार्षद, शालीमार बाग) सहित अनेक सम्मानित महिलाएँ उपस्थित रहीं। सभी ने स्नेह, सम्मान और कृतज्ञता के भावों के साथ अपने-अपने शब्दों में शुभकामनाएँ व्यक्त कीं तथा उनके नेतृत्व, सरलता और सेवाभावी व्यक्तित्व की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

यह जन्मदिवस आदरणीया श्रीमती संतोष जी जैन के प्रेरणादायी व्यक्तित्व, संगठन के प्रति उनकी निष्ठा और समाजसेवा के प्रति उनके सतत समर्पण का सजीव प्रतिबिम्ब बनकर सभी के मन में सुखद स्मृति के रूप में अंकित हो गया।

नारी नेतृत्व की गौरवपूर्ण उपलब्धि : श्रीमती अनीता जैन का संस्था द्वारा अभिनंदन

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री अतुल जी जैन की अध्यक्षता में 13 दिसम्बर 2025 को दिल्ली की राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय महिला पदाधिकारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक जैन भवन में अत्यन्त सौहार्दपूर्ण एवं सकारात्मक वातावरण में सम्पन्न हुई। बैठक में महिला शाखा के आगामी कार्यक्रमों, योजनाओं एवं संगठनात्मक गतिविधियों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया तथा माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने प्रेरणादायी मार्गदर्शन से सभी को दिशा प्रदान की।

इस गरिमामय अवसर पर राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जी जैन, राष्ट्रीय महिला वाईस चेयरमैन श्रीमती मीनाक्षी जी जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जी जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती उर्मिल जी जैन तथा राष्ट्रीय महिला सह-कोषाध्यक्षा श्रीमती कौशल्या जी जैन की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही दिल्ली प्रान्तीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जी जैन, महामंत्री श्रीमती कनिका जी जैन एवं अनेक सक्रिय महिला पदाधिकारीगण उपस्थित रहीं, जिससे बैठक की गरिमा और भी बढ़ गई।

इसी अवसर पर दिल्ली में सम्पन्न निगम पार्षद के उपचुनाव में, माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी के सहयोग से शालीमार बाग क्षेत्र से निर्वाचित होकर जनसेवा का दायित्व ग्रहण करने वाली श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली प्रदेश की प्रान्तीय महिला कोषाध्यक्षा आदरणीया श्रीमती अनीता जी जैन (निगम पार्षद, शालीमार बाग) का संस्था की ओर से भावपूर्ण अभिनंदन किया गया।

संस्था द्वारा उन्हें शॉल, माला एवं साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं बहनों ने उनके सामाजिक समर्पण, संगठनात्मक सक्रियता एवं राजनैतिक जीवन में निरन्तर यशस्विता की मंगलकामनाएँ व्यक्त की। यह अभिनंदन समारोह महिला सशक्तिकरण, संगठन की एकजुटता तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का सशक्त प्रतीक बनकर उभरा।

महिला शाखा द्वारा आगमज्ञाता उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. की स्वर्ण दीक्षा जयंति पर मूक बधिर स्कूल में बांटे स्वेटर, रजाईयाँ

लुधियाना (पंजाब) : आगम ज्ञाता, आगम पुरुष उपाध्याय भगवन श्रद्धेय गुरुदेव पू. श्री जितेंद्रमुनि जी म.सा. की 50वीं स्वर्ण दीक्षा जयंती के पावन शुभ अवसर पर महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसायटी की ओर से रैड क्रॉस के सहयोग से स्वेटर और रजाईयां इत्यादि वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। रैड क्रॉस द्वारा मूक बधिरों के लिए सराभा नगर में संचालित स्कूल के बच्चों के अभिभावकों को कार्डिगन, स्वेटर आदि वितरित किए गए। स्कूल इंचार्ज श्रीमती संतोष जी रानी तथा समाज सेवी श्री अशोक जी शर्मा के मार्गदर्शन में वूलन उत्पाद लोगों को वितरित किए गए। जैन समाज के महान संतों में से एक आगम ज्ञाता, युग पुरुष, जिन शासन रतन हिमाचल केसरी उपाध्याय भगवन पू. श्री जितेंद्रमुनि म.सा. की 50वीं स्वर्ण संयम जयंती के उपलक्ष्य में कुछ परिवारों को सिविल लाइन जैन स्थानक में रजाईयां भी वितरित की गई।

कार्यक्रम में भगवान महावीर सेवा संस्थान के अध्यक्ष राकेश जैन, कार्यकारिणी सदस्य रमा जैन, महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसाइटी की महामंत्री श्रीमती रीचा जैन, सुषमा जैन, कमल जैन, स्कूल इंचार्ज संतोष रानी, एस.एस. जैन सभा सैक्टर 39 के उप-प्रधान श्री संदीप जी जैन, समाज सेवी श्री अशोक शर्मा, सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्रेषक : रीचा संदीप जैन

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रांतीय महिला शाखा की गतिविधियाँ

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जी जैन के दिशा-निर्देशन में दिल्ली प्रांतीय महिला शाखा निम्नलिखित सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रम राजधानी दिल्ली में आयोजित किए गए, जिसमें 15 जुलाई को पद ग्रहण करने के बाद सेवा, शिक्षा एवं तप के क्षेत्र में अग्रणी महिलाओं का केन्द्रीय कार्यालय पर स्वागत अभिनंदन किया गया। 21 जुलाई को सैक्टर-5 रोहिणी में पूज्य गुरुदेव श्री अमनमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के प्रवचन श्रवण कर आशीर्वाद प्राप्त किया। अहिंसा विहार में साध्वी पू. श्री शिवाजी म.सा. की शिष्या पू. डॉ. श्री शैली जी म.सा. के दर्शन, वंदन किए। प्रशांत विहार में साध्वी पू. श्री सुषमाजी म.सा. के दर्शन, वंदन किए।

26 जुलाई को द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. की 125वीं जन्म जयंति पर बूढ़पूर दिल्ली में अपना घर आश्रम में गौतम प्रसादी वितरण की गई। 30 जुलाई को छोटूराम पार्क सैक्टर-6 में वृक्षारोपण का कार्य किया गया। 10 अगस्त को लक्ष्मीनगर में श्रावक तपस्वी श्री राहुल जी के मासखमण का अभिनंदन एवं साध्वी पू. श्री शिक्षा जी म.सा. के प्रवचन श्रवण कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कृष्णा नगर में विराजित संघ संचालक परम पूज्य गुरुदेव श्री नरेशमुनि जी म.सा. के दर्शन, वंदन किए। गाजियाबाद में विराजित उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री सुभद्रमुनि जी म.सा. के दर्शन कर धर्म चर्चा की।

15 अगस्त को त्रिनगर में विराजित परम पूज्य वाचनाचार्य पू. श्री विशालमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के प्रवचन श्रवण का लाभ लिया तथा राष्ट्रीय एवं प्रांतीय युवा टीम द्वारा आयोजित ब्लड़ डोनेशन कार्यक्रम में शामिल होकर सेवा कार्य किया। 17 अगस्त को अरिहंत नगर में विराजित त्याग शिरोमणि राजऋषि परम पूज्य गुरुदेव श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दिव्य प्रवचन श्रवण करने का लाभ लिया। 19 अगस्त को वीरनगर में विराजित पू. श्री रचितमुनि जी म.सा., राणा प्रताप बाग में विराजित दिव्य साधिका पू. डॉ. श्री रश्मि जी म.सा., डेरावाल में विराजित साध्वी पू. श्री समताजी म.सा. एवं साध्वी पू. श्री संजुजी म.सा. आदि ठाणा को एकासने की पुस्तिका भेंट की। साध्वी पू. श्री पवनकुमारी जी म.सा. की 21वीं पावन स्मृति दिवस पर गुणगान महोत्सव में सम्मिलित हुए। योगीराज पू. श्री रामलाल जी म.सा. की 59वीं पावन पुण्य स्मृति के

उपलक्ष्य में आयोजित गुणगान दिवस परम पू. श्री रमेशमुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में आयोजित हुए।

11 सितम्बर को करनाल में विराजित महासाध्वी, उत्तर भारतीय प्रवर्तिनी पू. डॉ. श्री सरिता जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किए। 16 सितम्बर को आत्म-ध्यान साधना शिविर सैक्टर 3 में सम्मिलित हुए। 18 सितम्बर को लक्ष्मीनगर के जैन स्थानक में बहनों द्वारा 70 सामूहिक एकाशन किए। 23 सितम्बर को राजाखेड़ी में विराजित प्रवचन भास्कर पू. श्री रोहितमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के प्रवचनों का लाभ लिया। समालखा में विराजित प्रज्ञा महर्षि पू. श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किए। 29 सितम्बर को त्रिनगर में विराजित नेपाल हिन्द गौरव, वाचनाचार्य पू. डॉ. श्री विशालमुनि जी म.सा. आदि ठाणा द्वारा प्रवचनों का लाभ लिया। 1 अक्टूबर को रोहिणी, सैक्टर-11 में गौशाला में गौ सेवा प्रदान की। 4 अक्टूबर को रोहिणी, सैक्टर 6 में विशाल स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर परम पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. के जन्मदिवस के अवसर पर लगाया गया। 29 अक्टूबर को त्रिनगर में विराजित नेपाल हिंद गौरव, वाचनाचार्य वरिष्ठ उपाध्याय पू. डॉ. श्री विशालमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तपस्वी रत्न पू. श्री आशीषमुनि जी म.सा. के मासखमण तपस्या के उपलक्ष्य में आदर की चादर भेंट की।

2 नवंबर को श्री एस.एस. जैन सभा महेन्द्रा पार्क, रानी बाग दिल्ली में विराजित त्याग शिरोमणि राजऋषि पूज्य गुरुदेव श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त किया एवं दर्शनों का लाभ लिया। नवकार महिला मंडल ने हेल्थ चैकअप कैंप में सहयोग किया। 10 नवंबर को दिल्ली प्रांतीय महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती अनिता जैन जी को शालीमार बाग से उपचुनाव में निगम प्रत्याशी बनाए जाने पर उसको चुनाव कार्यालय के उद्घाटन पर जाकर बधाई प्रदान समर्थन दिया। 14 नवंबर को बाल दिवस के अवसर पर सीनियर स्कूल में विधार्थियों को जूस व अल्पाहार वितरित किया। बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाना, उन्हें स्वस्थ व पौष्टिक अल्पाहार प्रदाना यही इस सेवा कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहा। 12 नवंबर को त्रिनगर में विराजित नेपाल हिंद गौरव, वरिष्ठ उपाध्याय पू. डॉ. श्री विशालमुनि जी म.सा. के पावन जन्मोत्सव पर आदर की चादर भेंट की।

प्रेषक : सीमा जैन

जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांत की वर्ष 2025 की गतिविधियाँ

सूरत (गुजरात) : जनवरी माह में गुजरात प्रांत के 5199 आजीवन सदस्यों को व्हाट्सऐप ग्रुप से जोड़कर डिजिटल डाटा का कार्य किया गया, ताकि गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस की संपूर्ण गतिविधियों की जानकारी सभी आजीवन सदस्यों तक पहुंच सके। वहीं फरवरी माह में 160 नए आजीवन सदस्य भी बनाए गए। मार्च माह में मानव सेवा के तहत सूरत में गरीब परिवार के ईलाज हेतु 75 हजार एवं 50 हजार की राशि प्रदान करवाकर हॉस्पिटल में रियायत करवाकर ईलाज की सुविधा उपलब्ध करवाई एवं वलसाड़ जिले में महिला शाखा द्वारा गरीबों को राशन किट वितरित किए गए।

अप्रैल माह में गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस के शीर्ष पदाधिकारियों द्वारा दक्षिण गुजरात में दौरा किया गया, जिसमें प्रमुख रूप सूरत, उधना, अंकलेश्वर, कामरेज, वड़ोदरा, पांडेसरा, बारडोली, व्यारा, चीखली श्रीसंघों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान कार्यकर्ताओं का सकारात्मक व्यवहार सराहनीय रहा तथा समस्याओं, सुझाव एवं समाधान पर विचार-विमर्श किया गया। जीतो द्वारा आयोजित विश्व शांति हेतु नवकार महामंत्र जाप का आयोजन किया गया, जिसमें गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस की अहम भूमिका रही। हमने पूरे गुजरात के धर्म स्थानकों, उपाश्रयों में नवकार मंत्र जाप के साथ सामायिक करने का आव्हान किया, जिसमें जप-तप आराधना काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा की गई।

भगवान महावीर जन्मोत्सव महापर्व पर संपूर्ण गुजरात में जैन कॉन्फ्रेंस के आव्हान पर धूमधाम से मनाया गया। स्थानीय श्रीसंघों द्वारा गांवों, शहरों, कस्बों में शोभा यात्राएं निकाली गई। चारित्र आत्माओं के सान्निध्य में महावीर गुणानुवाद सभाओं जप-तप के साथ आयोजित कर गौतम प्रसादियों के सुंदर आयोजन हुए। श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. के 75वें दीक्षा जयंति अमृत महोत्सव एवं उप-प्रवर्तक मेवाड़ भास्कर श्री पू. श्री कोमलमुनि जी म.सा. की 26वीं दीक्षा जयंति महोत्सव पर पूरे गुजरात भर में जीवदया, मानव सेवा एवं धर्म आराधना हेतु आव्हान किया गया। फलस्वरूप अनेक

जीवदया के कार्यक्रम मूक पशुओं, पक्षियों को दूध रोटी, घास, दाना खिलाना एवं भविष्य के लिए इससे जुड़ी संस्थाओं को फण्ड डोनेट किया गया।

मानव सेवा के तहत अहमदाबाद मेन्ट हॉस्पिटल में 250 मरीजों को खाना खिलाया। साथ ही आंगनवाड़ी के बच्चों को अहमदाबाद में खाना, फ्रूट एवं कीट वितरित किए गए। इसी के तहत प्रांतीय महामंत्री श्री विनोदजी धोका जैन के मार्गदर्शन में 425 लोगों को भोजना कराया। वहीं गौशालाओं में स्थानीय श्रीसंघों द्वारा घास, दलिया आदि की व्यवस्थाएं की गई। आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के 40वें वर्षीतप के उपलक्ष्य में गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस ने ये वर्ष वर्षीतप आराधना वर्ष घोषित किया, जिसके तहत गुजरात में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने वर्षीतप आराधना की शुरुआत की है।

मई माह में गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस की शपथ विधि समारोह राजभवन, अहमदाबाद में आयोजित किया गया। वहीं जून माह में कोशीथल में गुरुणी पू. श्री प्रेमवती जी म.सा. के रजत पुण्योत्सव पर गुजरात जैन कॉन्फ्रेंस के आव्हान पर कई सदस्यों ने नमन यात्रा एवं पुण्योत्सव पर उपस्थिति रही। गुजरात प्रांत की प्रथम कार्यकारिणी की मीटिंग अंकलेश्वर में प्रांतीय महामंत्री श्री विनोदजी धोका जैन के निवास गृह में आयोजित की गई, जिसमें कार्यकारिणी सदस्य का प्रतिभाव अच्छा रहा एवं एजेण्डे के अनुसार सभा का संचालन हुआ। सभी सदस्यों का आपसी परिचय एवं सुझाव, समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया। उसी दिन शाम को गुजरात युवा कॉन्फ्रेंस की मीटिंग अवध संगरीला पर रखी गई। जहां पर आचार्य भगवंतों का शुभ आशीर्वाद वचन, दर्शन, प्रवचन का लाभ मिला। इसमें प्रांतीय कार्यकारिणी के शीर्ष पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

जुलाई माह में आपकी जैन कॉन्फ्रेंस, आपके द्वार के तहत प्रांतीय अध्यक्ष श्री सम्पतजी खाब्या जैन, चेयरमैन श्री लक्ष्मीलाल जी नाहर, प्रांतीय महामंत्री श्री विनोद जी धोका जैन, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री लोकेश जी मादरेचा ने उत्तर गुजरात के श्रीसंघों का दौरा किया। सर्वप्रथम अम्बाजी, खेड़ब्रह्मा, ईडर, हिम्मतनगर एवं जिपुर के श्रीसंघों की मुलाकात ली गई। सभी संघों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से विचार-विमर्श हुआ एवं वहां पर विराजित चारित्र आत्माओं के दर्शन, वाणी श्रवण का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही नए सदस्यता अभियान के तहत २०० फार्म वितरित किए गए जो नए सदस्यों के भरकर स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदान किए जाएंगे।

अगस्त माह में गुरु दर्शन यात्रा अंकलेश्वर में आगम मर्मज्ञा श्री चेतना जी म.सा. आदि ठाणा, कामरेज में उप-प्रवर्तक पू. श्री विनयमुनिजी म.सा., पू. श्री गौतममुनिजी म.सा., शांति भवन सूरत में महासाध्वी पू. श्री अर्चना जी म.सा. 'मीरा', पू. श्री अनंताश्री जी म.सा., पू. श्री सुरभिश्री जी म.सा., वेशु में प्रवर्तक पू. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा., पू. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा. के दर्शन, प्रवचन श्रवण एवं श्रमण संघ के एकीकरण पर चर्चा आदि की गई। श्री जयंतिलालजी कूकड़ा जैन की धर्म सहायिका श्रीमती सरिताजी कूकड़ा जैन के सिद्धि तप की अनुमोदना उनके निवास स्थान पर आयंबिल तपोनिधि महासती पू. श्री प्रफुल्ला जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में की गई। पाण्डेसरा में परम विदुषी पू. श्री उमरावकंवर जी म.सा. दिव्य ज्योति पू. डॉ. श्री प्रीतिसुधा जी म.सा., तपज्योति पू. श्री संयमसुधा जी म.सा. के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

सितम्बर माह में श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. की पुण्य स्मृति दिवस पर संपूर्ण गुजरात में अन्नदान, मानव सेवा, जीवदया एवं सामायिक करने का आव्हान किया गया। अहमदाबाद सिविल हॉस्पिटल में 300 से अधिक जरुरतमंदों के परिवारजनों को निःशुल्क भोजन कराया गया। पोस्ट ऑफिस की सुकन्या बचत योजना के तहत 100 बालिकाओं के बचत बैंक अकाउंट में 250 रुपये जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा भकर खाता खुलवाया।

गुजरात प्रांतीय श्रमण संघीय श्रीसंघ संवाद संगोष्ठी एवं द्वितीय कार्यकारिणी की मीटिंग का आयोजन सूरत वेशु श्री गुरु पुष्कर भवन पर श्रमण संघीय पूज्य गुरुदेव श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा., साहित्य दिवाकर पू. गुरुदेव श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा., विदुषी महासाध्वी श्री सुलक्षणा जी म.सा., मधुर व्याख्यानी महासाध्वी पू. श्री प्रज्ञाश्री जी म.सा. के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 175 से अधिक श्रावकों की उपस्थिति रही। प्रमुख वक्ता के रूप में राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जी जैन की उपस्थिति रही। उन्होंने बताया कि देश के सभी श्रीसंघों की जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों के साथ संवाद होना चाहिये। अपने वक्तव्य में बताया कि श्रमण संघ के श्रावकों को दूसरी सम्प्रदाय के साधु-संतों के सामने अपनी क्रियाएं कमजोर न होने दे। अपनी निष्ठा सबके प्रति है पर अपने आचार्यों संतों के फोटो हटाना गलत है। **प्रेषक : सरिता कूकड़ा जैन**

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा साधु-साध्वी विहार प्रवास सेवार्थियों के अभिनन्दन का अनुमोदनीय कार्य

दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन की अगवानी में दिल्ली प्रदेश शाखा निरन्तर समाजसेवियों के अनुपम सेवा कार्यों का जहाँ अभिनन्दन कर रही है वहीं इनके द्वारा किए जा रहे इस तरह के अनुमोदनीय कार्यों को समाजजनों की ओर से भरपूर सकारात्मक प्रतिक्रिया भी प्राप्त हो रही है।

इसी क्रम में दिल्ली से फरीदाबाद के बाद अब दिल्ली से रोहतक जैन समाज के साधु-साध्वियों को लम्बे विहार अथवा विहार मार्ग में जैन स्थानक न होने की स्थिति में उनके लिए अस्थायी प्रवास की सुविधाओं व सेवाओं का समर्पित भावों से प्रबन्ध करने वाले परिवारों का उनके निवास स्थान पर जाकर अभिनन्दन किया गया।

इस दौरान पूज्य गुरुदेव श्री अनुपममुनि जी महाराज सहाब आदि ठाणे का रोहतक के रास्ते में विहार करते हुए मंगल दर्शनों का सुखद संयोग प्राप्त हुआ। ऐसे परिवारों में सुन्दर लाल जैन (पुरखास वाले) (सेक्टर-1, रोहतक), रमेश दहिया (खरावड़ गाँव) (रोहतक), राजपाल लखेरा (ईस्माइला गाँव), राजन लखेरा (सांपला), डॉ. सुशील कुमार जैन (सांपला), नरेंद्र रूहील (रोहद गाँव), के परिवार शामिल है, जिनका अभिनन्दन करके जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश ने पूज्यवृन्द की सेवा करने वालों का अभिनन्दन करते हुए पुण्य का उपार्जन किया तथा एक प्रेरणात्मक उदाहरण भी प्रस्तुत किया।

साधु-साध्वी विहार प्रवास सेवार्थी परिवारों का अभिनन्दन करने हेतु जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जैन जी जैन, महिला समिति महामंत्री रूबी जैन जी, श्री पंकज जैन जी (अरिहंत नगर) एवं श्री चिराग जैन जी (उत्तम नगर), श्री बिट्टू जैन जी (उत्तम नगर) की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। इस आयोजन में रोहतक की टीम का सराहनीय समन्वय प्राप्त हुआ।

प्रेषक : जितेन्द्र जैन

गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार वितरण किया गया

अहमदाबाद (गुजरात) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस प्रांतीय शाखा गुजरात द्वारा गुरु भगवन्तों की पुण्य तिथि एवम् जन्म जयंती पर दिनांक 13 दिसम्बर 25 शनिवार सुबह 10:30 बजे आयोजित पौष्टिक आहार वितरण सेवा कार्य के अन्तर्गत जरूरतमंद 51 गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार किट वितरण किया गया।

माधुपुरा अर्बन हेल्थ सेंटर कैम्पस, बारडोलपुरा, अहमदाबाद पर आयोजित इस सम्पूर्ण सेवा कार्य के लाभार्थी श्रीमान शंभुलालजी, श्री अमितकुमारजी बड़ोला परिवार अहमदाबाद, रायपुर को खूब-खूब हार्दिक साधुवाद। आज के इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. श्री हंसमुखभाई अग्रवाल (गायनोलॉजिस्ट, फर्टिलिटी स्पेश्यलिस्ट, निदेशक रेशमबाई हॉस्पिटल) पधारे। विशेष अतिथि के रुप में पटेल खोड़ल धाम, अहमदाबाद के कन्वीनर एवं शहर भाजपा प्रमुख युवा नेता श्री जयेशभाई पटेल उपस्थित रहे। माधुपुरा अर्बन हेल्थ सेंटर के प्रमुख डॉक्टर की भी उपस्थिति रही।

समारोह की शुरुआत जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात के ज्ञान प्रकाश योजना के अध्यक्ष श्री समरथलाल जी खाब्या जैन ने मंगलाचरण से की। जैन कॉन्फ्रेंस प्रांतीय शाखा अध्यक्ष श्री संपतजी खाब्या जैन ने स्वागत प्रवचन के साथ जैन कॉन्फ्रेंस का परिचय भी दिया।

उन्होंने बताया कि पौष्टिक आहार लेने से महिला और गर्भ के बच्चे, एक साथ दो को लाभ मिलता है।
डॉ. श्री हंसमुखभाई अग्रवाल ने इतनी बड़ी संख्या में पधारे समाज के भाई बहनों की उपस्थिति को सराहा एवं गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार वितरण सेवा कार्य को सराहा। श्री जयेश भाई पटेल ने भी समारोह के अनुरूप अपना उद्बोधन दिया। इस समारोह के संयोजक जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात युवा शाखा के कार्यकारिणी सदस्य एवं YUVA UNSTOPABLE के वाइस प्रेसिडेंट श्री पवन जैन ने गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार देने से होने वाले लाभ की विस्तृत जानकारी दी।

भारत सरकार द्वारा महिलाओं को पौष्टिक आहार देने की जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात द्वारा आयोजित इस सेवा कार्य की प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में जैन कॉन्फ्रेंस प्रांतीय चेयरमैन श्री लक्ष्मीलालजी नाहर जैन ने आयी हुई गर्भवती महिलाओं, सभी अतिथियों और पधारे सभी महानुभावों एवं भाई-बहनों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। **प्रेषक : विनोद धोका**

आसावरा माता धार्मिक स्थल पर असहाय, लकवा पीड़ित एवं गरीबजनों को कंबलों का वितरण

भदेसर (मध्य प्रदेश) : उपखंड क्षेत्र के प्रसिद्ध आसवरा माता धार्मिक स्थल पर मानवता और सेवा की मिसाल पेश करते हुए मानव सेवा योजना महिला शाखा, जैन कॉन्फ्रेंस एवं आसावरा माता जैन संघ के संयुक्त तत्वावधान में असहाय, कवा पीड़ित तथा गरीब परिवारों को सौ से अधिक कंबलों का वितरण किया गया। आसवरा माता जैन समाज के अध्यक्ष श्री अरूणजी पटवा जैन ने बताया कि यह सेवा कार्यक्रम मानव सेवा योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलताजी लोढ़ा जैन की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में समाजसेवी प्रकाशजी भंडारी, ओमप्रकाशजी लोढ़ा, भंवरसिंह जी, सागर गेलड़ा, अनिलजी बाबेल जैन आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन शिक्षाविद श्री हीरालालजी नवलखा जैन द्वारा किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा वर्षों से अनेक सेवा प्रकल्प संचालित किए जा रहे हैं। उन्हीं में से एक कंबल वितरण योजना भी है, जो पिछले कई वर्षों से आसावरा माता धार्मिक स्थल पर निरंतर जारी है। **प्रेषक : प्रकाश भटेवरा जैन**

दुर्ग में तप अनुमोदना एवं सामायिक साधना

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : जैन तप साधिका श्रीमती किरण देवी संचेती के 113 उपवास के सम्मान में जय आनंद मधुकर रतन भवन बांधा तालाब दुर्ग में साध्वी मुमुक्षाश्री जी म.सा., साध्वी श्रद्धाश्री जी म.सा., साध्वी कीर्तिश्री जी म.सा. के पावन सान्निध्य में तप अनुमोदना एवं एक सामायिक की साधना करने जैन समाज के लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की और सामूहिक रूप से नवकार महामंत्र की स्तुति करते हुए उग्र तपस्वी श्रीमती किरण देवी संचेती की अनुमोदना की। श्रमण संघ महिला मंडल एवं समरथ महिला मंडल ने भक्ति गीतों से अभिनंदन किया।

इस अवसर पर आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. का मंगल संदेश भी प्राप्त हुआ। युवाचार्यश्रीजी ने मुंबई से मंगल संदेश भेजा, जिसमें श्रीमती किरण देवी संचेती को तप रत्नेश्वरी की उपाधि से अलंकृत किया, जिसे उपस्थित जन समुदाय ने हर्ष-हर्ष जय-जय के साथ स्वागत किया। सभा का संचालन टीकम छाजेड़ एवं राकेश जी संचेती ने किया।

प्रेषक : नवीन संचेती जैन

तप त्याग के साथ मनाया गया तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री एस.एस. जैन संघ के तत्वावधान व परम विदुषी दक्षिण ज्योति साध्वी पू. धर्मप्रभाजी म. सा. परम सेवाभावी मधुर व्याख्यानी साध्वी स्नेहप्रभाजी म.सा. के पावन सान्निध्य में 23वें तीर्थंकर पुरुषादानी चिंतामणि भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक तप त्याग, नवकारसी-पोरसी, 2-2 सामायिक साधना के साथ बर्किट रोड़ स्थित जैन स्थानक में मनाया गया। रविवारीय कार्यक्रम के तहत प्रातः 7:30 बजे से 8 बजे तक सामूहिक सामायिक आराधना के साथ सामूहिक प्रार्थना का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ महासतीजी पू. श्री धर्मप्रभाजी म.सा. द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

महासाध्वी पू. श्री स्नेहप्रभाजी म.सा. ने भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व के सभी 10 भवों का रोमांचक वर्णन प्रातःकालीन धर्मसभा के सामने रखा और बताया किस तरह जीव के परस्पर वैर विरोध के कारण जीव को अनन्त काल तक भटकना

पड़ता हैं। तदनन्तर महासतीजी कोकिल कंठी पू. श्री धर्मप्रभाजी म.सा. ने प्रभु पार्श्वनाथ भगवान के व्यक्तित्व-कृतित्व व संयम जीवन के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन धर्म सभा के सामने रखा। माम्बलम संघ द्वारा वर्षो से सुव्यवस्थित रूप से संचालित वैयावच्च व्यवस्था, भगवान महावीर स्वाध्याय पीठ, मानव सेवा, साधर्मिक सेवा, अन्नदानं कार्यक्रम आदि योजनाओं की तहेदिल से प्रशंसा-अनुमोदना की। इस प्रसंग पर कई श्रावक-श्राविकाओं ने एकासन बियासन आयंबिल उपवास दो उपवास के प्रत्याख्यान महासतीजी के मुखारविंद से ग्रहण किये। वर्द्धमान संस्कार वाटिका धार्मिक पाठशाला के बालक बालिकाओं ने भी सामायिक उपकरण सहित अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस मौके में चेन्नई महानगर के वडपलनी-कोडमबाक्कम सैदापेट वेलाचेरी विरुगंबाक्कम के.के. नगर अलवारपेट आलंदूर साहूकार पेट आदि कई उपनगरों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक प्रसंग पर भगवान महावीर सेवा समिति महिला विंग की तरफ से अन्नदानं का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। संघ अध्यक्ष डॉ. एम. उत्तमचन्द गोठी ने धर्मसभा के संचालन के साथ महासतीजी एवं आगंतुक दर्शनार्थियों का आभार प्रकट किया। संघ मंत्री श्री महेंद्र जी गादिया जैन ने बताया कि महासतीजी का टी.नगर स्थानक व मरूधर केसरी वैय्यावच्च सेंटर में आंखों के सफल ऑप्रेशन व लगभग 40 दिवसीय स्वास्थ्य लाभ के पश्चात 15 दिसंबर सोमवार को सूर्योदय के पश्चात मंगल विहार कर बाजार रोड़ सैदापेट पधारने की संभावना हैं। **प्रेषक : उत्तमचंद घोटी**

महासती पू. श्री कुमुदलता जी म. आदि ठाणा का आगामी चातुर्मास इन्दौर में

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : पौष दशम प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के पावन दिवस पर मालपुरा दादाबाड़ी की पुण्यधरा पर परम पूज्य गुरुदेव जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म. की परंपरा का दिव्य निर्वहन करने वाली मालव सिंहनी महासती पू. श्री कमलावती जी म. की सुशिष्या अनुष्ठान आराधिका पू. डॉ. कुमुदलता जी म. आदि ठाणा के श्री चरणों में इंदौर महावीर भवन का श्रावक संघ जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्री रमेशजी भण्डारी जेन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री डिपिन नेमनाथ जी जैन, मानव सेवा योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी भटेवरा जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री जिनेश्वर जी जैन के साथ श्री राजकुमार जी जैन, श्री अशोक जी मंडलिक जैन, श्री सुभाषा जी विनायक्या जेन, श्री समरथमल जी जैन, श्री नरेन्द्रजी मेहता जैन, मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री हुलास जी बेताला जैन, श्री संकेत जी जैन जैन, श्री राजेश जी सुराना जैन, श्री राकेश जी कोठारी जैन एवं श्रीमती रेणु जी जैन आदि आगामी संकल्पमय वर्षावास 2026 की विनंती लेकर उपस्थित हुआ।

श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. उपाध्याय पू. श्री गौतममुनि जी म.सा. 'प्रथम', प्रवर्तक पू. श्री विजयमुनि जी म.सा., प्रवर्तिनी महासती पू. श्री चंदना जी म.सा. की आज्ञा प्राप्त कर चातुर्मासिक आगारो सहित श्री वर्द्धमान श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट महावीर भवन, इमली बाजार, इन्दौर संघ को प्रदान करने की घोषणा की, जिससे समग्र इंदौर नगर में हर्ष की लहर व्याप्त है। **प्रेषक : जिनेश्वर जैन**

शोक समाचार

बखतगढ़ (मध्य प्रदेश) : वरिष्ठ श्राविका श्रीमती ताराबाई जी ओरा जैन का 85 वर्ष की उम्र में गुरुवार, दिनांक 4 दिसम्बर 2025 को निधन हो गया। स्थानीय श्रीसंघ की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित कर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए पाँच नवकार महामंत्र का ध्यान करवाया गया। **प्रेषक : दिलीप दर्डा जैन**

दिवंगत आत्मा के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

दिल्ली में गुरु गुणगान समारोह में प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में पुस्तक का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश जी जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी जैन आदि गणमान्य।

चातुर्मास समापन उपरांत पंजाब के बालाचोर पहुंचे श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा साथ में विहार सेवक।

जिला सोनीपत की जेल में प्रवचन फरमाते हुए राष्ट्रसंत, प्रज्ञा महर्षि पू. श्री उपेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा।

दिल्ली में गुरु गुणगान समारोह के आयोजन अवसर पर जैन कोकिला पूज्या महासाध्वी श्री सुषमा जी म.सा. की 50वीं दीक्षा जयंती के अवसर पर आदर की चादर प्रदान करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण।

जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांतीय शखा द्वारा गुरु भगवंतों की पुण्य तिथि एवं जन्म जयंति के अवसर पर पौष्टिक आहार वितरण सेवा कार्य के अंतर्गत 51 गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार कीट प्रदान करते हुए गुजरात प्रांतीय अध्यक्ष एवं उनकी टीम।

विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर सिविल लाइन लुधियाना में आयोजित आत्म-ध्यान शिविर में पू. श्री किरण जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 200 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया, जिसमें राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीवा जी जैन द्वारा सहयोग प्रदान किया गया।

अरिहंत नगर, दिल्ली में आयोजित आत्म-ध्यान शिविर के अवसर पर राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जी जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जी जैन, प्रांतीय महिला महामंत्री श्रीमती कनिका जी जैन आदि गणमान्य महानुभाव।

RNI NO.- 2123/1957

दिसम्बर 2025

Date of Publication : 23-24/12/2025

जैन भवन स्थित श्री जैन स्थानक के जीर्णोद्धार उपरांत लोकार्पण एवं नवकार महामंत्र जाप समारोह के अवसर पर उपस्थित लाभार्थी परिवार तथा जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

अतुल जैन — राष्ट्रीय अध्यक्ष

डॉ. अमितराय जैन — राष्ट्रीय महामंत्री

विनय कुमार जैन — राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा

जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 बेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित